सुबह सवेरे

A Daily News Magazine
भोपाल
शनिवार, 28 जून, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 289, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

ईरान-इजराइल को सोवियत संघ-चीन संघर्ष से क्या सीखना चाहिए?

प्रवीण स्वामी

ईरान और इज़राइल के बीच हाल ही में जो अस्थायी संघर्ष विराम हुआ है—जो आंशिक रूप से राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप द्वारा दिए गए तीखे बयान के कारण संभव हो पाया—उसने क्षेत्र में थोड़ी शांति लाई है, जो लगातार बढ़ते लंबे और अस्थिर संघर्ष की आशंका से चिंतित था, और साथ ही एक ऐसी दुनिया को भी राहत दी है जो आर्थिक अस्थिरता से डरी हुई है। हालांकि, यह संघर्ष विराम ज़्यादातर महत्वपूर्ण सवालों का जवाब नहीं देता। विशेषज्ञों ने ईरान के फ़ोर्डो और इस्फहान स्थित प्रमुख परमाणु ठिकानों पर हुए हमलों का अध्ययन करने के बाद निष्कर्ष निकाला है कि कुछ मुख्य ढांचे अभी भी सुरक्षित हैं। इससे भी अहम यह है कि उनका कहना है कि देश का समृद्ध यूरेनियम भंडार अब भी सुरक्षित है।

अमेरिकी खुफिया एजेंसियों का मानना है कि ईरान ने अब तक परमाणु बम बनाने का राजनीतिक निर्णय नहीं लिया है—और इस तकनीक को पूरी तरह हासिल करने में अभी कम से कम एक साल का समय है। लेकिन यह कहना मुश्किल है कि इज़राइल कब यह तय कर ले कि उसकी अस्तित्व से जुड़ी सुरक्षा चिंताएं आगे हमलों को जायज़ ठहराती हैं या नहीं। यह भी नहीं कहा जा सकता कि ईरान कब यह फैसला कर सकता है कि उसे परमाणु हथियार चाहिए। ईरान के लिए परमाणु हथियार बनाने की प्रेरणाएं काफी बड़ी हैं। ईरान और इज़राइल की तरह, जो एक समय पर गाइडेड मिसाइल कार्यक्रम में सहयोग करते थे, एक-दूसरे को दुश्मनों के बारे में खुफिया जानकारी देते थे और मजबूत कूटनीतिक संबंध रखते थे, उसी तरह सोवियत संघ और पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना भी द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के दौर में घनिष्ठ सहयोगी बनकर उभरे। उन्होंने विकास परियोजनाओं और इंजीनियरिंग के लिए बड़े पैमाने पर कर्ज दिए। 1957 में मास्को ने चीन को एक प्रोटोटाइप परमाणु हथियार और यूरेनियम हेक्साफ्लोराइड को समृद्ध करने वाले उपकरण देने का वादा किया था—जो हथियार-स्तरीय विखंडनीय सामग्री का आधार होता है।

विद्वान मुस्तफा किबारोग्लु के अनुसार, अमेरिका ने ईरान में परमाणु इंजीनियरों की एक टीम को प्रशिक्षित किया, जबकि फ्रांस और जर्मनी ने ईरान को यूरेनियम समृद्ध करने की तकनीकें बेचीं।

1949 में मास्को की यात्रा के दौरान माओ ने 'दस हज़ार साल की दोस्ती और सहयोग' की बात कही थी। इसके बाद, 1950 में, दोनों देशों ने दोस्ती, गठबंधन और आपसी सहायता की संधि पर साइन किए। लेकिन 1954 से, सोवियत-चीनी संबंधों में गंभीर तनाव आने लगे। यह विवाद, अन्य बातों के अलावा, सोवियत प्रीमियर निकिता ख्रुश्चेव और माओ के बीच तानाशाह जोसेफ स्टालिन की विरासत को लेकर था। जैसे कई संकटों की शुरुआत होती है, वैसे ही यह विवाद भी कुछ नहीं से, कहीं दूर-दराज़ इलाके में शुरू हुआ। सौ साल से भी ज़्यादा समय तक, दक्षिण-पूर्व चीन में तैनात पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) के सैनिक उस उसुरी नदी के पार देखते थे, यह जानते हुए कि खाबारोवस्क और प्रिमोर्स्की क्राय के इलाके कभी उनके थे। 1860 में हुई पेकिंग संधि ने चीन और रूसी साम्राज्य की पूर्वी सीमा उसुरी और अमूर नदियों के साथ तय की थी। यह जमीन का बंटवारा ब्रिटेन और फ्रांस के साथ मिलकर थोपे गए समझौते का हिस्सा था। युद्ध से कमजोर हो चुके चिंग राजवंश वाले चीन के पास नाइंसाफी भरे इन शर्तों को मानने के अलावा कोई चारा नहीं था। हालात तेजी से बिगड़े। पहली बार सैनिकों की मौत जनवरी 1968 में हुई, जब हाथापाई जैसी एक झड़प में सोवियत सैनिकों ने पीएलए के पांच सैनिकों को मार दिया। इसके बाद, दिसंबर 1968 और फरवरी 1969 में नौ और झड़पें हुईं, जिनमें पहली बार चेतावनी के तौर पर गोली चलाई गई। 2 मार्च 1969 की सुबह, पीएलए के सैनिक दमांस्की द्वीप पर पहुंचे और वहां गड्ढे खोदकर छिप गए। उसी दिन जब एक सोवियत गश्ती दल वहां से गुज़रा, तो लगभग 300 पीएलए सैनिकों ने अचानक अपनी छिपी हुई जगहों से निकलकर फायरिंग शुरू कर दी। हालांकि पीएलए को पीछे खदेड़ दिया गया, लेकिन 15 मार्च को और भी ज्यादा भीषण लड़ाई हुई। सोवियत संघ ने इस संकट को शांत करने की कोशिश की, लेकिन चीन ने इसे ठुकरा दिया। गेर्सन लिखते हैं कि प्रधानमंत्री एलेक्सी कोसिगिन ने माओ को फोन करने की कोशिश की, जो दोनों देशों के बीच बनी सीधी लाइन से करना था। विकसित दस्तावेज़ों से यह साफ़ हो गया है कि सोवियत संघ ने इस समस्या को परमाणु हमले के ज़रिए हल करने पर गंभीरता से विचार किया था। 18 अगस्त 1969 को वॉशिंगटन डीसी के बीफ़ एंड बर्ड रेस्टोरेंट में एक बैठक के दौरान, सोवियत राजनयिक बोरिस डाविडोव ने अपने अमेरिकी समकक्ष विलियम स्टीयरमैन से सीधे पूछा, 'अगर सोवियत संघ चीन की परमाणु सुविधाओं पर हमला करके उन्हें नष्ट कर दे तो अमेरिका क्या करेगा?' इतिहासकार विलियम बर्र और जेफ़री रिकेलसन ने दर्ज किया है कि अमेरिका ने भी 1960 में सोवियत प्रमुख निकिता ख्रुश्चेव को ऐसा ही प्रस्ताव दिया था—और उम्मीद थी कि यह विकल्प अब भी खुला है।

हालांकि, इस समय अमेरिकी सरकार में भी कोई स्पष्ट सहमति नहीं थी। अंत में, अमेरिका ने इस तेज़ी से बढ़ते संकट में खुद को तटस्थ रखने का फैसला किया। भले ही सोवियत रक्षा मंत्री आंद्रेई ग्रेचको पीएलए पर बहु-मेगाटन हमलों की बात कर रहे थे, उनके सहयोगियों को डर था कि चीन इन नुकसानों को सह लेगा और फिर ब्लागोवेशचेंस्क, व्लादिवोस्तोक और खाबारोवस्क पर हमला करेगा, साथ ही ट्रांस-साइबेरियन रेलवे के अहम जंक्शनों को भी निशाना बना सकता है। इससे युद्ध सोवियत संघ के भीतर तक पहुंच सकता था।

चीन के नेताओं को भी अब यह डर सताने लगा था कि सोवियत संघ अपनी धमकी को अमल में ला सकता है। पीएलए के मार्शल लिन बियाओ और माओ ने अब तनाव कम करने के लिए बातचीत की अनुमति दी। ईरान-इज़राइल युद्ध के लिए इस संकट से कई गहरी सीख मिलती हैं। पहली बात यह है कि चीन ने समझा कि एक नया-नया परमाणु शस्त्रागार रखने वाला देश किसी बड़ी ताकत को नहीं डरा सकता। ये हथियार सिर्फ दिखावे के लिए ठीक थे, लेकिन असल में काम के नहीं। वहीं सोवियत संघ को यह डर सताने लगा कि वह एक अंतहीन युद्ध में फंस सकता है। अपने दुश्मन को खत्म करना मुमकिन था, लेकिन इसकी कीमत इतनी बड़ी होती कि वह चुकाना समझदारी नहीं होती। यही सीख ईरान और इज़राइल को बहुत गंभीरता से समझनी चाहिए।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

संविधान में 'सोशलिस्ट और सेक्युलर' शब्द पर संग्राम

● आरएसएस के दत्तात्रेय होसबाले बोले- इन दो शब्दों पर बहस हो

कहा- इमरजेंसी के दौरान संसद की अनुमति के बगैर जोड़े गए थे

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरकार्यवाह (महासचिव) दत्तात्रेय होसबाले ने कहा कि संविधान की प्रस्तावना में 'सोशलिस्ट' (समाजवादी) और 'सेक्युलर' (धर्मनिरपेक्ष) शब्दों को लेकर देश में खुली बहस होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि ये दोनों शब्द मूल संविधान में नहीं थे और इमरजेंसी के दौरान संसद की सहमति के बिना जोड़ दिए गए थे। होसबाले 26 जून को दिल्ली में आयोजित 'आपातकाल के 50 साल' कार्यक्रम में बोल रहे थे। इस दौरान उन्होंने कहा, मूल संविधान में सोशलिस्ट और सेक्युलर शब्द नहीं थे। इमरजेंसी के समय देश में संसद और न्यायपालिका दोनों काम नहीं कर रही थी। इस दौरान इन दो शब्दों को जोड़ दिया गया। ये शब्द रहें या नहीं, इस पर बहस होनी चाहिए। होसबाले ने कांग्रेस और राहुल गांधी पर भी निशाना साधा।

होसबाले बोले- पूर्वजों के कारनामों पर माफी मांगें राहुल

होसबाले ने कांग्रेस और खासतौर पर राहुल गांधी पर भी बिना नाम लिए निशाना साधा। होसबाले ने कहा कि इमरजेंसी के दौरान एक लाख से ज्यादा लोगों को जेल में डाला गया, 250 से ज्यादा पत्रकारों को कैद किया गया, 60 लाख लोगों की जबरन नसबंदी करवाई गई और न्यायपालिका की स्वतंत्रता खत्म कर दी गई। अगर ये काम उनके पूर्वजों ने किया था तो उनके नाम पर माफी मांगनी चाहिए। संविधान की प्रस्तावना में 'सोशलिस्ट' (समाजवादी) और 'सेक्युलर' (धर्मनिरपेक्ष) शब्द 1976 में 42वें संविधान संशोधन के जरिए जोड़े गए। यह संशोधन उस समय हुआ जब देश में आपातकाल (1975–77) लागू था और इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री थीं।

भड़की कांग्रेस

● यह बीजेपी-आरएसएस की साजिश–संविधान से समाजवादी और सेक्युलर शब्दों को हटाए जाने की राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की मांगों पर कांग्रेस ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। कांग्रेस ने कहा है कि यह आरएसएस और भाजपा की बड़ी साजिश का हिस्सा है और वे संविधान को खत्म करना चाहते हैं। कांग्रेस ने कहा है कि संघ ने कभी बाबासाहेब आंबेडकर के संविधान को स्वीकार ही नहीं किया। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पर लिखा कि संघ ने बाबासाहेब और नेहरू का अपमान किया है।

'एमपी राइज 2025 कॉन्क्लेव' में आये 30,402 करोड़ रूपये के निवेश प्रस्ताव : मुख्यमंत्री

35 हजार से अधिक लोगों को मिलेगा रोजगार

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि देश के साथ-साथ अब मध्यप्रदेश भी बदल रहा है। यहां विकास के सभी क्षेत्रों में नवाचार हो रहे हैं। हर क्षेत्र में निवेश का अच्छा माहौल बना है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के औद्योगिक विकास का यह कारवां रूकेगा नहीं, बल्कि अब और तेज गति से आगे बढ़ेगा। रतलाम पहले सेव, साड़ियों और सोने के लिए जाना जाता था लेकिन अब यही रतलाम स्किल, स्केल और स्टार्टअप्स के लिए जाना जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि रतलाम की राइज कॉन्क्लेव में 30402 करोड़ रूपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुये हैं, जिससे 35 हजार 520 रोजगार का सृजन होगा।

रतलाम का एक गौरवशाली इतिहास रहा है। रतलाम की देश में केन्द्रीय स्थिति इसे और भी विशेष बनाती है। बहुत जल्द प्रदेश में एयर कार्गो के जरिए हवाई मार्ग से माल की आवाजाही की जाएगी। उन्होंने कहा कि राज्य की बेहतरी और युवाओं को रोजगार देने के लिए हमारी सरकार हरसंभव प्रयास कर रही है। मध्यप्रदेश को देश का अग्रणी प्रदेश बनाने तक हमारी कोशिशें जारी रहेंगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश के विकास के लिये जहां से भी हो सकेगा, वहां से निवेश लेकर आएंगे। उन्होंने कहा कि निवेशकों को प्रोत्साहित करने के लिए वे 29 जून को सूरत में रोड-शो करने जा रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शुक्रवार को रतलाम में आयोजित रीजनल इंडस्ट्री, स्किल एंड एम्प्लॉयमेंट (राईस) कॉन्क्लेव को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री की प्रमुख घोषणाएं

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के दृष्टिगत ग्रीन एनर्जी को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से पूर्व स्थापित एमएसएमई इकाइयों द्वारा यदि केवल नवकरणीय संयंत्र की स्थापना के लिये पृथक से निवेश किया जाता है तो इन इकाइयों को भी नवकरणीय ऊर्जा संयंत्र में किये गये निवेश पर उद्योग विकास अनुदान की सहायता दी जायेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रतलाम में मेगा इन्वेस्टमेंट रीजन से लगे लगी 6 ग्राम बिबड़ौद, पलसोड़ी, रामपुरिया, सरवनीखुर्द, जामथुन एवं जुलवानिया क्षेत्र एवं आबादी में स्थानीय निवासियों की सुविधा के लिये मार्ग निर्माण, सामुदायिक भवन एवं आवश्यक अधोसंरचना विकास के लिये प्रति ग्राम पंचायत 50 लाख की राशि स्वीकृत करने की घोषणा की।

4 लाख से अधिक हितग्राहियों को मिला 3861 करोड़ रूपए का ऋण

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रीजनल इंडस्ट्री, स्किल एंड एम्प्लॉयमेंट (राईस) कॉन्क्लेव में प्रदेश के 4 लाख से अधिक हितग्राहियों को स्व-रोजगार के लिए 3861 करोड़ रूपए की ऋण राशि सिंगल क्लिक के जरिए उनके खातों में हस्तांतरित की। मुख्यमंत्री ने 6000 करोड़ रूपए से अधिक निवेश करने और 17600 से अधिक रोजगार प्रदान करने वाली 35 वृहद औद्योगिक इकाइयों को भूमि आवंटन पत्र भी प्रदान किए।

सुप्रभात

तन अलग कर दो भले तुम जान से
बात बोलेंगे मगर ईमान से।
ऐ! हवा अँधियार से जा बोल दे
हर दिया डरता नहीं तूफ़ान से।
लाख रच ले झूठ बेशक साज़िशें
सच कभी मरता नहीं विषपान से।
देश है खुशहाल ये कैसे लिखूँ
रेप की आती ख़बर ख़लिहान से।
जब नहीं हो आचरण ही शुद्ध तो
क्या मिलेगा स्वच्छता अभियान से।
सब हुए संपन्न, ढक दी मुफ़लिसी
आकड़ों के रेशमी परिधान से।
तेवरी हैं छंद हम पीयूष हैं
तुम न मापो यूँ हमें अरकान से।।

– श्वेता सिंह

जज होना 9 से 5 की नौकरी नहीं, यह देश की सेवा है

● सीजेआई बीआर गवई बोले- लेकिन यह मुश्किल है काम
● कॉलेजियम पर कहा- जाति और धर्म चयन के मानदंड नहीं

नागपुर (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस बीआर गवई का कहना है कि एक जज अकेले काम नहीं कर सकता है। जज होना नौ से पांच की नौकरी नहीं है। यह राष्ट्र की सेवा है, लेकिन यह एक कठिन काम भी है। सीजेआई गवई छत्रपति संभाजी नगर में बॉम्बे हाई कोर्ट, औरंगाबाद बेंच की एडवोकेट यूनियन की तरफ से रखे गए अभिनंदन समारोह में बोल रहे थे। सीजेआई ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट को सभी जजों के सर्वोच्च न्यायालय के रूप में काम करना चाहिए, न कि केवल भारत के मुख्य न्यायाधीश के, इसलिए सभी फैसले सर्वसम्मति से लिए जाने चाहिए। भारत के मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई ने गुरुवार को कहा कि वे महाराष्ट्र के कोल्हापुर में बॉम्बे हाई कोर्ट की बेंच स्थापित करने की मांग का समर्थन करते हैं। न्याय हर नागरिक को हर कोने में उपलब्ध होना चाहिए। बॉम्बे हाई कोर्ट में वर्तमान में मुंबई की मेन बेंच के अलावा गोवा, औरंगाबाद (छत्रपति संभाजीनगर) और नागपुर में सर्किट बेंच हैं।

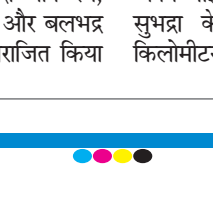

जस्टिस गवई बोले- एक जज को समाज में घुलना-मिलना चाहिए। इससे समाज की समस्याओं व प्रश्नों को समझा जा सकता है और न्याय के माध्यम से उनका समाधान किया जा सकता है। सीजेआई ने कहा- जब भी हाईकोर्ट की कोल्हापुर बेंच की मांग की गई है, मैंने समर्थन किया। औरंगाबाद बेंच का उदाहरण दिया है। औरंगाबाद बेंच में बॉम्बे बेंच की तुलना में ज्यादा मामले दायर किए जाते हैं। हर सुनवाई के लिए हर किसी के लिए बॉम्बे (मुंबई) आना आर्थिक रूप से संभव नहीं है। हर नागरिक को हर कोने में बिना ज्यादा समय और पैसा खर्च किए न्याय मिलना चाहिए। जस्टिस गवई ने यह भी कहा कि केवल कानून की चौखट में रहकर न्याय देना संभव नहीं होता, सामाजिक पहलुओं का भी ध्यान रखना होता है। इसी कारण हम कॉलेजियम के जरिए योग्यता के आधार पर जजों की नियुक्ति पर जोर दे रहे हैं। उम्मीदवार की जाति, धर्म या सामाजिक पृष्ठभूमि चयन के मानदंड नहीं हो सकते। सीजेआई गवई ने बुधवार को कहा कि भारत का संविधान सबसे ऊपर है। हमारे लोकतंत्र के तीनों अंग (न्यायपालिका, कार्यपालिका और विधायिका) संविधान के अधीन काम करते हैं। सीजेआई गवई ने कहा कि कुछ लोग कहते हैं कि संसद सर्वोच्च है, लेकिन मेरी राय में संविधान सर्वोपरि है।

जय जगन्नाथ के जयघोष के साथ शुरू हुई रथयात्रा

● पुरी में भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ निकले जगन्नाथ ● अहमदाबाद में हाथी हुआ बेकाबू, 100 मीटर भागा, एक घायल

पुरी (एजेंसी)। पुरी में भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा शुरू हो गई है। सबसे पहले भगवान बलभद्र का रथ भक्तों ने खींचा। बलभद्र के बाद देवी सुभद्रा और फिर भगवान जगन्नाथ का रथ खींचा गया। सुबह मंगल आरती और विधि विधान पूजा के बाद भगवान जगन्नाथ को नंदी घोष रथ, देवी सुभद्रा को दर्पदलन और बलभद्र को तालध्वज रथ पर विराजित किया गया। रथ पर भगवान की विधिवत पूजा और भोग हुआ। दोपहर 3 बजे पुरी राजपरिवार के गजपति दिव्य सिंह देव रथ के आगे सोने के झाड़ू से बुहारा लगाकर रथ यात्रा की शुरुआत की। रथ से भगवान जगन्नाथ अपने भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ करीब 3 किलोमीटर दूर गुंडिचा मंदिर

पहुंचे। ये उनकी मौसी का घर माना जाता है। उधर, अहमदाबाद समेत देश के कई शहरों में रथ यात्राएं निकाली गई हैं। अहमदाबाद में भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा निकाली गई। गृह मंत्री अमित शाह ने सुबह 4 बजे मंगल आरती की। इसके बाद मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने पाहिंद विधि कर रथ यात्रा की शुरुआत की। रात तकरीबन 8.30 बजे भगवान वापस मंदिर लौटे। अहमदाबाद में भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा में शुक्रवार सुबह 10 बजे एक हाथी बेकाबू हो गया और 100 मीटर तक भागा। इसके बाद रथ यात्रा में भगदड़ सी मच गई। लोग इधर-उधर भागते दिखे। बेकाबू हुआ हाथी 17 हाथियों के ग्रुप में सबसे आगे चल रहा था।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c

न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शनिवार, 28 जून 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

केदारनाथ हाईवे पर लैंडस्लाइड, कई यात्री फंसे

भारी बारिश से हाल बेहाल, जीना हुआ मुहाल

अहमदाबाद-सूरत में बाढ़, घरों तक में घुसा पानी

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में दिल्ली को छोड़कर सभी राज्यों में बारिश हो रही है। अब तक सामान्य से 12.3 फीसदी ज्यादा बारिश हो चुकी है। 26 जून तक देश में सामान्य रूप से 134.3 मिमी होनी चाहिए थी, लेकिन 146.6 एमएम हो चुकी है। उत्तराखंड में भारी बारिश के चलते केदारनाथ हाईवे एक बार फिर मुनकटिया इलाके में लैंडस्लाइड के कारण बंद हो गया है। रास्ते पर लगातार पत्थर और मलबा गिर रहा है। एनडीआरएफ और एसडीआरएफ की टीमें मौके पर मौजूद हैं और यात्रियों को जंगल के वैकल्पिक रास्तों से सुरक्षित निकाल रही हैं। इस बीच देश में बारिश के चलते मौतों का आकड़ा भी बढ़ने लगा है। हिमाचल के

कुल्लू जिले में बादल फटने से अब तक 5 लोगों की मौत हो गई है। जबकि 7 से ज्यादा लापता हैं। बुधवार को कुल्लू के 5 जगह- जीवा नाला (सैंज), शिलागढ़ (गढ़सा) घाटी, स्त्रो गैलरी (मनाली), होरनगढ़ (बंजार), कांगड़ा और धर्मशाला के खनियारा में बादल फटे थे। वहीं, जम्मू-कश्मीर के राजौरी, पुंछ, डोडा और कठुआ जिलों में बादल फटने और तेज बारिश से आई बाढ़ में 2 बच्चों समेत 3 की मौत हो गई है। गुजरात के अहमदाबाद, सूरत और नवसारी जिलों में बीते 2 दिन से तेज बारिश का सिलसिला जारी है। सूरत के बाद अब अहमदाबाद में बाढ़ जैसे हालात बन गए हैं। घरों में पानी भर गया है। मौसम विभाग के अनुसार, देश के सभी राज्यों में आज बारिश का अनुमान है। पूर्वी राजस्थान, पश्चिमी मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, गुजरात, मध्य महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक और केरल में बारिश का ऑरेंज अलर्ट है। उत्तराखंड में भारी बारिश के चलते केदारनाथ हाईवे एक बार फिर मुनकटिया इलाके में लैंडस्लाइड के कारण बंद हो गया है। रास्ते पर लगातार पत्थर और मलबा गिर रहा है,

जिससे यात्रियों की आवाजाही रुक गई है। एनडीआरएफ और एसडीआरएफ की टीमें मौके पर मौजूद हैं और यात्रियों को जंगल के वैकल्पिक रास्तों से सुरक्षित निकाल रही हैं। मौसम विभाग की लेटेस्ट बुलेटिन के अनुसार, अगले 2 दिन देश के 23 राज्यों में तेज बारिश होगी। इनमें जम्मू-कश्मीर, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, पूर्वी

राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा, झारखंड, बिहार, केरल, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, नगालैंड और त्रिपुरा शामिल हैं। मध्य प्रदेश में बारिश का स्ट्रॉन्ग सिस्टम ऐक्टिव है। उत्तर-पूर्वी हिस्से में एक साइक्लोनिक सर्कुलेशन (चक्रवात) है तो दक्षिणी हिस्से से टर्फ भी गुजर रही है।

विजिलेंस टीम से उलझना मजीठिया को पड़ा भारी

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब के पूर्व मिनिस्टर और अकाली दल के सीनियर नेता बिक्रम सिंह मजीठिया की मुश्किलें बढ़ गई हैं। उन्हें बुधवार को ही पंजाब की विजिलेंस टीम ने लंबी जद्दोजहद के बाद गिरफ़्तार किया था। अब पुलिस उनके खिलाफ एक और केस दर्ज करने की तैयारी में है। अकाली नेता को 540 करोड़ रुपये के ड्रग्स कारोबार के मामले में अरेस्ट

किया गया है। इस बीच पंजाब पुलिस के सूत्रों का कहना है कि बिक्रम सिंह मजीठिया और उनके समर्थकों ने विजिलेंस टीम को उसके काम से रोका था। इसके अलावा पुलिस के खिलाफ हिंसा भड़काने की कोशिश भी की गई थी। अब इस मामले में पुलिस केस दर्ज करने जा रही है। दरअसल बिक्रम सिंह मजीठिया के अमृतसर स्थित आवास पर जब विजिलेंस टीम पहुंची थी तो उसका उनके समर्थकों ने विरोध किया था। यही नहीं एक 5 मिनट से लंबा वीडियो खुद मजीठिया ने एक्स पर शेयर किया था।

बीजेपी में ही मेरा घर-परिवार है, यहीं से मेरी अर्थी निकलेगी

जयपुर (एजेंसी)। राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे जब भी बोलती है, तो उनके एक-एक शब्द में बड़े मायने होते है। इसके कारण राजे के बयानों की सियासी गलियारों में काफी चर्चा रहती है। हाल ही में इमरजेंसी को लेकर वसुंधरा राजे का एक बयान काफी सुर्खियों में हैं, जहां उन्होंने अपने विरोधियों को इशारों ही इशारों में करारा जवाब दे दिया। उन्होंने गरजते हुए हुए कहा कि बीजेपी में ही मेरा घर-परिवार है, जब भी जाएगी, इस परिवार से ही मेरी अर्थी जाएगी। दरअसल, वसुंधरा राजे यूपी के आगरा में आपातकाल के 50वें वर्ष पर कार्यकर्ताओं को संबोधित कर रही थी। देश में इमरजेंसी के 50वें वर्ष के मौके पर बीजेपी ने कांग्रेस को जमकर घेरा। इस बीच वसुंधरा राजे ने भी यूपी के आगरा में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए इमरजेंसी को लेकर कांग्रेस को जमकर निशाना बनाया।

कोलकाता के लॉ कॉलेज में छात्रा से हुआ गैंगरेप

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता के कस्बा इलाके में स्थित साउथ कोलकाता लॉ कॉलेज में गैंगरेप के एक गंभीर मामले में तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस सूत्रों के अनुसार यह घटना 25 जून को शाम 7.30 बजे से रात 10.50 बजे के बीच कॉलेज परिसर के अंदर घटी। तीनों आरोपियों ने छात्रा को एक कमरे में

ले जाकर उसके साथ सामूहिक बलात्कार किया। कस्बा पुलिस स्टेशन में पीड़िता की शिकायत पर एफआईआर दर्ज की गई और उसी के आधार पर पुलिस ने कार्रवाई करते हुए तीनों आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपियों में कॉलेज का एक पूर्व छात्र और स्टाफ सदस्य के अलावा वर्तमान में पढ़ने वाले छात्र भी शामिल हैं।

भविष्य की विद्युत जरूरतों के दृष्टिगत अरुणाचल प्रदेश से 252 मेगावाट बिजली लेने का समझौता

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की उपस्थिति में अनुबंध पर हुए हस्ताक्षर

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की उपस्थिति में मुख्यमंत्री निवास के समत्व भवन में शुक्रवार को केंद्रीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा आवंटित 252 मेगावाट विद्युत क्रय अनुबंध पर एमपी पावर मैनेजमेंट कंपनी (एमपीपीसीएल) और एनएचपीसी के मध्य हस्ताक्षर हुए और एमओयू का आदान-प्रदान किया गया। अनुबंध के आधार पर एनएचपीसी की अरुणाचल प्रदेश के लोअर दि बांग वैली जिले में स्थित बहुउद्देशीय जल विद्युत परियोजना से मध्यप्रदेश को केन्द्रीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा आवंटित 252 मेगावाट विद्युत मिलेगी। विद्युत क्रय अनुबंध (पीपीए) पर एमपी पावर मैनेजमेंट कंपनी के मुख्य महाप्रबंधक राकेश ठुकराल और एनएचपीसी के महाप्रबंधक ओंकार यादव ने हस्ताक्षर किए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस अनुबंध को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि भविष्य की मांग को देखते हुए पारम्परिक ऊर्जा स्रोतों के अलावा विभिन्न नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से भी विद्युत क्रय अनुबंध आवश्यक हैं। मध्यप्रदेश कृषि प्रधान राज्य है। मध्यप्रदेश में घरेलू और औद्योगिक आवश्यकताओं के साथ ही कृषि क्षेत्र में बिजली की खपत निरंतर बढ़ रही है। ऐसे में भविष्य की जरूरत का आकलन भी किया जा रहा है। इस नाते आने वाले वर्षों में विद्युत की मांग में वृद्धि की संभावनाओं को देखते हुए अरुणाचल प्रदेश से विद्युत क्रय करने का निर्णय लिया गया।

लगातार बढ़ती विद्युत मांग

मध्यप्रदेश मेंऔद्योगिक एवं कृषि क्षेत्रों में विद्युत खपत में उल्लेखनीय वृद्धि हो रही है। वर्तमान विद्युत मांग में वृद्धि के दृष्टिगत यह आकलन किया जा रहा है कि चालू वित्तीय वर्ष के अंत तक मांग 20,000 मेगावाट हो सकती है। इस मांग में आने वाले वर्षों में लगातार बढ़ोत्तरी भी होगी।

कहां स्थित है बहुउद्देश्यीय जल विद्युत परियोजना

अरुणाचल प्रदेश में डिवांग नदी पर एक बड़ी बहुउद्देश्यीय जलविद्युत परियोजना विकसित की जा रही है। इस परियोजना का निर्माण कार्य प्रगति पर है। इसके वित्तीय वर्ष 2031-32 तक पूर्ण होकर चालू होने की संभावना है।

अनुबंध से मध्यप्रदेश को मिलेगा लाभ

इस परियोजना से प्राप्त विद्युत रबी के महीनों में अधिकतम मांग की अवधि के दौरान 3 घंटे से अधिक और शेष समय में लगभग 9 से 19 घंटे तक की मांग को पूरा करने में सहायता करेगी।

इस अवसर पर अपर मुख्य सचिव ऊर्जा श्री नीरज मंडलोई, एमपी पावर मैनेजमेंट कंपनी के प्रबंध संचालक श्री अविनाश लवानिया, एनएचडीसी के प्रबंध संचालक श्री राजीव जैन उपस्थित थे।

उज्जैन में निकली भगवान जगन्नाथ रथ यात्रा

सुभद्रा और बलभद्र भी विराजे, भक्तों ने खींचा रथ, ड्रोन से हुई पुष्प वर्षा

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन में शुक्रवार को इस्कॉन द्वारा निकाली जाने वाली भगवान जगन्नाथ रथ यात्रा की दोपहर 3 बजे शुरुआत हुई। मंगल आरती और विधि विधान पूजा के बाद भगवान जगन्नाथ को नंदी घोष रथ, देवी सुभद्रा को दर्पदलन और बलभद्र को तालध्वज रथ पर विराजित किया गया। यात्रा में सबसे पहले बलराम उसके बाद सुभद्रा और फिर भगवान जगन्नाथ का रथ चल रहा था।

यात्रा में शामिल रथों की ऊंचाई 21 से 25 फीट तक है। नगर के प्रमुख मार्गों पर सत्कार मंच, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां अहीर, गोंड व कोरकू जनजातीय नृत्य करते चल रहे हैं। भव्य रथ यात्रा में झांकियां, घोड़े, हाथी, बैलगाड़ी और नृत्य मंडलियां आकर्षण का केंद्र रहे। महिला, पुरुष, बच्चे सहित सभी भक्त भगवान का रथ खींचा। रथ के आगे भक्त सोने की झाड़ू लगा रहे थे। यात्रा में ड्रोन से पुष्प वर्षा की गई। इस्कॉन-उज्जैन द्वारा भगवान जगन्नाथ की 19वीं रथ यात्रा के समापन में सीएम डॉ मोहन यादव भी शामिल होंगे।

इस मार्ग से निकली यात्रा- भगवान जगन्नाथ की यात्रा मंडी चौराहा से प्रारंभ होकर चामुंडा माता चौराहा, टावर, तीन बत्ती चौराहा, देवास रोड होती हुई कालिदास अकादमी स्थित गुंडिचा पहुंची। कालिदास अकादमी परिसर में भव्य गुंडिचा मंदिर की स्थापना होगी। यहां पर सीएम मोहन यादव

शाम को रथ यात्रा की आरती कर भगवान का आशीर्वाद लेंगे।

7 दिनों तक गुंडिचा मंदिर में विश्राम करेंगे देव- इस्कॉन मंदिर का सांस्कृतिक पर्व 27 जून से 5 जुलाई तक मनाया जा रहा है। इस आयोजन के तहत प्रतिदिन आरती, कथा, कीर्तन, प्रसाद वितरण व सांस्कृतिक प्रस्तुतियां होंगी। मैथली ठाकुर सहित राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों की प्रस्तुति होंगी। भगवान 7 दिनों तक गुंडिचा मंदिर में विश्राम करेंगे, 5 जुलाई को वापसी रथ यात्रा निकाली जाएगी।

बिहार में तेजस्वी यादव ही होंगे मुख्यमंत्री का चेहरा

पटना (एजेंसी)। महागठबंधन में तेजस्वी यादव के सीएम फेस को लेकर जारी चर्चा के बीच कांग्रेस नेता कन्हैया कुमार ने बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि अगर आगामी बिहार विधानसभा चुनाव में महागठबंधन को बहुमत मिलता है, तो मुख्यमंत्री आरजेडी से होगा, और तेजस्वी यादव के सीएम फेस को लेकर अलायंस में किसी तरह का कोई भ्रम या विवाद नहीं है। हालांकि, उन्होंने जोर देकर कहा कि चुनाव में मुद्दे सर्वोपरि होंगे और गठबंधन के सीएम चेहरे का मुद्दा उठाकर ध्यान भटकाने के लिए प्रतिद्वंद्वियों द्वारा साजिश रची जा रही है। कन्हैया कुमार ने दावा किया कि जैसे ही भाजपा को मौका मिलेगा वो मुख्यमंत्री नीतिश कुमार को हटाकर अपना नेता लाएगी।

ब्रह्मोस से भी घातक मिसाइल बना रहा है भारत

● कराची तक मार करने में होगी सक्षम, परीक्षण जल्द ● के-6 की आठ हजार किलोमीटर होगी मारक क्षमता

नई दिल्ली (एजेंसी)। हिंद महासागर में भारत की ताकत और बढ़ने वाली है। के-6 हाइपरसोनिक मिसाइल को हैदराबाद स्थित डीआरडीओ की एडवांस्ड नेवल सिस्टम्स लैबोरेटरी में विकसित किया जा रहा है। यह मिसाइल ब्रह्मोस से भी घातक होगी। इसे विशेष रूप से उन्नत एस-5 श्रेणी की परमाणु ऊर्जा चालित पनडुब्बियों के लिए डिजाइन किया गया है। अरिहंत से बड़ी परमाणु ऊर्जा चालित एस-5 पनडुब्बी 12 मीटर लंबी, दो मीटर चौड़ी होगी और दो से तीन टन तक वारहेड ले जाने में सक्षम होगी। रिपोर्ट के अनुसार इस मिसाइल का परीक्षण जल्द होने की उम्मीद है। सबमरीन लांच्ड

बैलिस्टिक मिसाइल (एसएलबीएम) के-6 को पनडुब्बियों से लांच किया जा सकेगा। के-6 मिसाइल विकसित होने के बाद भारत की उन देशों की सूची में शामिल हो जाएगा जिनके पास हाइपरसोनिक मिसाइल है। यह मिसाइल पारंपरिक और परमाणु दोनों तरह के हथियार ले जा सकती है। इस समय अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस और ब्रिटेन के पास हाइपरसोनिक मिसाइल है। रिपोर्ट के अनुसार के-6 एसएलबीएम 7.5 मैक (लगभग 9,261 किलोमीटर प्रति घंटे) की गति से दुश्मनों को निशाना बना सकती है। जरूरत पड़ने पर पाकिस्तान का आर्थिक केंद्र कराची इस मिसाइल का रणनीतिक लक्ष्य हो सकता है। के-6 मिसाइल की मारक क्षमता 8,000 किलोमीटर होगी।

संभल में अवैध रूप से बनाई गई मजार पर चला बुलडोजर

संभल (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के संभल जिले में ऐंजौडा थाना क्षेत्र सड़क किनारे अवैध रूप से निर्मित मजार पर बुलडोजर ऐक्शन हुआ है। सड़क किनारे बनी इस मजार पर प्रशासन ने बुलडोजर चलवाकर इसे ध्वस्त कराने की कार्रवाई की है। यह पूरी कार्रवाई राजस्व विभाग की टीम की निगरानी की गई है। दरअसल, संभल तहसील क्षेत्र के गांव अखवंदपुर काफूरपुर में गाटा संख्या 384 पर रास्ते की भूमि पर अवैध तरीके से मजार बनाई गई थी। संभल प्रशासन का लगातार अवैध अतिक्रमण के खिलाफ ऐक्शन का क्रम जारी है। इससे लंबे वक्त से अवैध अतिक्रमण किए बैठे लोगों में हड़कंप सा मचा हुआ है। संभल में फिर एक बार अवैध अतिक्रमण के खिलाफ प्रशासन के बुलडोजर ऐक्शन से हलचल तेज है। सरकारी जमीन पर बनी हुई एक मजार को बुलडोजर की मदद से ध्वस्त करने की कार्रवाई की गई है। इस दौरान राजस्व विभाग की टीम के साथ-साथ भारी संख्या में पुलिस बल की मौजूदगी रही। मजार को हटाने के लिए संभल प्रशासन की ओर से पहले से निर्देश दिए गए थे। इसके बाद अब ये कार्रवाई सामने आई है।

अमित शाह के 'सस्पेंस' और प्लान बी से खलबली !

तमिलनाडु में होगा खेला, सहयोगी दल के नेता नाराज

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री और भाजपा के रणनीतिकारों में अहम रोल निभाने वाले अमित शाह की ओर से तमिलनाडु में गठबंधन के मुख्यमंत्री पद के चेहरे के रूप में अन्नाद्रमुक महासचिव ई के पलानीस्वामी (ईपीएस) के नाम का उल्लेख नहीं किए जाने और इसके बावजूद राज्य में एनडीए गठबंधन की सरकार बनाने की बात दोहराने से राज्य के प्रमुख विपक्षी दल और भाजपा के साथी दल एआईएडीएमके में बेचैनी का माहौल है। यह दूसरी बार है, जब गृहमंत्री अमित शाह ने स्पष्ट किया है कि आगामी चुनावों के बाद तमिलनाडु में एनडीए की सरकार बनेगी, जिसमें भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) भी साझेदार होगी। इससे पहले उन्होंने 8 जून को मदुरै में भी पार्टी की कोर ग्रुप बैठक को संबोधित करते हुए इसी तरह का बयान दिया था। करीब एक पखवाड़े के अंदर दूसरी बार इस तरह का बयान देने से एआईए डीएमके में खलबली मच गई है। राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री और पार्टी महासचिव ई के पलानीस्वामी भी अब शाह के ऐसे बयानों से नाराज बताए जा रहे हैं। एक इंटरव्यू में शाह ने न केवल यह दावा किया कि राज्य में भाजपा की भागीदारी के साथ एनडीए गठबंधन

की सरकार बनेगी बल्कि मुख्यमंत्री पद के चेहरे के रूप में ईपीएस का नाम भी नहीं लिया। हालांकि उन्होंने कहा, राज्य में निश्चित रूप से एनडीए सरकार बनाएगी और भाजपा इसका हिस्सा होगी। हम अन्नाद्रमुक की अगुवाई में चुनाव लड़ेंगे और मुख्यमंत्री अन्नाद्रमुक से ही होगा। केन्द्रीय गृहमंत्री का ये बयान उनके पिछले उस बयान से काफी अलग है, जब पिछले साल अप्रैल में अन्नाद्रमुक ने एनडीए में दोबारा एंट्री ली थी, तब ईपीएस की मौजूदगी में अमित शाह ने खुद कहा था कि एनडीए ईपीएस के नेतृत्व में ही विधानसभा चुनाव लड़ेगा लेकिन अब उन्होंने कहा है कि एनडीए अन्नाद्रमुक के नेत-त्व में चुनाव लड़ेगा। उन्होंने न तो सीएम चेहकरे के रूप में और ना ही नेतृत्वकर्ता के रूप में ईपीएस का नाम लिया। राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि यह इस बात का संकेत है कि भाजपा के पास ईपीएस पर सारा दारोमदार डालने के बजाय कोई 'प्लान बी' है और इसी वजह से अमित शाह ने ईपीएस का नाम नहीं लेकर स्सपेंस बढ़ाया है। इस बीच शाह ने इस बात से इनकार किया कि भाजपा अन्य नेताओं को एकजुट कर रही है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने युवा संसद में युवाओं से की आपातकाल पर चर्चा

आपातकाल लगाना संविधान की हत्या थी : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि आपातकाल लागू करना तत्कालीन प्रधानमंत्री द्वारा संविधान की हत्या थी। आपातकाल लागू करने के संबंध में न केंद्रीय कैबिनेट ने स्वीकृति दी थी न ही राज्यों की ओर से ऐसा कोई प्रस्ताव दिया गया था। जिम्मेदार लोगों ने ही संविधान का पालन नहीं किया। अभिव्यक्ति और प्रेस की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने युवाओं से आपातकाल लागू किए जाने के प्रसंग पर प्रश्न पूछे और उन्हें मौजूदा दौर की विशेषताओं पर विचार व्यक्त करने का अवसर दिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कुशाभाऊ ठाकरे इंटर स्टेट बस टर्मिनल स्थित नगर निगम भोपाल के सभाकक्ष में शुक्रवार को आयोजित युवा संसद कार्यक्रम में युवाओं से संवाद करते हुए उक्त बात कही।

युवा संसद को वरिष्ठ सांसद श्री वी.डी. शर्मा ने भी संबोधित किया। उन्होंने कहा कि आज की पीढ़ी को इमरजेंसी का प्रसंग बताया जाना आवश्यक है। अनेक

युवाओं ने आपातकाल की बुराइयों पर विचार व्यक्त किए और आपातकाल लागू करने को लोकतंत्र विरोधी कदम बताया। उल्लेखनीय है कि भारत सरकार ने संविधान हत्या दिवस 25 जून 2025 से निरंतर एक वर्ष तक विभिन्न गतिविधियों के संचालन के निर्देश दिए हैं। इस क्रम में मध्यप्रदेश में लोकतंत्र सेनानियों के सम्मान के साथ ही विभिन्न स्पर्धाओं और वैचारिक गोष्ठियों के कार्यक्रम, विभिन्न संस्थाओं द्वारा लगातार किए जा रहे हैं। वरिष्ठ लोकतंत्र सेनानी श्री विभीषण सिंह का मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सम्मान किया। प्रारंभ में मुख्यमंत्री डॉ. यादव का स्वागत किया गया। आयोजक संस्था की ओर से प्रदेश पदाधिकारी श्री वैभव पवार और राष्ट्रीय पदाधिकारी श्री रोहित चहल ने अतिथियों का स्वागत किया और युवा संसद में विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर भोपाल की महापौर श्रीमती मालती राय नगर निगम भोपाल के अध्यक्ष श्री किशन सूर्यवंशी और अनेक जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

राजा हत्याकांड

आरोपी आकाश और आनंद बयान से पलटे

शिलॉन्ग पुलिस का दावा- हमारे पास पर्याप्त सबूत, अभी एफएसएल रिपोर्ट आना बाकी

आनंद कुर्मी

आकाश राजपूत

इंदौर (नप्र)। इंदौर के ट्रांसपोर्ट कारोबारी राजा रघुवंशी हत्याकांड के 2 आरोपियों आनंद और आकाश कोर्ट में अपने बयान से पलट गए। उन्होंने राजा की हत्या में शामिल होने से इनकार कर दिया। हालांकि, शिलॉन्ग पुलिस की पूछताछ में दोनों ने जुर्म कबूला था। पुलिस ने बताया कि हमारे पास न केवल आनंद और आकाश बल्कि सभी आरोपियों के खिलाफ पर्याप्त सबूत हैं, जो अदालत में रखे जाएंगे।

मेघालय पुलिस ने बताया कि दोनों आरोपियों ने पहले राजा की हत्या में शामिल होने की बात कबूली थी, लेकिन जब उन्हें कोर्ट में पेश किया गया तो दोनों कोर्ट के सामने चुपचाप खड़े रहे।शिलॉन्ग एसपी ने बताया कि हमारे पास आरोपियों के खिलाफ पर्याप्त सबूत हैं।

शिलॉन्ग पुलिस अधीक्षक एचपी खारकोंगर ने बताया यह उनका अधिकार है कि वे अपराध स्वीकार करें या न करें। हमारे पास उनके खिलाफ पर्याप्त सबूत हैं, जिन्हें हम कोर्ट के सामने रखेंगे। अभी हम एफएसएल रिपोर्ट का इंतजार कर रहे हैं।

राजा की मां बोलीं- उज्जैन में ही हत्या की प्लानिंग थी

राजा की मां उमा रघुवंशी ने आरोप लगाया कि सोनम ने उज्जैन जाने की योजना अचानक बनाई थी। वहीं से एक गुड़िया राजा को घर के दरवाजे पर बांधने को दी थी। उज्जैन में राजा के साथ कोई तांत्रिक क्रिया की गई थी। जब से वो उज्जैन से लौटा था, तभी से बदला-बदला सा नजर आ रहा था। वहीं, राजा के भाई विपिन ने सोनम के परिवार का नार्को टेस्ट कराने की मांग की है और कहा कि वो इसके लिए हाईकोर्ट में अपील करेंगे।

23 मई को हुई थी राजा रघुवंशी की हत्या

29 साल के राजा रघुवंशी की हत्या 23 मई को मेघालय के सोहरा (चेरापूंजी) में उनकी हनीमून यात्रा के दौरान हुई थी। राजा ने 11 मई को सोनम से शादी की और 20 मई को हनीमून के लिए मेघालय पहुंचे थे। फिर दोनों 23 मई को शिलॉन्ग से लगभग 65 किलोमीटर दूर सोहरा में लापता हो गए थे।

कारोबारी ने नाबालिग पर शराब डाली-रुपए उड़ाए, फिर किया दुष्कर्म

भोपाल (नप्र)। भोपाल में 15 साल की लड़की के साथ रेप के मामले में मुख्य आरोपी रिया उर्फ रितु यादव ने कई खुलासे किए हैं। इवेंट मैनेजर रिया ने पुलिस पूछताछ में बताया है कि बैरागढ़ के कपड़ा और जूता कारोबारी मुकेश बालचंदानी ने नाबालिग के साथ पूल पार्टी में रेप किया था।

इसके बाद रिया के घर शराब पार्टी हुई। इसमें मुकेश ने पीड़िता पर डांस करने का दबाव बनाया। उसके शरीर पर शराब डाली, फिर जबरन पिलाई। डांस पर हजारों रुपए उड़ाए। फिर उसके साथ रेप किया। रिया ने बताया कि घटना 20-21 जून की दरमियानी रात की है। पार्टी के बाद पीड़िता की तबीयत बिगड़ी, तब रिया घबरा गई। वह नाबालिग को उसके घर भेजना चाहती थी लेकिन तबीयत खराब होने के कारण ऐसा नहीं किया। रिया को डर था कि मुकेश ने लड़की के साथ गलत काम किया है, ऐसी हालत में वह घर पहुंची तो परिजन को संदेह हो जाएगा।

बात पुलिस तक जाएगी और रिया को जेल जाना पड़ेगा। लिहाजा उसने लड़की को अपने ही घर में रखा। नाबालिग से संबंध बनाने के एवज में रिया को मोटी रकम मिली थी।

6 आरोपी गिरफ्तार, एक फरार- रिया पर आरोप है कि 19 जून को उसने नाबालिग को बीमारी का बहाना बनाकर अपने घर बुलाया। वहां उसे युवकों के हवाले कर दिया। अगले दिन एक फार्महाउस में पूल पार्टी में ले जाकर पीड़िता को जूस में नशीला पदार्थ पिलाया। वहां भी उसका यौन शोषण किया गया। इसी दिन रिया के घर शराब पार्टी में मुकेश बालचंदानी ने उसके साथ दुष्कर्म किया।

मामले में दो महिलाओं समेत सात लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया गया है। पुलिस ने 6 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। एक आरोपी माही फरार है। रिया दो साल से इवेंट मैनेजमेंट का काम कर रही है।इससे पहले 18 जून को परिजन ने नाबालिग की गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई थी।

ट्रक पलटने से चालक की मौत

घाटी चढ़ने के दौरान हुआ हादसा, बारिश के कारण चिकनी हो चुकी थी सड़क

भोपाल (नप्र)। भोपाल के सूखी सेवनिया इलाके की बालमपुर घाटी पर ट्रक चढ़ाते समय एक हादसा हो गया। बारिश के कारण चिकनी हो चुकी सड़क पर ट्रक पलट गया। हादसे में चालक की मौके पर ही मौत हो गई। यह घटना गुरुवार रात की है। शुक्रवार को पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंपा गया। मामले में मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी गई है। थाना पुलिस के मुताबिक, उदयपुरा जिला रायसेन निवासी बृजेश सिंह आदिवासी पुत्र लल्लन सिंह आदिवासी (32) ट्रक ड्राइवर था। वह गुरुवार की रात अपने ट्रक में माल लाद कर विदिशा से भोपाल की ओर जा रहा था। जब ट्रक बालमपुर घाटी पर पहुंचा और चढ़ाई पर था। तभी बारिश के कारण गिली और चिकनी हो चुकी सड़कों पर ट्रक बेकाबू होकर पलट गया। इससे ट्रक की चपेट में आने से ड्राइवर बृजेश गंभीर रूप से घायल हो गया।

घायल को पुलिस ने तुरंत हमीदिया अस्पताल पहुंचाया। जहां पर डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

10वीं की छात्रा ने की आत्महत्या

दादा-पिता और मां की मौत के बाद डिप्रेशन में थी, फांसी लगाकर दी जान

भोपाल (नप्र)। भोपाल के रातीबढ़ इलाके में रहने वाली 10वीं की छात्रा ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। तीन साल पहले उसकी मां ने भी सुसाइड कर लिया था। जबकि उसके पिता की भी मौत हो चुकी है। एक साल पहले दादा की बीमारी के चलते उनका भी निधन हो गया। परिजन की लगातार मौत से दुखी छात्रा डिप्रेशन में थी। गुरुवार की रात उसने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। शुक्रवार को पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजन को सौंप दिया गया।

सब इंस्पेक्टर गब्बर सिंह के मुताबिक, भूमिका पुत्री कमलेश भौसले (15) सुरभि कॉलोनी में रहती थी। वह एक निजी स्कूल में कक्षा दसवीं की छात्रा थी। 2017 में उसके पिता की हार्ट अटैक से मौत हो चुकी थी। जबकि उसकी मां ने 2021 में खुद पर मिट्टी का तेल डालकर आग लगा ली थी। जिससे उसकी मौत हो गई थी। भूमिका और उसका छोटा भाई अपनी दादी के पास रहता था।

चिड़चिड़ी हो चुकी थी भूमिका- माता-पिता की मौत के बाद से वह दुखी रहती थी। साथ ही चिड़चिड़ापन भी रहता था। गुरुवार की रात उसने अपने कमरे में फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली। घटना की खबर लगते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने मृतका का शव बरामद कर उसे पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया था। कमरे की तलाश में पुलिस को किसी तरह का कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है।

बड़ा तालाब पर सेना की बाढ़ राहत ड्रिल

रेस्क्यू बोट से युवक को निकाला, पानी में डाइव कर एनडीआरएफ टीम ने किया लाइव रेस्क्यू

भोपाल (नप्र)। बड़ा तालाब स्थित 3 ईएमई प्रशिक्षण केंद्र, खानूगांव में शुक्रवार को भारतीय सेना के नेतृत्व में बाढ़ राहत और खोज-बचाव कार्यों की संयुक्त ड्रिल की शुरुआत हुई। इस अभ्यास में सेना के साथ एनडीआरएफ और गृह विभाग की टीमें शामिल हुईं। सुबह 10:45 बजे शुरू हुए इस मॉक डेमोंस्ट्रेशन ने लोगों को आपदा की घड़ी में रेस्क्यू ऑपरेशन का वास्तविक अनुभव दिया।

एनडीआरएफ ने दिखाया तालमेल, रेस्क्यू का अद्भुत प्रदर्शन- डेमोंस्ट्रेशन के दौरान एनडीआरएफ की टीम ने बाढ़ प्रभावित इलाकों की तरह पानी में फंसे लोगों को सुरक्षित निकालने का अभ्यास किया। टीम के सदस्य तालमेल के साथ बोट में सवार होकर पानी के बीच पहुंचे और डूबते व्यक्ति की लोकेशन ट्रेस कर उसे बचाया। यह दिखाया गया कि किस तरह एनडीआरएफ टीम वायरलेस और कॉलिंग के जरिए एक-दूसरे से समन्वय करती है और हर एक्शन प्लान को टीम भावना से अंजाम देती है।

एनडीआरएफ डाइवर्स ने गहरे पानी से रेस्क्यू किया- ड्रिल का सबसे रोमांचक हिस्सा रहा एनडीआरएफ के डाइवर्स का लाइव प्रदर्शन। टीम ने यह दिखाया कि यदि कोई व्यक्ति पानी में डूब जाए तो किस प्रकार प्रशिक्षित गोताखोर पानी में उतरकर उसकी तलाश कर उसे सुरक्षित बाहर निकालते हैं। गहरे पानी से एक युवक को सफलतापूर्वक बाहर निकालकर वास्तविक स्थिति जैसी रेस्क्यू कार्रवाई का प्रदर्शन किया गया।

सभी तरह की बोट्स रही मौजूद- रेस्क्यू ऑपरेशन में इस्तेमाल की जाने वाली सभी तरह की बोट्स , रिलीफ बोट, सेफ्टी बोट, और रेस्क्यू बोट मौके पर मौजूद रहीं। इनके जरिए यह बताया गया कि अलग-अलग परिस्थितियों में कौन सी बोट का कैसे उपयोग किया जाता है। एक डेमो में तो बोट के जरिए युवक को तालाब के बीच से रेस्क्यू किया गया, जिसमें एसडीआरएफ, एनडीआरएफ और सेना के जवानों ने संयुक्त रूप से तालमेल का परिचय दिया।

कोआर्डिनेशन भी बना ड्रिल का हिस्सा- ड्रिल के दौरान सिर्फ रेस्क्यू नहीं, बल्कि टीमों के बीच कम्युनिकेशन को भी प्रमुखता से दिखाया जा रहा है। यह दिखाया गया कि किस तरह वायरलेस, मोबाइल कॉल और सिग्नल के जरिए टीमों के बीच रियल टाइम संवाद होता है और कैसे वे एक साथ मिलकर काम करती हैं।

इस ड्रिल के जरिए भोपालवासियों को भरोसा दिलाया गया कि सेना और आपदा प्रबंधन एजेंसियां हर संभावित स्थिति से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। इस अभ्यास में सभी एजेंसियों ने अपना समन्वय और कुशलता बखूबी प्रदर्शित कर रही हैं।

पांच तहसीलदारों को बनाया प्रभारी डिप्टी कलेक्टर

पदोन्नति के नए नियम लागू, फिर भी जीएडी ने दी कार्यवाहक पदस्थापना, खुद ही तोड़े अपने बनाए नियम

भोपाल (नप्र)। राज्य सरकार ने हाल ही में लोक सेवा पदोन्नति नियम 2025 लागू किए हैं और सभी विभागों को 31 जुलाई तक इन्हीं नियमों के तहत पदोन्नति आदेश जारी करने के निर्देश दिए हैं। लेकिन इन्हीं नियमों को लागू कराने वाले सामान्य प्रशासन विभाग (जीएडी) ने खुद पांच तहसीलदारों को प्रभारी डिप्टी कलेक्टर बना दिया है। ये पदस्थापनाएं पुराने सिस्टम के तहत कार्यवाहक पदोन्नति के आधार पर की गई हैं। जबकि दूसरी तरफ GAD खुद कह चुका है कि अब सभी पदोन्नति नई व्यवस्था के मुताबिक ही की जाएंगी।

पांच तहसीलदार बने प्रभारी डिप्टी कलेक्टर

अलका एक्का - बैतूल की तहसीलदार थीं, अब पांढुर्णा में प्रभारी डिप्टी कलेक्टर बनीं।

आलोक वर्मा - आगर मालवा में तहसीलदार थे, अब शाजापुर में प्रभारी डिप्टी कलेक्टर बनाए गए।

अनिल कुमार तलैया - पहले छतरपुर के तहसीलदार थे, अब पन्ना में प्रभारी डिप्टी कलेक्टर की जिम्मेदारी दी गई।

बालकृष्ण मिश्रा - कटनी में तहसीलदार थे, अब सतना के प्रभारी डिप्टी कलेक्टर बनाए गए।

अनिल राघव - ग्वालियर के तहसीलदार थे, अब वहीं प्रभारी डिप्टी कलेक्टर की भूमिका संभालेंगे।

गौर करने वाली बात यह है कि पुलिस विभाग ने GAD के नए नियमों के बाद कार्यवाहक पदोन्नति की प्रक्रिया रोक दी है, लेकिन GAD ने खुद ही पुराने नियमों के आधार पर ये पदस्थापनाएं कर दीं।

चार एएसपी के तबादले, जबलपुर को मिला नया एएसपी

गृह विभाग ने गुरुवार को चार अतिरिक्त पुलिस अधीक्षकों (एएसपी) के तबादले किए हैं। इनमें उज्जैन, दमोह और भोपाल में पदस्थ अफसर शामिल हैं। सभी अधिकारियों को नई जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं।

संदीप मिश्रा - अब तक दमोह में एएसपी थे, अब उन्हें पुलिस मुख्यालय भोपाल में एआईजी बनाया गया है।

पल्लवी शुक्ला - उज्जैन की एएसपी थीं, अब उन्हें जबलपुर का एएसपी नियुक्त किया गया है।

संजय सिंह पंवार - भोपाल में 7वीं वाहिनी SAF के एएसपी थे, अब बने अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त, यातायात (जोन 1-2), भोपाल।

विक्रम सिंह रघुवंशी -अब तक भोपाल में अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त, यातायात (जोन 1-2) थे, अब बनाए गए एआईजी, पीटीआरआई, पीएचक्यू भोपाल।

आमजनों के प्रति संवेदनशील ऊर्जा महकमा

सीएम हेल्पलाइन की शिकायतों के निराकरण में ऊर्जा विभाग नबंर-1

भोपाल (नप्र)। लोक सेवा प्रबंधन विभाग द्वारा सीएम हेल्पलाइन पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों के निराकरण की स्थिति के आधार पर जारी ग्रेडिंग में ऊर्जा विभाग लगातार प्रथम स्थान पर बना हुआ है। विभागों की जारी ग्रेडिंग में एक मई से 31 मई 2025 तक की स्थिति में शिकायतों के निराकरण में ऊर्जा विभाग नम्बर-1 है। जून 2023 से अगस्त 2024 तक भी ऊर्जा विभाग लगातार प्रथम स्थान पर रहा है। दूसरे नम्बर पर खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग है। गौरतलब है कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भी गत दिनों सीएम हेल्पालाइन के प्रकरणों के निराकरण में ऊर्जा विभाग के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन पर विभाग के अधिकारी-कर्मचारियों को बधाई दी थी। ऊर्जा विभाग की आमजनों के बीच लगातार संवेदनशील छवि बनी हुई है।

ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने विभागीय अधिकारियों द्वारा शिकायतों के निराकरण में तत्परता से की गई कार्यवाही पर प्रसन्नता व्यक्त की है। उन्होंने कहा है कि आशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि अधिकारी आगे भी बिजली उपभोक्ताओं की समस्याओं का इसी तरह से त्वरित निराकरण करते रहेंगे।

सीएम हेल्पलाइन पोर्टल पर ऊर्जा विभाग से संबंधित शिकायतों के निराकरण के लिये एल-1 अधिकारी के रूप में कनिष्ठ अभियंता/सहायक अभियंता, एल-2 अधिकारी के रूप में कार्यपालन अभियंता, एल-3 अधिकारी के रूप में अधीक्षण अभियंता एवं एल-4 अधिकारी के रूप में मुख्य अभियंता सीएम हेल्पलाइन पोर्टल पर दर्ज हैं और उक्त सभी अधिकारियों द्वारा आमजन की शिकायतों का संवेदनापूर्वक निराकरण किया जाता है। प्रत्येक स्तर पर शिकायत के निराकरण के लिये 7 दिन का समय निर्धारित किया गया है। शिकायतों के निराकरण के बाद सीएम हेल्पलाइन कॉल-सेंटर द्वारा शिकायतकर्ता से दूरभाष पर निराकरण के संबंध में संतोषजनक जवाब प्राप्त करने के बाद ही शिकायतों को बंद किया जाता है। गौरतलब है कि राज्य शासन द्वारा नागरिकों को दी जा रही विभिन्न सेवाओं के संबंध में प्राप्त शिकायतों के निराकरण की पुख्ता व्यवस्था के लिये लोक सेवा प्रबंधन विभाग द्वारा सीएम हेल्पलाइन पोर्टल का निर्माण वर्ष 2014 में किया गया है। इस पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों को विभाग के संबंधित अधिकारियों को अग्रेषित किया जाता है।

गर्भवती-बच्चों के लिए पैरों से रौंदकर बना रहे पोषण-आहार

रीवा की सभी आंगनवाड़ियों में सप्लाई, कलेक्टर ने सीईओ को सौंपी जांच

रीवा (नप्र)। रीवा जिले में गर्भवती महिलाओं और बच्चों को दिए जाने वाले पोषण आहार को पैरों से कुचलकर बनाया जा रहा है। इससे जुड़ा एक वीडियो सामने आया है। इसमें एक युवक सड़ा-गला अनाज पैरों से रौंदते हुए मशीन में डालते नजर आ रहा है।

मामला पहाड़िया स्थित टेक होम राशन प्लांट का है। इसका संचालन जिला पंचायत के माध्यम से किया जा रहा है। यहीं से ये पूरक पोषण आहार जिले की सभी आंगवाड़ियों में सप्लाई किया जाता है। कलेक्टर प्रतिभा

पाल ने मामले की जांच के निर्देश दिए हैं।पोषण आहार के लिए उपयोग किए जा रहे राशन को पैरों से कुचलकर मशीन में डाला जा रहा है।

सीईओ को दिए जांच के निर्देश- मामला सामने आने पर कलेक्टर प्रतिभा पाल ने ने कहा, पहाड़िया THR प्लांट से जुड़ी शिकायत सामने आई है। मैंने जिला पंचायत सीईओ को निर्देश दिए हैं कि वे मौके पर जाकर निरीक्षण करें और यह जांचें कि किस प्रकार का पूरक पोषण आहार तैयार किया जा रहा है और किस तरह का अनाज उपयोग में लिया जा रहा है।

महिलाओं द्वारा संचालित है यह प्लांट- पहाड़िया टीएचआर प्लांट को स्थानीय महिला समूहों द्वारा संचालित किया जाता है।

नेशनल को-ऑपरेटिव एक्सपोर्ट लिमि. के साथ सहकारी संघ एवं मंडी बोर्ड के बीच हुआ एमओयू

किसानों के उत्पादों को मिलेगा अधिक लाभ : मंत्री सारंग

सारंग और कंषाना की उपस्थिति में हुई राज्य स्तरीय कार्यशाला

भोपाल (नप्र)। सहकारिता मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने सहकारी आंदोलन को मजबूत करने और इसके माध्यम से किसानों को उनकी फसल का और अधिक लाभ उपलब्ध कराने की मंशा से राष्ट्रीय स्तर पर को-ऑपरेटिव सेक्टर में निर्यात की गतिविधियों को बढ़ाने के लिए नेशनल को-ऑपरेटिव एक्सपोर्ट लिमिटेड (एनसीईएल) का गठन किया। इसके माध्यम से किसानों को उनके उत्पाद में अधिक से अधिक लाभ मिल सकेगा। मंत्री श्री सारंग प्रदेश के विभिन्न उत्पादों विशेष रूप से मसालों एवं हैंडीक्राफ्ट उत्पादों के एक्सपोर्ट को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से शुक्रवार को भोपाल में राज्य स्तरीय कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर मसालों के निर्यात को संस्थागत रूप से बढ़ावा देने के लिए नेशनल एक्सपोर्ट को-ऑपरेटिव लिमिटेड के साथ मध्यप्रदेश राज्य सहकारी संघ और कृषि मंडी बोर्ड के बीच महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर भी हस्ताक्षर किए गये।

मंत्री श्री सारंग ने कहा कि एनसीईएल के साथ राज्य संघ और मंडी बोर्ड का एमओयू मध्यप्रदेश के किसानों के लिए एक नया प्लेटफार्म उपलब्ध कराएगा। इसके माध्यम से किसान अपने उत्पाद का निर्यात कर सकेंगे। अब किसानों के उत्पादों को उचित दाम तो मिलेगा ही साथ ही

सहकारिता आंदोलन को मजबूती मिलेगी। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि मध्यप्रदेश की 1578 सोसाइटियों ने एनसीईएल की मेंबरशिप ली है। इससे किसानों के उत्पाद निर्यात होंगे। मध्यप्रदेश किसानों के उत्पाद के लिए भी दुनिया में निर्यातक बनने का कीर्तिमान स्थापित करेगा और मध्यप्रदेश देश में नंबर एक होगा।

सहकारिता कृषि का महत्वपूर्ण अंग : मंत्री कंषाना

किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना ने सहकारिता को कृषि का महत्वपूर्ण अंग बताया है। उन्होंने कहा कि सहकारिता के माध्यम से ही लक्ष्य तक पहुंचा जा सकता है। हिंदुस्तान कृषि प्रधान देश है और मध्यप्रदेश देश में कृषि क्षेत्र में अग्रणी है। मध्य प्रदेश को सात बार कृषि कृर्मण अवार्ड भी मिला है।

उत्पाद को डिमांड के अनुसार पहुंचाने पर मिलेगा सही दाम : एसीएस बर्णवाल

अपर मुख्य सचिव श्री अशोक बर्णवाल ने कहा कि एमओयू के जरिये किसानों के उत्पाद को डिमांड के अनुसार पहुंचाने पर सही दाम मिल सकेगा। देश पहले उत्पादों का आयात करता था, अब निर्यात के जरिए इंटरनेशनल मार्केट तक उत्पाद पहुंचाकर सही दाम प्राप्त कर सकेगा। मध्यप्रदेश की धान, मसाले, धनिया, मिर्ची, केले आदि का काफी निर्यात होता है, अब किसानों को इसका सीधा लाभ मिल सकेगा।

एनसीईएल के एमडी श्री अनुपम कौशिक ने कहा कि मध्यप्रदेश के विशिष्ट उत्पादों और किसानों को अब सीधे अंतर्राष्ट्रीय बाजारों से जोड़ेंगे, जिसके जरिए उनकी आय में वृद्धि होगी। सहकारिता से समृद्धि और निर्यात से उन्नति की दिशा में हम प्रयासरत है। मध्यप्रदेश सरकार एवं उनके विभिन्न विभाग के सहयोग और समर्थन से हम आगे बढ़ेंगे।

अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष समारोह के अंतर्गत यह आयोजन एनसीईएल और मध्यप्रदेश राज्य सहकारी संघ के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। कार्यशाला में 'मध्यप्रदेश के किसानों को निर्यात के लिये सक्षम बनाना' विषयक संयुक्त उत्पाद संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया।

कार्यशाला में प्रदेश भर से लघु एवं मध्यम स्तर के मिर्च, धनिया, लहसुन आदि मसाला उत्पादक किसान, हस्तशिल्प निर्माता, सहकारी समितियाँ, एफपीओ तथा अन्य उत्पादक समूह ने भाग लिया। विशेषज्ञों द्वारा निर्यात प्रक्रिया, अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों, पैकेजिंग, ब्रांडिंग और बाजार उपलब्धता जैसे विषयों पर सत्र आयोजित किए गये।

कार्यशाला में प्रबंध संचालक विपणन संघ श्री आलोक कुमार सिंह, प्रबंध संचालक मंडी बोर्ड श्री कुमार पुरूषोत्तम सहित सहकारिता एवं कृषि विभाग के अधिकारी उपस्थित थे। अंत में सहकारिता आयुक्त एवं पंजीयक श्री मनोज पुष्प ने आभार माना।

संपादकीय

एससीओ: भारत का रूख सही

अगर आतंकवाद पर एससीओ (शंघाई सहयोग संगठन) का रवैया पक्षपातपूर्ण है तो एससीओ समिट के संयुक्त घोषणापत्र पर भारत का हस्ताक्षर न करना सही फैसला है। भारत के संयुक्त बयान पर दस्तखत न करने से समिट का घोषणा पत्र जारी नहीं हो सका। हालांकि भारत के इस रूख देश के पूर्व विदेशमंत्री यशवंत सिन्हा ने यह कहकर आलोचना की है कि इससे भारत दुनिया में पूरी तरह अकेला पड़ गया है। कांग्रेस प्रवक्ता शमा मोहम्मद ने भी कहा कि पीएम मोदी की अगुवाई में भारत अलग-थलग पड़ गया है।

गौरतलब है कि भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने चीन के क्विंगदाओ में हुई शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की दो दिनी बैठक के ज्वाइंट स्टेटमेंट पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया था। इस पर विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने बताया कि एससीओ के कुछ सदस्यों देशों के बीच कुछ मुद्दों पर सहमति नहीं बनने की वजह से ज्वाइंट स्टेटमेंट जारी नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि हमारी आतंकवाद को लेकर कुछ चिंताए थीं और हम चाहते थे कि वे उस दस्तावेज में जाएं। लेकिन एक देश को उस पर आपत्ति थी। जिसकी वजह से स्टेटमेंट फाइनल नहीं हुआ। भारतीय विदेश मंत्रालय के बयान के अनुसार आतंकवाद के खतरे से हमें लड़ना चाहिए। इस बात को हमने एससीओ बैठक में उठाया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने एससीओ मीटिंग में आतंकवाद के खिलाफ़ भारत की नीति में बदलाव की व्यापक रूपरेखा पेश की तथा सभी सदस्य देशों से इस चुनौती से निपटने के लिए एकजुट होने की अपील की। उन्होंने कहा कि शांति, समृद्धि और आतंकवाद एक साथ नहीं चल सकते। कुछ देश सीमा पार आतंकवाद को साधन के रूप में इस्तेमाल करते हैं और आतंकवादियों को पनाह देते हैं। ऐसे दोहरे मानदंडों के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए। एससीओ को ऐसे देशों की आलोचना करने में संकोच नहीं करना चाहिए। अपने बयान में उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर का उल्लेख भी किया। समिट में कोई ज्वाइंट स्टेटमेंट जारी नहीं हुआ, इसकी पुष्टि चीन के सरकारी मीडिया ग्लोबल टाइम्स ने भी की। उसने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि चीन के रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता जांग शाओगिंग से आतंकवाद से जुड़े मुद्दों पर मतभेदों के कारण एससीओ ज्वाइंट स्टेटमेंट पर भारत के इनकार से जुड़ा सवाल किया गया। इस पूरे मामले में भारत की सफलता भी है और असफलता भी। सफलता यह है कि भारत द्वारा दस्तखत न करने के कारण संयुक्त बयान जारी नहीं हो सका। क्योंकि बयान के ड्राफ्टर में बलूचिस्तान में हो रहे आतंकी हमलों का जिक्र तो था, लेकिन पहलगाम आंतकी हमले का कोई उल्लेख नहीं था। इसके पीछे चीन और पाक की चाल यह बताने की कोशिश थी कि बलूचिस्तान में आंतकी हमलों के पीछे भारत का हाथ है, जबकि पहलगाम में मामले में पाक और चीन चुप्पी साध लेना चाहते थे, जो भारत नहीं होने दिया। लेकिन इसका दूसरा पहलू यह भी है कि जहां एससीओ के सदस्य देश बलूचिस्तान में आंतकी हमलों के खिलाफ एकजुट हो गए, वहीं भारत के कश्मीर में हो रहे आंतकी हमलों का कोई जिक्र नहीं किया गया। यह शुद्ध रूप से चीन और पाक की कूटनीतिक चाल थी, उसे भारत ने भांप पर सुंक्त घोषणा पत्र दस्तखत करने से इंकार कर दिया। इस दृष्टि विदेश मंत्रियों का यह सम्मेलन विफल ही रहा। उल्लेखनीय है कि शंघाई सहयोग संगठन यानी एससीओ की स्थापना वर्ष 2001 में चीन, रूस और सोवियत संघ का हिस्सा रहे चार मध्य एशियाई देशों कज़ाख़स्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान और उज़्बेकिस्तान ने मिलकर थी। इसका उदय रूस, चीन और इन मध्य एशियाई देशों के बीच वर्ष 1996 में सीमा को लेकर हुए एक समझौते के साथ हुआ था।

नजरिया

अली खान
लेखक प्रारंभिक शिक्षा विभाग राजस्थान में शिक्षक हैं।

जंगल की आग से पानी में घुलता जहर

मानव सभ्यता की प्रगति प्रकृति के साथ सामंजस्य से ही संभव हुई है। पेड़-पौधे, नदियां, पर्वत, वनों की हरियाली ये सभी तत्व न केवल जीवन के लिए आवश्यक हैं, बल्कि पृथ्वी के पर्यावरणीय संतुलन के मूल आधार भी हैं। इन्हीं में से वन (जंगल) पृथ्वी के 'फेफड़े' कहे जाते हैं, जो कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर प्राणवायु ऑक्सीजन का सृजन करते हैं। वनों की उपस्थिति न केवल वायु गुणवत्ता बनाए रखती है, बल्कि जलवायु संतुलन, जैव विविधता का संरक्षण, वर्षा चक्र को नियंत्रित करने और भूजल स्तर को बनाए रखने जैसे अनेक आवश्यक कार्यों में सहायक होती है। किन्तु विडंबना यह है कि आज यही वन अपने अस्तित्व के संकट से जूझ रहे हैं। जंगलों में लगने वाली आग, जो पहले कभी प्राकृतिक प्रक्रिया का हिस्सा मानी जाती थी, अब मानवजनित कारणों से एक विकराल संकट का रूप ले चुकी है। यह संकट केवल वृक्षों की क्षति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका असर वायु, जल और भूमि तीनों जीवन धाराओं पर गहराई से पड़ रहा है। विशेषकर जल स्रोतों में फैलता प्रदूषण इस संकट का एक ऐसा पहलू है, जिसकी चर्चा अपेक्षाकृत कम होती है, परंतु इसके दुष्परिणाम अत्यंत व्यापक और घातक हैं।

हाल ही में न्यूयॉर्क के वैज्ञानिकों द्वारा किए गए एक अंतरराष्ट्रीय शोध अध्ययन में यह स्पष्ट रूप से सिद्ध हुआ कि जंगल की आग के बाद, वहां के निकटवर्ती जल स्रोत नदियां, झीलें, तालाब वर्षों तक प्रदूषित रह सकते हैं। यह अध्ययन प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय पत्रिका 'नेचर कम्युनिकेशंस अर्थ एंड एनवायरनमेंट' में प्रकाशित हुआ है, जिसमें अमेरिका की उन्नत प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों ने 500 नदियों और झीलों से एक लाख से अधिक जल नमूने लेकर यह विश्लेषण किया कि आग के बाद जल स्रोतों की गुणवत्ता में किस प्रकार का परिवर्तन आता है।

इस शोध में पाया गया कि जंगलों की आग के बाद जल में नाइट्रोजन, ऑर्गेनिक मैटर (जैविक पदार्थ), राख, रेत और मिट्टी जैसे हानिकारक तत्वों की मात्रा अत्यधिक बढ़ जाती है। इनमें से कई तत्व मानव शरीर के लिए विषैले होते हैं और पीने योग्य जल के मानकों से कई गुना अधिक पाए गए हैं। यह भी देखा गया कि इन तत्वों का प्रभाव आग के बाद एक वर्ष से लेकर आठ वर्षों तक बना रह सकता है। वर्षा के माध्यम से जब यह तत्त्व जल स्रोतों में प्रवाहित होते हैं, तो वे पारिस्थितिकी तंत्र को व्यापक रूप से प्रभावित करते हैं। जलीय स्रोतों के प्रदूषित होने से जल प्रदूषण की समस्या पर्यावरण की सेहत को भारी क्षति पहुंचाती है। दरअसल, यह जल प्रदूषण जलीय जीवों (मछलियों, कीटों, जल-वनस्पतियों) के जीवन चक्र को बाधित करता है, जिससे स्थानीय जैव विविधता पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा, यह प्रदूषित जल मनुष्यों के लिए गंभीर स्वास्थ्य संकट का कारण बन सकता है।

भारत, जो एक विशाल भौगोलिक विविधता वाला देश है, उसका लगभग 21 फीसदी क्षेत्र वनाच्छादित है। इन वनों में से अधिकांश क्षेत्र सूखे जंगलों से संबंधित हैं, जो जलवायु परिवर्तन और मानवीय दखल के चलते अत्यधिक संवेदनशील हो चुके हैं।

भारतीय वन सर्वेक्षण के आंकड़ों के मुताबिक, वर्ष 2022-23 में भारत में 2,12,249 जंगल की आग की घटनाएं दर्ज की गईं। इनमें सबसे अधिक घटनाएं उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में हुईं।

विशेष रूप से हिमालयी क्षेत्र, जहां की भौगोलिक बनावट में तीव्र ढलान, कम नमी और चीड़ जैसे ज्वलनशील पेड़ अधिक पाए जाते हैं, यह क्षेत्र जंगल की आग के लिए अत्यंत संवेदनशील है। इन क्षेत्रों में जल स्रोतों गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, सतलुज जैसी नदियों का उद्गम होता है, जिन पर करोड़ों लोगों की जल आपूर्ति निर्भर है। ऐसे में, इन क्षेत्रों में जंगलों में लगने वाली आग का जल गुणवत्ता पर पड़ने वाला प्रभाव सम्पूर्ण भारतवर्ष के लिए चिंता का विषय बन जाता है। हिमालयी क्षेत्रों में एक बार यदि जल प्रदूषण की प्रक्रिया आरंभ हो जाए, तो वहां की तीव्र ढलानों और तेज बहाव वाली नदियों के कारण यह प्रदूषण तेजी से मैदानी क्षेत्रों तक फैल सकता है। इससे केवल एक क्षेत्र विशेष नहीं, बल्कि सम्पूर्ण गंगा घाटी जैसे विस्तृत क्षेत्र प्रभावित हो सकते हैं।

वैज्ञानिकों का स्पष्ट मानना है कि जंगल की आग की घटनाओं में अप्रत्याशित वृद्धि के पीछे सबसे बड़ा कारण वैश्विक तापमान में हो रही लगातार वृद्धि है। वर्ष 2024 में ही जंगल की आग ने वैश्विक स्तर पर 40 करोड़ हेक्टेयर भूमि को प्रभावित किया और 6.5 अरब टन कार्बन डाइऑक्साइड वायुमंडल में छोड़ा गया, जो अब तक का सबसे अधिक आंकड़ा है। शोधों में यह भी स्पष्ट हुआ है कि जंगल की 95 फीसदी आग मानवजनित होती है। ये आग कभी जंगलों में लापरवाही से फेंकी गई बीड़ी से, कभी ट्रेनों से निकली चिंगारी से, तो कभी पेड़ों की सूखी शाखाओं के आपसी घर्षण से शुरू होती है। वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन, कोयले-तेल-गैस का अत्यधिक उपयोग, वनों की अवैध कटाई और वन क्षेत्रों में मानवीय हस्तक्षेप इन आगजनी की घटनाओं को और अधिक घातक बना देते हैं। विगत वर्षों में मानसून में अनियमितता, वर्षा की कमी और बढ़ती गर्मी ने जंगलों को अत्यधिक शुष्क बना दिया है, जिससे आग तेजी से फैलती है। पेड़ों की सूखी टहनियां, पत्तियां और चीड़ जैसे पेड़ आग को और भी अधिक भयावह बना देते हैं।

जंगलों की आग के बाद जल स्रोतों में घुलने वाले नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, रसायन और जैविक पदार्थों से जल की गुणवत्ता अत्यधिक खराब हो जाती है। इससे सबसे पहले प्रभावित होता है वहां का जलीय जीव समुदाय यथा मछलियाँ, कीट-पतंगे, काई, शैवाल आदि। यह पारिस्थितिक श्रृंखला को तोड़ देता है। साथ ही, मनुष्यों के लिए यह जल विषाणुजनित रोगों, त्वचा विकारों, पाचन संबंधी समस्याओं और यहां तक कि कैंसर जैसी घातक बीमारियों का कारण बन सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में जहां जल शुद्धिकरण की पर्याप्त सुविधाएं नहीं हैं, वहां इसका असर और भी अधिक होता है। इसके अलावा, जंगलों की आग से जो राख और जहरीले कण वायुमंडल में फैलते हैं, वे वायु प्रदूषण को चरम पर ले जाते हैं। ये कण वायुमंडल में लंबे समय तक रहते हैं और हवा की गुणवत्ता में भारी गिरावट लाते हैं। यह अस्थमा, फेफड़े की बीमारी और आंखों की जलन जैसे स्वास्थ्य संकट को जन्म देता है।

भारत जैसे विशाल आबादी वाले देश के लिए जंगल की आग और उसके कारण उत्पन्न जल प्रदूषण कई स्तरों पर चुनौतीपूर्ण हैं। जंगलों की निगरानी प्रणाली की कमजोरी, जंगलों के निकट रहने वाले समुदायों की जानकारी और भागीदारी की कमी के साथ-साथ जल स्रोतों की नियमित गुणवत्ता जांच का अभाव भी चिंतित करने वाला है। वैश्विक जलवायु परिवर्तन के स्थानीय प्रभावों की अनदेखी, वन नीति और जल नीति में समन्वय की कमी भी चिंताजनक है।

इस संकट का समाधान केवल एक विभाग या संस्था के बस की बात नहीं है। इसके लिए बहुस्तरीय और समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है।

1. वन प्रबंधन और आग की रोकथाम: वन क्षेत्रों में आधुनिक अग्नि चेतावनी प्रणाली (ड्रोन, सैटेलाइट, थर्मल इमेजिंग) लागू की जाए। जंगलों की सफाई, सूखी टहनियों और पत्तियों को समय-समय पर हटाया जाए। ग्रामीणों और वनवासियों को आग से निपटने के लिए प्रशिक्षित किया जाए।

2. जल स्रोतों की सुरक्षा: नदी, तालाब और झीलों के आस-पास बफर जोन विकसित किए जाएं। वर्षा के बाद जल की गुणवत्ता की नियमित निगरानी की जाए। प्रदूषित जल स्रोतों की सफाई और पुनः शुद्धिकरण की व्यवस्था हो।

3. शिक्षा और जागरूकता : स्कूलों, पंचायतों और ग्राम स्तर पर आगजनी और जल प्रदूषण से जुड़ी जागरूकता अभियान चलाए जाएं। वन मित्र समितियों का गठन किया जाए।

4. पर्यावरणीय कानूनों का सख्त पालन : जंगलों में अनधिकृत गतिविधियों पर कठोर कार्रवाई हो। आग से प्रभावित क्षेत्रों में पुनर्वनीकरण को अनिवार्य बनाया जाए।

5. वैश्विक साझेदारी : भारत को जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए वैश्विक मंचों पर सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। वन संरक्षण के लिए अंतरराष्ट्रीय अनुभवों और संसाधनों का आदान-प्रदान किया जाए।

जंगलों की आग अब महज पेड़ जलने की घटना नहीं है। यह पर्यावरण, जल, वायु, पारिस्थितिकी तंत्र, जैव विविधता और मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाली एक वैश्विक आपदा बन चुकी है। विशेष रूप से जल स्रोतों पर इसका गहरा प्रभाव भविष्य की पीढ़ियों के लिए खतरे का संकेत है। यदि हमने अब भी इसे गंभीरता से नहीं लिया, तो यह संकट न केवल व्यापक होगा, बल्कि अपूरणीय भी। हमें यह समझना होगा कि जंगल और जल का गहरा संबंध है, एक के बिना दूसरा नहीं टिक सकता। इस संतुलन को बनाए रखना मानवता के अस्तित्व के लिए अनिवार्य है। लिहाजा, आज आवश्यकता है सजग नागरिकों, सशक्त शासन और संवेदनशील नीतियों की, जो जंगलों की आग पर नियंत्रण कर, जल स्रोतों की रक्षा कर सकें और धरा को पुनः स्वस्थ बना सकें।

शिक्षा

डॉ. सूर्यकांत मिश्रा
लेखक अध्यापन से जुड़े हैं।

क्या गलत था पुराना शैक्षणिक कैलेंडर ?

बहुत वर्षों से मेरे मन में एक अनसुलझा सवाल मुझको उलझाए हुए है । जब मैं अपनी स्कूली शिक्षा के दौर से गुजर रहा था। बड़ा सुकून महसूस किया करता था। 1 जुलाई से स्कूलों में पढ़ाई शुरू हुआ करती थी । सितंबर माह में तिमाही परीक्षा, लगभग दिसंबर माह में छमाही परीक्षा और फिर मार्च के अंत तक या अप्रैल माह के प्रथम माह तक वार्षिक परीक्षा संपन्न की जाती थी। इस बीच खेलकूद की गतिविधियों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम जिसे वार्षिकोत्सव स्नेह सम्मेलन कहा जाता था, भी संपन्न हुआ करते थे। सबसे बड़ी बात यह कि सारी गतिविधियां बिना किसी व्यवधान के ही जाया करती थीं। अप्रैल के अंतिम दिनों में परीक्षा परिणाम घोषित किए जाने के उपरांत गर्मियों की छुट्टियां शुरू हुआ करती थीं। इस बीच दीपावली का बड़ा पर्व भी हमेशा की तरह आया करता था। नवरात्र पर्व की अष्टमी तिथि या एक - दो दिन आगे - पीछे दीपावली की छुट्टी शुरू हो जाया करती थी। यह छुट्टियां लगातार लगभग 25 दिन चल करती थीं। पर्व का उत्साह सिर चढ़कर बोला करता था। बच्चे पूरी तरह गर्मी और सूर्य की तपन से राहत पाया करते थे। न जाने उक्त कैलेंडर में क्या कमी अथवा बड़ी त्रुटि कर्णधारों को नजर आई, कि उसे पूरी तरह बदल दिया गया! अब भरी गर्मी में पूरे अप्रैल माह के अंत तक उन्हें अगली कक्षा की तैयारी में झोंका जाना शुरू कर दिया गया! इतना ही नहीं मानसून के सक्रिय होने से पहले पुनः 15 जून से तपती दोपहरी में स्कूल की दहलीज पर पहुंचने का फरमान विद्वान शिक्षाविदों द्वारा दिया जाने लगा है!

आज मैं अनेक विद्वानों की नजर में बे-अक्ल कहा जाऊं तो मुझे कोई शिकवा - शिकायत नहीं है । केवल इतना जानना चाहता हूं कि पुराने शैक्षणिक सिस्टम और अत्याधुनिक, वर्तमान के कैलेंडर के बीच शिक्षा जगत के कर्णधारों ने क्या उल्लेखनीय प्रगति की ? क्या पहले के शिक्षाविदों ने जो वार्षिक शैक्षणिक गतिविधि को अपनाया था वह दूषित थी ? क्या उस वक्त शिक्षा ग्रहण करने वालों को आधी - अधूरी तैयारी के साथ परीक्षा में बैठने विवश होना पड़ रहा था ? क्या परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों के उत्तर शिक्षार्थी नहीं दे पा रहा था। यदि इन प्रश्नों का उत्तर न में है तो फिर एक सु - व्यवस्थित समय - सारिणी को क्यों बदला गया ? दूसरी ओर यदि मेरे प्रश्नों का उत्तर हां में है तो यह बताया जाए कि नए कैलेंडर में बच्चों पर ज्यादा ध्यान दिया रहा है या फिर कहीं न कहीं इसे शिक्षा माफियाओं के स्वार्थ से तो नहीं जोड़ दिया गया है ? मैं आखिर क्यों इस तरह की तुलना में उलझ पड़ा हूं ? जहां तक मैं सोचता हूं इस वक्त के सिस्टम में बच्चों के स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान दिया गया था, जो अब पूरी तरह विलुप्त दिख रहा है। नए शैक्षणिक कैलेंडरों बच्चों की छुट्टियां लगभग खत्म कर दी गई हैं!

मार्च माह के तीसरे सप्ताह तक परीक्षा में उलझे बच्चों को बमुश्किल एक सप्ताह का आराम मिल पाता है। 1 अप्रैल से पुनः 30 अप्रैल तक कक्षाएं लगाई जाती हैं! आप यह जरूर कह सकते हैं कि 1 मई से 14 जून तक बच्चों को छुट्टी दी जा रही है। मैं इसे नहीं मानता ! कारण यह कि प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा बड़ी चालाकी के साथ 'समर क्लासेज' के नाम पर बच्चों को बाहर जाने से रोक दिया जाता है ! नाना - नानी सहित दादा - दादी का प्यार पाने बच्चे तरसा दिए जा रहे हैं!

वह भी एक समय था जब बच्चे स्कूल की छुट्टियां शुरू होते ही मैदानों में पहुंचने लगते थे। शाम 4 बजे से हर शहर के खेल मैदान बच्चों के खेल जीवन और उनकी उन्मुक्त आवाजों से गूंज उठते थे। हॉकी से लेकर फुटबॉल, वॉलीबॉल, बास्केटबॉल के साथ ही अपनी चाहत के अनुसार बच्चे बेसबॉल के ग्राउंड में धमाचौकड़ी करते देखे जाते थे। आज की नवीन व्यवस्था ने छुट्टियों के गिने - चुने दिनों को भी चुनौती पूर्ण बनाते हुए बच्चों को कोचिंग कक्षाओं से जोड़ दिया है । कुछ इस तरह की स्थिति निर्मित की जा रही है कि बच्चों के साथ ही पालकों को भी ऐसा लगने लगा है कि यदि बच्चे खेल के मैदान में होंगे तो अपना भविष्य नहीं संवार पाएंगे! 'कुल मिलाकर उस कहावत को साइन बताने का प्रयास सफल होता दिख रहा है जो कुछ इस तरह है - 'पढ़ोगे - लिखोगे तो बनोगे नवाब, खेलोगे - कूदेगो तो बनोगे खराब ..।' मैं पूछना चाहता हूं आज से चार दशक पूर्व के उन लोगों से, जो या तो अब भी अपने सेवानिवृत्ति की प्रतीक्षा में कार्यरत हैं या सेवानिवृत्त हो चुके हैं, क्या आप लोगों ने भी उस सिस्टम में कोई त्रुटि पाई थी ? यदि नहीं तो अपने बच्चों के साथ अन्याय क्यों? बच्चों के स्वास्थ्य से लेकर सीमित पाठ्यक्रम के साथ भविष्य निर्माण का मजबूत आधार तय करने वाले बेहतरीन शैक्षणिक कैलेंडर को पुनः लागू करने सरकार के कान खड़े क्यों न किए जाएं ?

कुछ चर्चा इस बात पर भी की जानी चाहिए कि प्री - प्राइमरी , प्राइमरी तथा मिडिल कक्षाओं के बच्चों के बस्ते के बोझ को कम करने की पूर्व घोषणा कब पूरी की जाएगी ? आज नर्सरी से लेकर ऊपर के जी के बच्चों की पुस्तकों एवं कॉपियों का सेट 3000 या उससे अधिक में मिल रहा है। निजी पुस्तक प्रकाशकों द्वारा छपी गई पुस्तकों के माध्यम से पालकों को लूटने का ही काम किया जा रहा है। छोटे बच्चों की शिक्षा के लिए जरूरी पुस्तकें एनसीईआरटी के द्वारा प्रकाशित कराकर इस लुट से बचाया जा सकता है। गौरतलब है कि एनसीईआरटी द्वारा छापी गई कक्षा पहली से आठवीं की पुस्तकें मात्र 400-500 रूपये में उपलब्ध हैं। इसी तरह हाई एवं हॉयर सेकेंडरी की पुस्तकें भी अधिक से अधिक 600 रुपयों तक आसानी से उपलब्ध हैं। शिक्षा को व्यवसाय नहीं सेवा के दायरे में ही रहने दिया जाए। इस हेतु केंद्र स्थित सरकार के साथ ही राज्य सरकारों को भी चिंता करनी चाहिए।

आम आदमी का आम सड़क का अधिकार आखिरी में

व्यंग्य

सुरेश रायकवार
लेखक व्यंग्यकार हैं।

आज दयाराम जी के पड़ोसी सड़क पर लगे जाम से जैसे-तैसे निकल कर घर पहुंचे तो अपनी भड़ास निकालते हुए बोले 'शहर की सड़कों पर चलना दूभर है, कहीं जाम है तो कहीं वीआईपी के काफिले के कारण रास्ता परिवर्तन है, कहीं कीचड़ है, कहीं गड्ढे है तो कहीं अतिक्रमण है, समझ नहीं आता कि सड़कों पर आम आदमी को चलने का अधिकार भी है या नहीं, आखिर चलें तो चलें कहाँ?'

दयाराम जी मुस्कुराते हुए बोले - देश की कोई भी सड़क हो उसपर रोड-टेक्स देने वाली आम जनता का अधिकार आखिरी ही होता है श्रीमानजी! वर्षा ऋतु के आते ही सड़कों पर सर्वप्रथम अधिकार बारिश के पानी का होता है। कभी-कभी तो यह बारिश का पानी अपने अधिकार का इतना अतिक्रमण करता है कि शहर की सड़कों पर नदियों का या बाढ़ का दृश्य दिखाई देने लगता है, जिसमे कई गाड़ी-घोड़े तक बहते नजर आते है। इस प्रकार के नजारे दिखवाने के लिए हमारे सड़क निर्माण करने वाले महान इंजीनीयरों को भारत रत्न से अलंकृत किया जाना भी शायद कम ही होगा।

किसी भी शहर की मुख्य सड़क पर नाम के आधार पर सबसे पहला अधिकार हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का होता है, उसके बाद वाली मुख्य सड़क पर नेहरू चाचा का और बाकी की अन्य सड़कों पर सामान्यतः अभी भी आक्रांताओं और अंग्रेजों का ही अधिकार बरकरार है। जब ये आक्रांता या शासक देश में आए तो इन लोगों ने सड़कों के नाम अपनी सुविधा अनुसार अपने लोगों के नाम पर रख लिए। किन्तु आजादी के बाद भी अब दोबारा इसलिए नहीं बदले जा सकते हैं क्योंकि हमारा देश विश्व का सर्वश्रेष्ठ प्रजातांत्रिक देश है, यहाँ केवल नाम बदलने से ही किसी की धार्मिक तो किसी की राजनैतिक भावनाएं आहत हो जाती हैं। किसी को लगता है कि नाम में क्या रखा है, सड़क तो सड़क ही है।

खैर नाम के बाद सड़क पर चलने का प्रथम अधिकार, हमारे देश को चलाने वाले तथाकथित वीआईपी नेताओं अथवा अधिकारियों का होता है। आम-आदमी का कार्यालय जाने का समय हो या त्यौहारों का मौसम, यदि वीआईपी को सड़क से गुजरना है तो आम-आदमी को सड़क खाली करना ही होगी। नेताओं और अधिकारियों के बाद सड़कों पर यदि किसी का अधिकार है तो वो हमारे परम पुरुषार्थी बिजली विभाग, टेलीफोन विभाग, नगर निगम आदि हैं, नई सड़क देखते ही इन्हे ऐसा लगता है जैसे किसी सांड को लाल कपड़ा दिखा दिया हो, लाल झंडी लगाकर तुरंत सड़क की खुदाई आरंभ कर देते है। आम जनता की परेशानी से इनका कोई लेना देना नहीं होता, इन्हे खोदना है तो खोदना है।

कहने को सरकार ने राष्ट्रीय मार्ग बनाए है किन्तु इन पर भी बेचारा आम-आदमी कहाँ चल पाता है, हर पचास-साठ किलोमीटर पर एक टोल नाका आ जाता है, जहां भारी भरकम टोल-शुल्क वसूला जाता है। अब आम आदमी की जेब में इतना वजन कहाँ की इतने टोल देकर वह इन सड़कों का उपयोग कर सके। इनके बाद सड़कों पर अधिकार आता है, हमारे देश की सेवा भावी राजनैतिक पार्टियों का, जो समस्या निराकरण के नाम पर आए दिन, इन सड़कों पर बड़े-बड़े जुलूस निकालते है, कभी धरने पर बैठते है तो कहीं चक्का जाम करवाते हैं। कई सड़कों पर बीचों-बीच धार्मिक आस्था के नाम पर निर्माण कर दिये जाते हैं, ऐसा बताया जाता है कि व्यस्ततम मार्ग पर बने आस्था केंद्र पर नेताओं की सबसे अधिक मन्नतें पूरी होती है। अब यदि किसी की मन्नत पूरी हो रही हो और आम-जनता को थोड़े से ट्रेफिक जाम का सामना करना भी पड़े तो क्या है, प्रजातन्त्र में सब चलता है।

राजनैतिक पार्टियां, धार्मिक आस्था केंद्र के बाद नंबर आता है शहर के महाबलियों का। इनके द्वारा सड़कों पर अपने बाहुबल और राजनैतिक आकाओं के संरक्षण में अतिक्रमण किया जाता है और सड़क का उपयोग स्वयं के लिए किया जाता है। कहीं-कहीं यह कार्य स्थानीय संस्थाओं के भ्रष्ट अधिकारियों से साँठ गांठ करके भी किया जाता है।

इन सब के बाद कुछ सड़क बचती है तो सड़कों पर आवारा पशुओं द्वारा कब्जा कर लिया जाता है या कुछ समझदार लोग अवैध पार्किंग में सड़क का उपयोग कर लेते है। और हाँ, कभी-कभी ऐसा भी होता है कि कोई गरीब यदि गलती से भी सड़क के फुटपाथ का उपयोग रात में सोने के लिए कर ले, तो कोई सेलेब्रिटी या रईस नशे में अपनी गाड़ी इन गरीबों पर चढ़ा देते है और भाग भी जाते है।

अंत में अब जो गड्ढे वाली ऊबड़-खाबड़ सड़क बचती है, उसपर एकमुश्त जीवन भर का रोड टेक्स भुगतान करने वाला आम-आदमी अपना अधिकार जता सकता है किन्तु यदि इस सड़क पर भी, जहां गाड़ी चलाना तो दूर पैदल चलना मुश्किल होता है, उस पर यदि हेलमेट नहीं लगाया या यातायात नियम का कोई छोटा-से-छोटा नियम भी पालन नहीं किया तो सफ़ेद पोशाक वाले महाशय चालानी कार्यवाही के लिए तैयार खड़े रहते है। यदि चालान नहीं कटवाना है तब उनकी जेब में कुछ वजन डालकर आप निवृत हो सकते है।

हाँ रोड टेक्स तो आपको जीवनभर का ही जमा करना पड़ेगा, आप रोड का उपयोग करें या ना करें, आपकी मर्जी !

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कटाक्ष

सुधीर देशपांडे
लेखक व्यंग्यकार हैं

गिरने की महत्ता जानना हो तो गिर कर देखो

गिरना बुरा नहीं है। गिर गये तो क्या हुआ। पका फल ही गिरता है। बादलों से, झरनों से पानी गिरता है। ना गिरे... तो क्या होगा बताने की जरूरत नहीं है। जो गिरते हैं वही ऊपर उठते हैं। यदि यह कहें कि जो जितना अधिक गिरते हैं वे उतना ही ऊपर उठते हैं। पानी गिरा, नाली में बहा, नदी में पहुँचा फिर समुद्र तक गया। यह उसकी गिरने से लेकर समुद्र यानी विराट तक जाने की यात्रा है। गिरता भी है तो ऐसे ही नहीं गिरता। गिरकर फैलता भी है। फैलता है तो कोसी, गंडक, अलकनंदा हो जाता है, ब्रह्मपुत्र, चिनाब, झज्जर हो जाता है। तब वह किसी की नहीं सुनता। जब नहीं गिरता तब भी त्राहि-त्राहि मच जाती है। लोग कहते हैं 'बहुत हुआ, अब तो गिर।' गिरता है तो कितने ही लोगों का मकान और अरमान गिरा देता है। तो गिरो, हाँ

तासीर पानी जैसी हो। गिरकर मैला भी होता है तो थोड़ी देर बाद फिर साफ शफ्फाक नजर आता है।

कहते हैं जब फल अपने ही वजन को सह नहीं पाते तो गिर जाते हैं। यह वजन ऐसे नहीं बढ़ता। वे भी धरती का अन्न जल पाते हैं। पोषक तत्व उन्हें दूसरा ही देता है। जब तक दूसरों के संसाधनों से आप ताकत न ग्रहण करो, न आप पकते हो न भारी होते हो। न ही गिरते हो। आपके गिरते ही आपके मुरीद आप पर टूट पड़ते हैं। यह टूट पड़ना वैसा नहीं जिसमें हाथ पैर टूटने की नौबत आई हो। हाँ चतुर आदमी आपको चूस कर गुठलियाँ इधर उधर कर सकता है। इसमें भी बुराई नहीं। जब गुठलियाँ इधर उधर फेंकी जाती है तो सच मानों वंशवेल बढ़ती ही है। वैसे भी पर्यावरण के लिए इन गुठलियों की बहुत मांग है। गिरने को क्या नहीं गिरता? विमान गिरते हैं, पुल गिरते हैं, पुलों और पटरियों पर दौड़ती रेलगाड़ियां गिरती हैं, बसे गिरती हैं। शेयर बाजार को देखा है न। गिरा तो सम्हल भी जाता है। सम्हल कर उठता भी है और फिर धड़ाम हो जाता है। उसके हर गिरने में घाटा है तो हर उठने में लाभ भी है। देखो हर निवेशक कैसे टकटकी लगाए उसके इस कौतुक को देख रहा है। सच तो यह है कि ये सब गिर सकते हैं तो आदमी क्यों नहीं गिर सकता। जब आदमी ही गिर सकता है तो ये तो उसी के बनाए हैं, इन्हें तो गिरना ही चाहिए। गिरना असफलता नहीं है, यह तो ऊपर उठने की निशानी है, आदमी के। यही गिरा हुआ आदमी, कल को ऊपर उठकर देश का कर्णधार बनने का माद्दा रखता है। इस गिरे हुए आदमी की पहचान होनी ही चाहिए। कहते हैं गोबर गिरता है तो साथ में मिट्टी ही सही लेकर उठता है। तो गिरना व्यर्थ नहीं है। गिरने से लगने वाली चोट से डरने का कोई कारण नहीं है। इतना डरना भी क्यों? गिरे तो साष्टांग दंडवत है ही। यह दंडवत भी कमाल का है। यही दंडवत अगर सही जगह लग गई तो गिरने वाले के वारे न्यारे होना भी कठिन नहीं है।

अंतरिक्ष में भारत

प्रो. आरके जैन 'अरिजीत'

लेखक स्तंभकार हैं।

शुभांशु की उड़ान विज्ञान और विरासत की यात्रा

25 जून 2025 को, भारतीय समयानुसार दोपहर 12:01 बजे, फ्लोरिडा के केनेडी स्पेस सेंटर से स्पेसएक्स का फाल्कन-9 रॉकेट आकाश को चीरता हुआ अंतरिक्ष की ओर बढ़ा। ड्रैगन स्पेसक्राफ्ट में सवार थे भारतीय वायुसेना के शुभांशु शुक्ला, जो एक्सिओम-4 मिशन के पायलट की भूमिका में थे। उनके साथ थे कमांडर पैगी व्हिटसन (पूर्व नासा अंतरिक्ष यात्री, अमेरिका), मिशन विशेषज्ञ स्लावोश उज्नांस्की-विस्निव्स्की (पोलैंड), और तिबोर कपु (हंगरी)। यह मिशन नासा, एक्सिओम स्पेस और स्पेसएक्स की साझेदारी का प्रतीक है, जिसे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) का समर्थन प्राप्त है।

जब एक भारतीय ने सितारों को छू लिया, तो वह पल केवल अंतरिक्ष की यात्रा नहीं था–वह 140 करोड़ दिलों की धड़कनों का उत्सव था, भारत की आत्मा का उद्घोष था, और हमारी सांस्कृतिक विरासत का ब्रह्मांड में लहराता तिरंगा था। ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला ने जब ड्रैगन कैप्सूल से अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) की ओर कदम बढ़ाया, तो वह केवल एक अंतरिक्ष यात्री की उड़ान नहीं थी–वह भारत के सपनों, संकल्प और वैज्ञानिक शक्ति की अनंत यात्रा थी। यह वह क्षण था जब भारत ने न केवल धरती की सीमाएं लांघीं, बल्कि सितारों के पार अपनी पहचान को अमर कर दिया।

25 जून 2025 को, भारतीय समयानुसार दोपहर 12:01 बजे, फ्लोरिडा के केनेडी स्पेस सेंटर से स्पेसएक्स का फाल्कन-9 रॉकेट आकाश को चीरता हुआ अंतरिक्ष की ओर बढ़ा। ड्रैगन स्पेसक्राफ्ट में सवार थे भारतीय वायुसेना के शुभांशु शुक्ला, जो एक्सिओम-4 मिशन के पायलट की भूमिका में थे। उनके साथ थे कमांडर पैगी व्हिटसन (पूर्व नासा अंतरिक्ष यात्री, अमेरिका), मिशन विशेषज्ञ स्लावोश उज्नांस्की-विस्निव्स्की (पोलैंड), और तिबोर कपु (हंगरी)। यह मिशन नासा, एक्सिओम स्पेस और स्पेसएक्स की साझेदारी का प्रतीक है, जिसे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) का समर्थन प्राप्त है।

लॉन्च के महज 10 मिनट बाद, शुभांशु और उनकी टीम 7.5 किलोमीटर प्रति सेकंड की गति से पृथ्वी की परिक्रमा कर रहे थे। 28 घंटे की रोमांचक यात्रा के बाद, ड्रैगन कैप्सूल 26 जून 2025 को भारतीय समयानुसार शाम 4:30 बजे आईएसएस से डॉक करने वाला है। यह 14-दिवसीय मिशन 60 से अधिक वैज्ञानिक प्रयोगों का मंच है, जिनमें सात इसरो द्वारा डिजाइन किए गए हैं। ये प्रयोग भारत की वैज्ञानिक प्रगति को विश्व मंच पर चमकाने का अवसर हैं, जो न केवल तकनीकी उपलब्धि है, बल्कि भारत के भविष्य के अंतरिक्ष सपनों का आधार भी है।

शुभांशु की यह यात्रा 1984 में राकेश शर्मा की ऐतिहासिक सोवियत सैल्यूट-7 मिशन के बाद भारत की मानव अंतरिक्ष उड़ान में शानदार वापसी है। 41 साल बाद, शुभांशु आईएसएस पहुंचने वाले पहले भारतीय बनने जा रहे हैं, जो भारत के अंतरिक्ष इतिहास में स्वर्णिम स्याही से लिखा जाएगा। यह केवल एक व्यक्ति की उड़ान नहीं, बल्कि भारत की उस जिजीविषा का प्रतीक है, जो सीमाओं को तोड़कर अनंत की ओर बढ़ रही है।

इस मिशन की आत्मा भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत है। शुभांशु ने अपने साथ एक सॉफ्ट टॉय हंस लिया, जिसे भारतीय शास्त्रों में ज्ञान और विवेक का प्रतीक माना जाता है। यह हंस अंतरिक्ष की अनंतता में तैर रहा है, जैसे भारत की सांस्कृतिक विरासत सितारों के बीच अपनी चमक बिखेर रही हो। लॉन्च के दौरान, उनके कंधे पर लहराता तिरंगा केवल एक ध्वज नहीं था–वह 140 करोड़ भारतीयों की आकांक्षाओं, गर्व और एकता का प्रतीक था। यह तिरंगा गर्व से कह रहा था कि यह उड़ान केवल शुभांशु की नहीं, बल्कि हर उस भारतीय की है, जो खेतों से लेकर प्रयोगशालाओं तक, सपनों को हकीकत में बदल रहा है।

शुभांशु ने भारतीय खान-पान को भी अंतरिक्ष की ऊंचाइयों तक पहुंचाया। आम का रस, गाजर का हलवा और मूंग दाल का हलवा उनके साथ गए, जो वे अपने साथी अंतरिक्ष यात्रियों के साथ साझा करेंगे। इसके अलावा, वे माइक्रोग्रैविटी में योग करने की योजना बना रहे हैं, जिससे भारतीय संस्कृति का वैश्विक मंच पर एक अनूठा प्रदर्शन होगा। यह वह क्षण है जब परंपरा और प्रौद्योगिकी ने एक-दूसरे का हाथ थामा, और भारत ने साबित कर दिया कि वह न केवल विज्ञान में, बल्कि संस्कृति में भी अग्रणी है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, यह मिशन भारत के लिए एक मील का पत्थर है। शुभांशु सात भारतीय प्रयोग करेंगे, जिनमें माइक्रोग्रैविटी में मूंग और मेथी के अंकुरण का अध्ययन और मांसपेशियों की हानि का विश्लेषण शामिल है। ये प्रयोग भारत और अमेरिका की साझेदारी का परिणाम हैं और इसरो के महत्वाकांक्षी गगनयान मिशन के लिए महत्वपूर्ण अनुभव प्रदान करेंगे। गगनयान, जो 2026 में लॉन्च होने वाला है, भारत का पहला स्वदेशी मानवयुक्त अंतरिक्ष मिशन होगा। शुभांशु, जो इसके लिए चुने गए चार अंतरिक्ष यात्रियों में से एक हैं, इस मिशन के लिए अमूल्य अनुभव ला रहे हैं। कुल 60 से अधिक प्रयोग, जिनमें सामग्री विज्ञान, जैविक अनुसंधान और मानव स्वास्थ्य पर माइक्रोग्रैविटी के प्रभाव शामिल हैं, भारत के भविष्य के मिशनों–जैसे 2035 तक स्वदेशी अंतरिक्ष स्टेशन और 2040 तक चंद्रमा पर भारतीय अंतरिक्ष यात्री भेजने–के लिए नींव रखेंगे।

यह यात्रा केवल अंतरिक्ष तक की उड़ान नहीं, बल्कि भारत की आत्मा का उत्सव है। यह वह क्षण है जब भारत ने साबित कर दिया कि वह न केवल धरती पर, बल्कि सितारों के बीच भी अपनी छाप छोड़ सकता है। शुभांशु की उड़ान लाखों युवाओं के लिए एक प्रेरणा है, जो अब सपने देखने से आगे बढ़कर उन्हें हकीकत में बदलने की हिम्मत रखते हैं। यह वह दस्तक है जो ब्रह्मांड के दरवाजे पर भारत की उपस्थिति को अमर कर रही है–न केवल एक यात्री के रूप में, बल्कि एक मार्गदर्शक के रूप में।

जब शुभांशु का ड्रैगन कैप्सूल सितारों के बीच तैर रहा है, तो वह केवल एक अंतरिक्ष यान नहीं है–वह भारत के सपनों का वह पंख है, जो अनंत आकाश में उड़ रहा है। यह न कोई अंत है, न कोई पड़ाव। यह तो एक नई शुरुआत है–उस भारत की, जो अब ब्रह्मांड की गहराइयों में अपनी कहानी लिख रहा है, और जिसकी गूंज सितारों से सितारों तक अनंत काल तक गूंजेगी। यह भारत का वह उद्घोष है, जो कहता है- 'हम आए हैं, और हम रहेंगे–धरती पर, आकाश में, और सितारों के पार!'

पंढरपुर वारी दिंडी यात्रा

अमित राव पवार

युवा लेखक

सामाजिक समरसता का वैश्विक आदर्श

बेहतर हो यदि विभिन्न प्रकाशन एवं प्रसारण संस्थान उनके माध्यम से उठाई गई समस्या के अंतिम निराकरण तक अलग-अलग स्तर पर सक्रिय भूमिका का निर्वहन करें। इस संदर्भ में और भी अधिक बेहतर तो यह हो कि किसी समस्या के प्रकाशन या प्रसारण के पीछे मूल जनभावना के अनुरूप निराकरण को मीडिया संस्थान द्वारा प्रतिष्ठा का प्रश्न मान लिया जाए। हालांकि व्यावहारिक तौर पर ऐसा होना थोड़ा बहुत जटिल हो सकता है, लेकिन मीडिया को उससे की गई जनअपेक्षा के अनुरूप ढालने की दिशा में यह कदम मिल का पत्थर सिद्ध होगा। अन्यथा केवल और केवल दर्द का इजहार, केवल दर्द का इजहार ही होगा - उसका उपचार नहीं हो सकेगा।

विश्व में भारत ही एकमात्र देश,जहां भिन्न-भिन्न जाति, संप्रदाय के लोग एक साथ मिलकर पर्व, उत्सव, त्यौहार,धार्मिक व सांस्कृतिक यात्राओं में सम्मिलित होते हैं हिंदूधर्म में सभी यात्राओं का अपना एक महत्व है जिसमें सैकड़ों से लेकर लाखों की संख्या में भक्त एक साथ सहभागी होते है।अनेक यात्राएं ऐसी है जो महीनों पूर्व से प्रारंभ होकर एक निश्चित दिन,समय, स्थान पर समापन की जाती है। यह यात्राएं लाखों भक्तों के बीच समय प्रबंधन के कार्यो को भी दर्शाती है। सावन मास में कावड़ यात्रा,बाबा रामदेवजी यात्रा,भगवान जगन्नाथ यात्रा या फिर हजारों वर्षों से चली आ रही विश्व को सामाजिक समरसता का सबसे बड़ा उदाहरण भारत की ओर से देने वाली 'पंढरपुर वारी दिंडी यात्रा' ही क्यों न हो। भारत राष्ट्र और हिन्दूधर्म के माध्यम से विश्व को सांस्कृतिक एवं धार्मिक दृष्टि से राष्ट्रीय एकता का इससे सुंदर उदाहरण कही ओर नही मिलता। मुगलकाल और ब्रिटिश शासन ने इस सामाजिक समरसता के भारत के भाव को तोड़ने का बहुत दुस्साहस किया किंतु यात्राएं इसका संदेश है कि हिंदुस्थान में चली आ रही अपनी हजारों वर्ष प्राचीन परंपरा में सब जातियों का समावेश भारत को मजबूत बनाता है।

पंढरपुर वारी जिसे पंढरपुर दिंडी यात्रा के नाम से भी जाना जाता है हजारों वर्ष पूर्व से आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परंपरा में महाराष्ट्र की एक वार्षिक तीर्थयात्रा है जिसमें लाखों भक्त पुरुष,

महिला और बच्चे भी सम्मिलित होते हैं। पंढरपुर नगर में भगवान विष्णु अपने ही एक विट्ठल रूप में देवी रुक्मिणी के साथ विराजित है। यह यात्रा भक्त का अपने इष्ट के प्रति अटूट प्रेम और विश्वास को दर्शाती है साथ ही साथ भक्तों का अपने ईश्वर विट्ठल व देवी रुक्मणी के प्रति आध्यात्मिकता जागृत व परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संबंध अनुभव करने का अवसर देती है। वारी महाराष्ट्र के अलग-अलग स्थान से भक्तों को एक साथ जोड़ती है जिसमें लाखों लोगों की विनम्रता से सेवा करने का समाज को अवसर प्रदान होता है। वारी (तीर्थ) कारी (करने वाला व्यक्ति) अर्थात 'वारकरी' का अर्थ 'तीर्थयात्री' से होता है। जो पंढरपुर विट्ठल निवास स्थान के वार्षिक तीर्थ यात्रा पर जाने वाले भक्तों को दर्शाता है। पंढरपुर वारी अर्थात् पंढरपुर की एक धार्मिक यात्रा मानी जाता है। भगवान विट्ठल के भक्त को वारकरी कहते हैं तथा इस संप्रदाय को वारकरी कहा जाता है।

6वीं सदी में संत पुंडलिक हुए,भगवान श्री कृष्ण के परम भक्त होने के साथ उन्हें अपना इष्टदेव मानते थे,जो अपने माता-पिता के लिए पूर्णतः समर्पित थे।इस भक्ति से प्रसन्न होकर एक दिन भगवान ने देवी रुकमणी के साथ उन्हें दर्शन दिये तब प्रभु ने स्नेह के स्वर से कहा,'पुंडलिक,हम तुम्हारा आतिथ्य स्वीकार करने आए हैं।' पुंडलिक ने उस ओर देखा और कहा,मैं माता-पिता की सेवा में व्यस्त हूँ,अतः आप इस ईंट पर खड़े होकर प्रतीक्षा कीजिए और वे पुनः सेवा में लग गए। भगवान ने अपने भक्त के कहेंनुसार पालन किया तथा कमर पर दोनों हाथ रख और पैरों को जोड़कर ईंट पर खड़े हो गए (मराठी में 'ईंट' को 'विट' कहा जाता है,ल अर्थात लयबध्य खड़े होना) ईंट पर खड़े होने के कारण श्री विट्ठल के विग्रह रूप में भगवान की लोकप्रियता हो चली। यही स्थान पुंडलिकपुर या पंढरपुर

कहलाया,जो महाराष्ट्र का सबसे प्रसिद्ध तीर्थ है। कुछ मान्यताओं के आधार पर भगवान विठ्ठल का काला रंग भक्तों के प्रति उनके प्रेम व समर्पण को दर्शाता है।

13वीं शताब्दी में संत ज्ञानेश्वर और संत नामदेव जैसे महान संतो ने वारकरी संप्रदाय को जन-जन तक पहुँचाया और पंढरपुर वारीयात्रा को एक संगठित स्वरूप प्रदान किया। बाद में संत एकनाथ और संत तुकाराम ने भी इस परंपरा को आगे बढ़ाया और भक्ति व सेवा का संदेश जनमानस में व्यापक रूप से प्रसारित किया। यह वारी आषाढ़ी एकादशी (आषाढ़ माह देवशयनी ग्यारस) के दिन महाराष्ट्र के पंढरपुर नगर में भगवान विट्ठल व रुक्मणी मंदिर में लाखों लोग अपने प्रिय विट्ठल-रुक्मिणी के प्रति आस्था को दर्शाते हुए मंदिर पहुँचकर दर्शन के साथ वार्षिक दिंडी का समापन करते। इस दौरान भक्त 21 दिनों में 250 किलोमीटर से भी अधिक की दूरी पैदल चलकर भजन,कीर्तन करते हुए तय करते है। वर्षभर में दो बार लाखों श्रद्धालु इस मंदिर में आषाढ़ी व कार्तिक माह एकादशी पर एकत्रित होते है।

अपने सम्पूर्ण जीवन मे संत तुकाराम और संत ज्ञानेश्वर कभी भी वारी से न चुके। जब संत तुकाराम वृद्ध अवस्था मे थे और वारी में जाने में असमर्थ हुए तब प्रत्यक्ष पांडुरंग विट्ठल उनके निवास पर पहुँचे,यह ताकत और भक्ति इस वारी की जो ईश्वर व भक्त के बीच प्रेम को प्रमाणित करती है। आज भी लाखों लोगों का एक साथ सम्मलित होना किंतु निमंत्रण किसी का किसी को नही होता,असंख्य लोगो का एकत्रित होना पर भूखा कोई नही रहता,90 वर्ष का आयु वाला वृद्ध भी मुस्कुराते हुए उत्साहपूर्वक इस वारी में भाग लेता है- यह नजारा इस यात्रा की भक्ति-भावना और सामूहिक ऊर्जा का प्रतीक होने के साथ ही विठ्ठल का अपने भक्तों के प्रति सीधा-सीधा प्रमाण है।भक्त को धूप,पानी,हवा की फिक्र या चिंता नही,चिंता है तो बस एक ही धुन की,जय श्री हरि विठ्ठल,जय जय राम कृष्ण हरि,विठ्ठल विठ्ठल। गिनीज बुक रिकॉर्ड में इस वारी का वर्णन है। सिंहस्थ हर 12 वर्ष में लगने वाला विश्व का सबसे बड़ा मेला है परंतु वारी मेला हर वर्ष लाखों लोगों के द्वारा पंढरपुर में दिखाई देता है। यह वारी केवल एक तीर्थ यात्रा नही बल्कि निःस्वार्थ भक्ति,सामाजिक समरसता और भारत की संत परंपरा की जींवत गाथा है।

लैंगिक समानता

प्रियंका सौरभ

लेखक शोधार्थी हैं।

भारत की गिरावट एक चिंताजनक संकेत

वैश्विक लैंगिक अंतर सूचकांक (ग्लोबल जेंडर गैप इंडेक्स), जिसे 2006 में शुरू किया गया था, चार प्रमुख क्षेत्रों में पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता को मापता है—आर्थिक भागीदारी, शिक्षा, स्वास्थ्य और राजनीतिक सशक्तिकरण। भारत का कुल स्कोर 64.1 प्रतिशत है, जो वैश्विक औसत 68.5 प्रतिशत से काफी कम है। यही नहीं, दक्षिण एशिया में भी भारत बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका और भूटान जैसे पड़ोसी देशों से पीछे है।

विश्व आर्थिक मंच (वर्ल्ड इकनॉमिक फोरम) की वैश्विक लैंगिक अंतर रिपोर्ट 2024 में भारत को 148 देशों में 131वाँ स्थान प्राप्त हुआ है। यह न केवल दो पायदान की गिरावट है, बल्कि भारत की विकास यात्रा में छुपी उस असमानता का पर्दाफाश भी करती है जिसे हम अक्सर नजरअंदाज कर देते हैं। जब पूरी दुनिया लैंगिक असमानता को घटाने में धीमी किंतु स्थिर प्रगति कर रही है, तब भारत का पिछड़ना केवल एक आंकड़ा नहीं, बल्कि नीति, सोच और संस्थागत व्यवस्था की विफलता का प्रतिबिंब है।

वैश्विक लैंगिक अंतर सूचकांक (ग्लोबल जेंडर गैप इंडेक्स), जिसे 2006 में शुरू किया गया था, चार प्रमुख क्षेत्रों में पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता को मापता है–आर्थिक भागीदारी, शिक्षा, स्वास्थ्य और राजनीतिक सशक्तिकरण। भारत का कुल स्कोर 64.1 प्रतिशतहै, जो वैश्विक औसत 68.5 प्रतिशत से काफी कम है। यही नहीं, दक्षिण एशिया में भी भारत बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका और भूटान जैसे पड़ोसी देशों से पीछे है।

आर्थिक भागीदारी के क्षेत्र में भारत ने मामूली सुधार किया है, लेकिन महिलाओं की श्रम भागीदारी दर अभी भी 45.9 प्रतिशत पर अटकी हुई है। महिलाएँ मुख्यतः देखभाल, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे कम वेतन वाले क्षेत्रों में केंद्रित हैं। घरेलू और अवैतनिक श्रम, जो देश की असंगठित अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, अभी तक किसी राष्ट्रीय लेखांकन में शामिल नहीं किया गया है। महिलाओं को पुरुषों की तुलना में समान कार्य के लिए 20-30 प्रतिशत कम वेतन प्राप्त होता है। यह आर्थिक असमानता केवल आँकड़ों की नहीं, सोच की समस्या है।

शिक्षा के क्षेत्र में कुछ प्रगति तो हुई है, परंतु महिला साक्षरता दर अभी भी लगभग 70 प्रतिशत है, जो वैश्विक औसत 87 प्रतिशत से बहुत कम है। उच्च शिक्षा, विशेषकर विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अभियांत्रिकी और गणित (एसटीईएम) क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी बहुत कम है। ग्रामीण क्षेत्रों, आदिवासी इलाकों और निम्नवर्गीय परिवारों की लड़कियों को शिक्षा से वंचित करने वाली सामाजिक बाधाएँ–जैसे बाल विवाह, रुढ़िवादी सोच और विद्यालयों की दूरी–अब भी मौजूद हैं।

स्वास्थ्य और जीवन प्रत्याशा के पैमाने पर भी भारत पिछड़ा हुआ है। जन्म के समय लिंग अनुपात अब भी 929 लड़कियाँ प्रति 1000 लड़कों के आसपास है। मातृत्व से जुड़ी समस्याएँ, कुपोषण, रक्ताल्पता (एनीमिया), और प्रसवकालीन स्वास्थ्य सेवाओं की कमी, विशेषकर ग्रामीण महिलाओं को गंभीर रूप से प्रभावित करती हैं। घर की चारदीवारी में महिलाओं की सेहत को प्राथमिकता न मिलना हमारी पारिवारिक व्यवस्था की कमजोरी है।

राजनीतिक सशक्तिकरण के क्षेत्र में भारत की स्थिति अत्यंत चिंताजनक है। संसद में महिलाओं का प्रतिनिधित्व घटकर 13.8 प्रतिशत रह गया है और केंद्रीय मंत्रिमंडल में केवल 5.6 प्रतिशत महिलाएँ हैं। यह तब और विडंबनापूर्ण हो जाता है जब हम जानते हैं कि महिला आरक्षण विधेयक 2023 पारित हो चुका है, परंतु जनगणना और निर्वाचन क्षेत्र पुनःनिर्धारण की प्रक्रिया के विलंब के कारण उसका क्रियान्वयन अटका हुआ है। इससे स्पष्ट होता है कि केवल कानून पारित करना पर्याप्त नहीं, उन्हें लागू करने की इच्छाशक्ति भी आवश्यक है।

भारत को अपने पड़ोसी देशों से बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता है। बांग्लादेश जैसे देश ने सूक्ष्म वित्त, महिला शिक्षा प्रोत्साहन, और निरंतर राजनीतिक भागीदारी जैसे उपायों से सकारात्मक सुधार किए हैं। नेपाल में संविधान द्वारा स्थानीय निकायों में महिलाओं की अनिवार्य भागीदारी सुनिश्चित की गई है। चौंकाने वाली बात यह है कि कई निम्न आय वाले देशों ने धनी देशों की तुलना में लैंगिक समानता में अधिक तेजी से प्रगति की है, जो यह दर्शाता है कि बदलाव के लिए धन नहीं, दृढ़ नीयत चाहिए।

लैंगिक समानता केवल एक सामाजिक उद्देश्य नहीं, भारत की आर्थिक प्रगति के लिए भी अनिवार्य है। मैकिंज़ी ग्लोबल संस्थान का अनुमान है कि यदि भारत कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाता है, तो 2025 तक अपनी सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 700 अरब डॉलर तक की वृद्धि कर सकता है। शिक्षा, स्वास्थ्य और शासन में महिलाओं की भागीदारी से सामाजिक परिणाम भी अधिक न्यायसंगत और समावेशी होते हैं। भारत की जनसांख्यिकीय क्षमता तभी सार्थक होगी, जब उसमें महिलाओं की पूरी और समान भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी।

किन्तु चुनौतियाँ गहरी हैं। पितृसत्तात्मक सामाजिक मूल्य, कार्यस्थलों और सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं के लिए सुरक्षा की कमी, डिजिटल उपकरणों तक सीमित पहुँच और नीतियों के क्रियान्वयन में ढिलाई–ये सभी मिलकर लैंगिक असमानता को टिकाऊ बना रहे हैं।

अब समय आ गया है कि भारत केवल योजना बनाने तक सीमित न रहे, बल्कि उन्हें ज़मीन पर उतारे। महिला आरक्षण विधेयक को लागू करने हेतु जनगणना और निर्वाचन क्षेत्र परिसीमन प्रक्रिया को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। घरेलू और अवैतनिक श्रम को राष्ट्रीय आर्थिक लेखा-जोखा में शामिल कर उसे सम्मान और सामाजिक सुरक्षा दी जानी चाहिए। महिलाओं के लिए लचीले और सुरक्षित कार्यस्थलों की व्यवस्था की जाए, विशेषकर ग्रामीण एवं अर्ध-नगरीय क्षेत्रों में।

निजी क्षेत्र में महिलाओं के नेतृत्व को बढ़ावा देने के लिए कंपनियों में महिला निदेशक की अनिवार्यता हो। विज्ञान, राजनीति और उद्यमिता में महिलाओं के लिए परामर्श (मेंटॉरशिप) कार्यक्रम चलाए जाएँ। डिजिटल विभाजन को पाटने के लिए महिलाओं को सस्ते मोबाइल व इंटरनेट सेवाएँ उपलब्ध कराई जाएँ, और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों को पंचायत स्तर तक पहुँचाया जाए।

हर योजना और सर्वेक्षण में लैंगिक रूप से अलग आँकड़े संकलित करना अनिवार्य हो ताकि राज्य और जिले स्तर पर प्रगति की निगरानी की जा सके और नीति निर्माण अधिक लक्षित हो सके।

भारत की लैंगिक समानता में यह गिरावट केवल एक आँकड़ा नहीं, बल्कि एक चेतावनी है–कि हमने विकास की दौड़ में आधी आबादी को पीछे छोड़ दिया है। यह भूल केवल सामाजिक न्याय की नहीं, बल्कि राष्ट्रीय समृद्धि की भी कीमत वसूलती है।

समानता की राह लंबी है, पर असंभव नहीं। नीति बन चुकी है, दिशा स्पष्ट है, अब आवश्यकता है राजनीतिक संकल्प, सामाजिक सहमति और संस्थागत क्रियान्वयन की। जब तक भारत अपनी आधी आबादी को बराबरी का स्थान नहीं देगा, तब तक 'विकसित राष्ट्र' का सपना अधूरा रहेगा।

जर्जर भवनों को गिराने नहीं हुई कार्यवाही, आबादी क्षेत्र होने से हादसे का खतरा

नपा ने 33 भवनों को किया था चिन्हित, डिसमेंटल सिर्फ 7

बैतूल। जिले में मानसून दस्तक दे चुका है। पिछले तीन-चार दिनों से लगातार बारिश भी हो रही है। ऐसे में जर्जर भवन और इमारतों से एक बार फिर खतरा मंडराने लगा है, क्योंकि यह जर्जर भवन घनी आबादी क्षेत्रों में हैं और अगर बारिश के कारण यह भवन या भवनों की दीवारे गिरी तो गंभीर हादसा हो सकता है। लेकिन ऐसे भवनों को डिस्मेंटल करने में प्रशासन द्वारा लापरवाही बरती जा रही है। पिछले साल जिन जर्जर भवनों और इमारतों को डिस्मेंटल करने के निर्देश कलेक्टर ने जारी किए थे, वे आज भी खड़े हैं। बता दे कि नगरपालिका ने बैतूल शहरी क्षेत्र में पिछले साल कुल 33 जर्जर भवन चिन्हित किए थे। इनमें से करीब 5 भवनों को नपा ने डिसमेंटल कर दिया था, वहीं 2 लोगों ने स्वयं ही भवन गिरा दिये थे। शेष भवन अभी भी जर्जर हालत में मौजूद हैं। इस साल नपा द्वारा शहरी क्षेत्र में जर्जर भवनों को चिन्हित किए जाने के लिए सर्वे भी कराया जा रहा है। नपा के कर्मचारी वार्डो में भ्रमण कर जर्जर भवन चिन्हित कर रहे हैं। गौरतलब है कि नपा द्वारा हर साल जर्जर भवनों को लेकर नोटिस जारी किया जाता हैं, लेकिन भवन स्वामी द्वारा भवनों का डिसमेंटल नहीं किया जा रहा है जबकि जर्जर भवनों के गिरने से हमेशा हादसे का अंदेशा बना रहता है।

कई भवनों की मियाद हो चुकी है खत्म- शहर के कई इलाकों में जर्जर भवन खड़े है। इन भवनों के निर्माण को 60 साल से अधिक का समय बीत चुका है। भवनों की दीवारें कमजोर हो चुकी है। इन जर्जर भवनों की हालत ऐसी है, जिसे देखकर ही डर लगता है। उनकी छत और बरामदे की ईंट टूटकर नीचे गिर रही हैं। दीवारें फट चुकी हैं। ऐसे भवन कभी भी धराशायी हो सकते हैं। बावजूद इसके बेफिक्र होकर निहित स्वार्थों में कुछ लोग इन्हें ही ठिकाना बनाए हुए है। किसी ने इन भवनों में अपना आशियाना बना रखा है तो कहीं दुकान संचालित हो रही है। कोई जर्जर हिस्से को ढक कर उसमें रह रहा है। लेकिन इसके बाद भी नगरपालिका केवल नोटिस ही जारी कर रही है, कार्यवाही नहीं हो रही है। कार्यवाही के अभाव में जर्जर भवन यथावत खड़े है और दूसरों के लिए भी हादसों का सबब बन सकते है।

नपा ने जारी किये थे नोटिस, कार्यवाही नहीं- नगरपालिका ने जर्जर और जीर्णशीर्ण हो चुके भवनों का सर्वे किया था और नोटिस दिये थे। नोटिस जारी करने के बाद नगरपालिका द्वारा फीडबैक तक नहीं लिया कि नोटिस के अनुसार भवन खाली किया भी है या नहीं? और नगरपालिका खुद कार्रवाई करना भूल गई। खास बात यह है कि अधिकांश भवन ऐसे लोगों के नाम पर दर्ज है, जो इन मकानों में रहते नहीं है और घर में ताला लगाकर चले गये है। कुछ जर्जर मकान तो ऐसे लोगों के नाम पर है, जिनकी मृत्यु हो चुकी है और उनके परिजन भी मकान खाली करके चले गये है। ऐसे लोगों ने सालों से नपा का टैक्स भी जमा नहीं किया है। इन मकानों ने नपा ने नोटिस चस्पा कर अपने कार्य की इतिश्री कर ली।

जर्जर घोषित कॉम्प्लेक्स में चल रही दुकानें- सदर क्षेत्र में नगरपालिका के दो मंजिला कॉम्प्लेक्स को प्रशासन द्वारा जर्जर घोषित किया जा चुका हैं, लेकिन इसके बाद भी कॉम्प्लेक्स में दुकानों का संचालन किया जा रहा है। ऊपरी मंजिल पूरी तरह से जर्जर होने पर किसी भी प्रकार की गतिविधियां संचालित नहीं हो रही है। नगरपालिका ने पिछले साल बारिश के पूर्व बिल्डिंग को खाली करने कॉम्प्लेक्स के दुकानदारों को नोटिस जारी किए थे, लेकिन दुकानदारों ने आज तक दुकानें खाली नहीं की है। जिसके कारण इस बिल्डिंग को डिस्मेंटल करने की प्रक्रिया कागजों में है। बताया गया कि बिल्डिंग की हालत काफी कमजोर हो चुकी हैं। इस क्षेत्र में सप्ताह में दो बार साप्ताहिक बाजार भी लगता है और काफी भीड़ रहती हैं। ऐसे में बिल्डिंग आमजन के लिए खतरा साबित हो सकती है।

इनका कहना है -

नगरपालिका ने 33 जर्जर भवनों को चिन्हित किया था। इसमें से 5 भवनों को विगत वर्ष ही डिसमेंटल कर दिया था, 2 भवनों को भवन मालिकों ने स्वयं गिरा दिये। कुछ भवनों को लेकर न्यायालय में प्रकरण विचाराधीन है। जिसके कारण इन भवनों को डिसमेंटल नहीं किया जा सका है। कुछ भवनों में ताले लगे होने से नोटिस दरवाजे पर चस्पा किये है। अभी भी जर्जर भवनों का सर्वे चल रहा है।

- नीरज धुर्वे,
एई, नगरपालिका बैतूल

मोक्षा डागा ने कैम्ब्रिज परीक्षा में रोशन किया देश का नाम

सतपुड़ा वैली स्कूल के विद्यार्थियों ने कैम्ब्रिज चेकपॉइंट में हासिल की अभूतपूर्व सफलता

बैतूल। मई-जून 2025 में आयोजित कैम्ब्रिज लोअर सेकेंडरी चेकपॉइंट परीक्षा में सतपुड़ा वैली स्कूल की प्रतिभाशाली छात्रा मोक्षा डागा ने असाधारण प्रदर्शन कर जिले का ही नहीं, पूरे देश का नाम रोशन किया है। मोक्षा ने गणित में पूर्णांक 50 में से 50 अंक, अंग्रेजी द्वितीय भाषा में 48 अंक और विज्ञान में 47 अंक प्राप्त किए। इसी के साथ कैम्ब्रिज प्राइमरी चेकपॉइंट परीक्षा में भी सतपुड़ा वैली स्कूल के विद्यार्थियों ने शानदार प्रदर्शन किया। स्कूल की डायरेक्टर दीपाली निलय डागा ने परीक्षा में उत्कृष्ट अंक लाने वाले विद्यार्थियों को बधाई देते कहा कि यह विद्यार्थियों की मेहनत, समर्पण और विद्यालय की विश्वस्तरीय शिक्षा प्रणाली का नतीजा है। उन्होंने कहा कि हमें गर्व है कि हमारे विद्यार्थी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे हैं। स्कूल मैनेजर शिवशंकर मालवीय ने बताया कि सतपुड़ा वैली स्कूल में कैम्ब्रिज पाथवे के अंतर्गत विद्यार्थियों को वैश्विक स्तर की शिक्षा दी जा रही है, जो उन्हें जीवन में हर चुनौती के लिए तैयार करती है। प्राइमरी चेकपॉइंट परीक्षा में भी कई विद्यार्थियों ने विषयगत उत्कृष्टता दिखाई। देवेशी मालविया ने गणित में 47, विज्ञान में 46 और अंग्रेजी द्वितीय भाषा में 43 अंक प्राप्त किए। बतूल नाज़ ने गणित में 50 में से 50 अंक, अंग्रेजी में 41 और विज्ञान में 40 अंक लाकर सभी को गर्वित किया। आर्या दुबे ने गणित में 50 और विज्ञान में 41 अंक प्राप्त किए, वहीं हितिक्षा पटेल ने अंग्रेजी द्वितीय भाषा में 47 अंकों के साथ शानदार प्रदर्शन किया। रव्या महाजन ने गणित में 46 अंक, जबकि अंग्रेजी और विज्ञान में अच्छे अंक प्राप्त किए। आन्या मालवीय, सूरज प्रताप यादव, निकुंज अग्रवाल और उत्कर्ष अग्रवाल ने भी सभी विषयों में अच्छा प्रदर्शन कर नाम रोशन किया। विद्यालय प्रबंधन और शिक्षकों ने विद्यार्थियों की इस सफलता को सामूहिक प्रयास का नतीजा बताया और कहा कि यह विद्यार्थियों की मेहनत, शिक्षकों के मार्गदर्शन और अभिभावकों के सहयोग का ही परिणाम है कि सतपुड़ा वैली स्कूल, हर वर्ष शिक्षा के क्षेत्र में नई ऊंचाइयां को छू रहा है। डायरेक्टर दीपाली निलय डागा ने सभी विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों को शुभकामनाएं दीं और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

चोरी की पल्सर के साथ दो आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। कोतवाली पुलिस ने चोरी की पल्सर बाइक के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। फरियादी गौरव पिता मुरलीश्याम नागले (25 वर्ष) निवासी भीमनगर बडोरा ने रिपोर्ट दर्ज कराई गई कि उसकी पल्सर मोटरसाइकिल (एमपी 48 जेडई 3385) को ग्राम जाखली स्थित सुनिल कुमरे के खेत

से अज्ञात व्यक्ति द्वारा चोरी कर लिया गया है। रिपोर्ट पर थाना कोतवाली में अपराध धारा 305-बी भारतीय न्याय संहिता के तहत प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। कोतवाली पुलिस ने घटनास्थल के आसपास पूछताछ एवं शहर तथा आसपास के क्षेत्रों में लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज का गहन विश्लेषण किया गया। इसी दौरान मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई कि दो युवक बिना नंबर प्लेट वाली पल्सर मोटर सायकल चला रहे हैं तथा उसे बेचने की फिराक में हैं। मुखबिर द्वारा बताए गए स्थान से दोनों संदिग्ध राजकुमार उर्फ कंटर पिता जगदीश यादव, निवासी ग्राम रावनवाड़ी और विजय उर्फ डंपर पिता संतोष यादव, निवासी ग्राम रावनवाड़ी को घेराबंदी कर पकड़ा गया तथा पूछताछ में उन्होंने मोटर सायकल चोरी करना स्वीकार किया। उक्त दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया गया। इस कार्यवाही में निरीक्षक रविकांत डेहरिया, उप निरीक्षक बसंत आहके, सहायक उप निरीक्षक जगदीश रैकवार, आरक्षक दिनेश धुर्वे, सैनिक ईश्वर सिंह की सराहनीय भूमिका रही।

चिचोली पोषण केंद्र केयर टेकर को ट्रक ने कुचला, मौत

बैतूल। शुक्रवार सुबह ट्रक की चपेट में आने से पोषण केंद्र की केयरटेकर की मौत हो गई। वहीं बेटा छिटककर दूर जा गिरा, जिससे उसकी जान बच गई। घटना के बाद पुलिस ने ट्रक को जब्त कर लिया है और चालक की तलाश कर रही है। जानकारी के अनुसार रजनी गंगारे (35) घटना के समय स्कूटी से अपने 10 साल के बेटे के साथ जोगली से चिचोली स्थित

एनआरसी कार्यालय जा रही थीं। तभी स्पीड ब्रेकर आने पर उन्होंने अपनी स्कूटी धीरे की। इसी दौरान पीछे से आ रहे सीमेंट से भरे ट्रक ने उन्हें टक्कर मार दी, जिससे उनकी स्कूटी बेकाबू हो गिर गई। इसके बाद उनके ऊपर से ट्रक निकल गया और रजनी की मौके पर ही मौत हो गई और बेटा छिटककर दूर जा गिरा। बता दें कि रजनी साल 2010 से पोषण केंद्र में कार्यरत थीं। उनके पति चिचोली में स्टेशनरी की दुकान चलाते हैं। टीआई हरिओम पटेल के अनुसार, रजनी ने स्पीड ब्रेकर पर ब्रेक लगाया। इसी दौरान पीछे से आ रहे ट्रक ने उन्हें टक्कर मार दी। ट्रक चालक मौके से फरार हो गया। पुलिस ने ट्रक को जब्त कर लिया है और चालक की तलाश कर रही है।

भगवान भक्तों से जात-पात का भेदभाव नहीं करते : वैष्णवाचार्य डॉ. विश्वामित्र शरण

पुरी की तर्ज पर जनदर्शन को निकले जगन्नाथ

बैतूल/मुलताई। पवित्र नगरी मुलताई के ताप्ती तट पर गायत्री मंदिर में हो रही ताप्ती महिमा कथा के दूसरे दिन कथावाचक वैष्णवाचार्य डॉ. विश्वामित्र शरण गोवर्धन मथुरा ने अपने प्रवचन में भगवान जगन्नाथ से जुड़ी कई कथाओं का वर्णन करते हुए बताया कि भगवान अपने भक्त की ना तो जाती देखते हैं, ना कुल देखते हैं, ना धन देखते हैं, ना पद देखते हैं और ना ही रूप देखते हैं, भगवान तो अपने भक्तों के केवल हृदय के भाव देखते हैं। उन्होंने संत रविदास और करणी माता की कथा का वर्णन करते हुए भगवान और भक्ति के बीच के संबंध के माध्यम से जात-पात के भेदभाव को दूर कर आपस में प्रेम भाव बढ़ाने का संदेश दिया। मां ताप्ती को सूर्यपुत्र कहा जाता है जिससे चलते आज वैष्णवाचार्य डॉ विश्वामित्र शरण ने अपने प्रवचन में भगवान सूर्य की उत्पत्ति,भगवान सूर्य के माता-पिता के संबंध में विस्तार से बताया। ताप्ती तट पर विगत 30 वर्षों से निरंतर हो रही ताप्ती महिमा कथा का आयोजन मां ताप्ती महिमा कथा आयोजन समिति द्वारा किया जाता है। गायत्री परिवार सहित अनेक धार्मिक संगठन इसकी व्यवस्था संभालते हैं। ताप्ती महिमा कथा से जुड़े श्रद्धालुओं को वर्ष भर कथा का इंतजार रहता है और कथा प्रारंभ होते ही दूर-दूर से लोग ताप्ती कथा सुनने ताप्ती तट पहुंचाते हैं।

जनदर्शन देने निकले भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा- मुलताई जगन्नाथ पुरी की तर्ज पर ताप्ती तट पर स्थित जगदीश मंदिर से भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा निकाली गई। जगदीश मंदिर के समक्ष हजारों की संख्या में श्रद्धालु एक जुट हुए जहां महाआरती का आयोजन किया गया था आरती के उपरांत भगवान जगन्नाथ भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा को रथ में विराजमान किया गया। बारिश के बावजूद हजारों की संख्या में महिला पुरुष श्रद्धालु भगवान जगन्नाथ के रथ की रस्सियों को खींचकर आगे बढाते रहे। जगदीश मंदिर से निकलकर भगवान जगन्नाथ का रथ गांधी चौक, यादव प्रेस मार्ग से होता हुआ जगदीश मंदिर पहुंचा जहां इस यात्रा का समापन किया गया। मार्ग मे जगह-जगह भगवान जगन्नाथ एवं रथ यात्रियों में का स्वागत किया गया। जगह-जगह प्रसादी वितरण कर भगवान जगन्नाथ के रथ पर पुष्प वर्षा की गई ।

ताप्ती तीर्थ क्षेत्र न्यास का प्लास्टिक मुक्त अभियान- मां ताप्ती जन्मोत्सव सप्ताह के दूसरे दिन सूर्यपुत्री मां ताप्ती तीर्थ क्षेत्र न्यास के सदस्यों ने नगर में प्लास्टिक मुक्त अभियान चलाकर सैकड़ो घरों में प्लास्टिक की बोतल वितरण की जिसमें प्रत्येक घर के लोगों को कहां गया है कि वह प्लास्टिक की बोतल को ऊपर से काटकर इसमें घर में आने वाली प्रत्येक पानी को अच्छे से भरकर उन्हें लौटा दे ताकि ताप्ती क्षेत्र न्यास के सदस्य उस प्लास्टिक का उचित प्रबंध कर सके और इस प्रकार नगर प्लास्टिक मुक्त हो सके । इस अवसर पर ताप्ती तट की सफाई करने वाले सफाई कर्मियों का भी सम्मान किया गया। कार्यकर्ताओं ने लोगों से प्लास्टिक कचरे को खुले में न फेंकने का आग्रह किया। उन्होंने बताया कि हवा में उड़कर यह कचरा नगर की गलियों और नालियों में फैल जाता है।

जिले में जल जनित रोगों की रोकथाम के लिए जल स्त्रोतों का किया जा रहा क्लोरिनेशन

पीएचई विभाग ने जारी की एडवाइजरी

बैतूल। जिले में लगातार हो रही बारिश के कारण जल स्त्रोतों में गंदगी और प्रदूषण की आशंका बढ़ गई है। वर्षा काल में जल जनित रोगों की रोकथाम के लिए पीएचई विभाग ने एडवाइजरी जारी की है। जारी एडवाइजरी में लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खंड बैतूल कार्यपालन यंत्री ने बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों में इस समस्या को ध्यान में रखते हुए कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देश पर लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा व्यापक स्तर पर जल स्त्रोतों के शुद्धिकरण का कार्य किया जा रहा है। विभाग की टीम ग्रामीण इलाकों में जाकर हैंडपंप, ट्यूबवेल, कुएं, जल टंकियों आदि का क्लोरिनेशन कर रही है, ताकि पेयजल दूषित न हो और जल जनित बीमारियों से लोगों को बचाया जा सके। विभाग ने जनप्रतिनिधियों और ग्रामीण जनता से अपील की है कि वे अपने गांव के सभी पेयजल स्त्रोतों का क्लोरिनेशन जरूर कराएं और उनके आसपास सफाई व्यवस्था सुनिश्चित करें। साथ ही जल स्त्रोत जैसे ट्यूबवेल, हैंडपंप, कूप इत्यादि के आसपास वर्षा जल निकासी के लिए नाली अवश्य निर्माण कराएं, जल स्त्रोत के आसपास गंदगी नहीं हो यह भी सुनिश्चित किया जाए। अत्याधिक वर्षा की स्थिति में बाढ़ के पश्चात तुरंत जल स्त्रोत का क्लोरिनेशन कराए। घरेलु स्तर पर पीने के पानी के बर्तन में 1 मि.ग्रा./लीटर द्रव क्लोरीन का प्रयोग करें, क्लोरीन डालने के 1 घंटे बाद ही उस जल का प्रयोग करना है। सामान्यतः लगभग 15 लीटर वाले जल पात्र जैसे की प्लास्टिक की केन, स्टील की गुन्डी, बाल्टी का उपयोग किया जाता है। जिसमें क्लोरीन की बाटल की 10 बूंद पर्याप्त होती है, जिसको प्रतिदिन अपनी दिनचर्या में यह प्रक्रिया शामिल किया जाए। घरेलू उपचार जैसे डंडी वाले लोटे का प्रयोग, मटके-गुन्डी को ऊंचाई पर रखना, घरेलू स्तर पर वर्षा काल के प्रारंभिक समय में पेयजल को उबालना, छानना भी आवश्यक होने पर प्रयोग करें। ग्राम पंचायत एवं ग्राम स्तर पर पेयजल टंकी, सम्पवेल, ट्यूबवेल/वाल्व, पाइप लाइन की आवश्यकता अनुसार सफाई एवं मरम्मत अवश्य कराएं। जारी एडवाइजरी के अनुसार कृषि कार्य के लिए खेत पर जाने वाले समस्त ग्रामीणजन को सलाह दी गई है, कि वे सुरक्षित जल स्त्रोत से ही सुरक्षित बर्तन में सुरक्षित रूप से जल ग्रहण करें। इसके साथ ही पेयजल स्वच्छता, पेयजल गुणवत्ता के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए लोक स्वास्थ्य यांत्रिकीय विभाग के उपखंड/जिला मुख्यालय से सम्पर्क कर आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सकते है। साथ ही पेयजल के शुद्धीकरण के लिए द्रव क्लोरीन की उपलब्धता के लिए कंट्रोल रूम के दूरभाष क्रमांक 07141-238320 पर सम्पर्क कर सहायता प्राप्त की जा सकती है।

साहू समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष 29 जून को आएंगे बैतूल

बैतूल। अखिल भारतीय साहू वैश्य महासभा दिल्ली एवं युवा साहू समाज सेवा संगठन जिला बैतूल के तत्वावधान में युवा साहू समाज सेवा संगठन जिला बैतूल का रजत जयंती समारोह 29 जून रविवार को सुबह 10:30 से 3:30 बजे तक आयोजित किया जाएगा। आयोजन समिति प्रमुख गोपाल साहू ने बताया कि इस कार्यक्रम में अखिल भारतीय साहू वैश्य महासभा दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश कुमार साहू मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करेंगे। प्रहलाद साहू ने बताया कि इस समारोह मेंसंगठन का रजत जयंती समारोह धूमधाम से आयोजित किया जाएगा। सुबह 10:30 दीपक प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया जाएगा। इस अवसर पर साहू समाज की होना हर प्रतिभाओं का सम्मान, सामाजिक गतिविधियों में उत्कृष्ट योगदान देने वाले शिक्षकों का सम्मान, सामाजिक गतिविधियों में उत्कृष्ट योगदान देने वाले लोगों का सम्मान के अलावा सामाजिक बिंदुओं पर मंथन किया जाएगा। आयोजन समिति के कैलाश साहू ने बताया कि इस अवसर पर साहू समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा साहू समाज की अति गरीब और विधवा महिलाओं को सिलाई मशीन का वितरण किया जाएगा।

समन्वित प्रयासों से स्वास्थ्य संबंधी योजनाओं का प्रभावी और सफल क्रियान्वयन करें: कलेक्टर

कलेक्टर ने की स्वास्थ्य और महिला व बाल विकास विभाग की समीक्षा

बैतूल। कलेक्टर बैतूल नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने शुक्रवार को जिला पंचायत सभाकक्ष में स्वास्थ्य और महिला एवं बाल विकास विभाग अंतर्गत संचालित विभिन्न स्वास्थ्य योजनाओं की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने जिले में ब्लॉकवार शिशु मृत्यु दर और मातृ मृत्यु दर की जानकारी ली और इनमें कमी लाने के लिए विशेष प्रयास करने के निर्देश स्वास्थ्य और महिला एवं बाल विकास विभाग के मैदानी अधिकारियों को दिए। उन्होंने कहा कि गर्भवती माताओं का आशा और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के माध्यम से निरंतर फॉलोअप किया जाए। चिन्हित हाई रिस्क महिलाओं का सुरक्षित प्रसव किया जाना सुनिश्चित कराएं। जन सामान्य का विश्वास अर्जित कर स्वास्थ्य योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाएं। लापरवाही करने वाले अधिकारी कर्मचारी के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने कहा कि एकीकृत प्रयासों से शासन द्वारा संचालित समस्त स्वास्थ्य योजनाओं का प्रभावी और सफलतापूर्वक क्रियान्वन किया जाएं। सभी बीएमओ और सीडीपीओ अपने क्षेत्र में मातृ मृत्यु दर और शिशु मृत्यु दर में कमी लाने के लिए विशेष कार्य योजना बनाएं और उसका प्रभावी क्रियान्वयन कराएं। बीएमओ द्वारा बीपीएम, सीएचओ और एएनएम की हर तीन दिन के अंतराल में मॉनिटरिंग की जाए और अपेक्षित परिणामों को हासिल करें।

कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने निर्देशित किया कि मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी द्वारा भी हर 3 दिन में ब्लॉक मेडिकल ऑफिसर और ब्लॉक प्रोग्राम मैनेजर की समीक्षा की जाएं। इसी प्रकार जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास भी परियोजना अधिकारी, सुपरवाइजर एवं आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को दिए गए लक्ष्य के विरुद्ध प्रगति की समीक्षा करें।

बीएमओ के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई के निर्देश- स्वास्थ्य योजनाओं के क्रियान्वयन में असंतोषजनक कार्य और उदासीनता बरतने पर कलेक्टर ने मुलताई और प्रभात पट्टन के ब्लॉक मेडिकल ऑफिसर को कारण बताओं नोटिस जारी कर सभी वेतन वृद्धियां निरस्त कर मूल वेतन पर लाने की कार्यवाही करने के निर्देश दिए। उन्होंने टीबी उन्मूलन कार्यक्रम में भी असंतोषजनक कार्य पर भीमपुर बीएमओ को कारण बताओं नोटिस जाने करने के निर्देश मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को दिए।

राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम की समीक्षा- कलेक्टर ने बैठक में पोषण पुनर्वास केंद्रों के संचालन और राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम की ब्लॉकवार विस्तार से समीक्षा की। उन्होंने बेड ऑक्यूपेंसी में घोड़ाडोंगरी और भैंसदेही सीडीपीओ को विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए। इस प्रकार कलेक्टर ने अन्य स्वास्थ्य सबंधी योजनाओं के क्रियान्वयन की भी समीक्षा कर निर्धारित लक्ष्यों में शत प्रतिशत उपलब्धि हासिल करने के लिए निर्देशित किया।

आरबीएसके में स्क्रीनिंग बढ़ाएं- मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अक्षत जैन ने मातृ मृत्यु दर में कमी लाने के लिए व्यवस्थित कार्ययोजना बनाने और राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम में स्क्रीनिंग को बढ़ाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सभी बीएमओ अपने फील्ड स्टाफ पर प्रभावी नियंत्रण रखें और लक्ष्यों को हासिल करें। बैठक में सिविल सर्जन डॉ जगदीश घोरे सहित सभी बीएमओ, सीडीपीओ, बीपीएम और अन्य अधिकारी उपस्थित रहें।

वक्रोक्ति

पल्लवी सक्सेना

लेखक यूके निवासी साहित्यकार हैं।

ट्रेंड है जी ट्रेंड: हर चीज केवल ट्रेंड पर ही चलती है

ट्रेड ना हुआ जी का जंजाल हो गया। एक जमाना था जब लोगों की जिंदगी परम्परा, मान, प्रतिष्ठा, पर चला करती थी। समय बदला तो जीवन के मूल्यों पर चलने लगी फिर और समय बदला तो घर खर्च और आमदनी के हिसाब से चलने लगी। हर कोई अपनी आय के हिसाब से अपनी रुचि में परिवर्तन करके जीने लगा। अब जैसे कपड़ों और फैशन की ही बात लेलो, दादी नानी के जमाने में बच्चों के कपड़े घर में ही सिल दिए जाते थे। फिर भी यदि कभी कोई बच्चा किसी फ़िल्म में किसी हीरो या हेरोइन को देखकर उनके जैसे कपड़े पहनने की ज़िद करता। तब भी उसकी यह मांग या तो माँ की पुरानी साड़ियों को काट कर पूरी कर दी जाती या फिर थान में से कपड़ा लाकर घर में ही सिल दिया जाता। फिर सब एक जैसे नज़र आते थे। फिर यूँ भी होता था कि बड़े भाई बहनों के कपड़े आपके लिए संभालकर रख दिए जाते थे कि छोटे के काम आयेंगे।

हालाँकि उनके लिए भी वह कपड़े साल में केवल एक या दो बार ही बनवाये जाते थे। एक बार दिवाली पर और एक बार रक्षाबंधन के लिए। इसके अलावा पूरे साल कोई नये कपड़ों के लिए चूँ तक नहीं करता था। क्यों? क्यूंकि तब जीवन ट्रेंड पर नहीं बल्कि बाऊजी की आय के आधार पर चला करता था और एक आज का समय है, जहाँ हर चीज केवल 'ट्रेंड' पर ही चलती है। फिर चाहे वह भाषा हो या भोजन, गाने हो या भजन, कपड़े हों या फ़ैशन, लाली लिपिस्टिक हो या मंजन, कहने का अर्थ है सब इन 'सो कॉल्ड इंफ्लुएंजर' के मारे है। जिसको देखो बस रील बनाने में लगा है। भई कसम से 'इस रील के चक्कर में लोग रियल को भूल गए है'।

अब आप पूछेंगे क्यों? क्यूंकि आजकल यही ट्रेंड है। आज की तारीख में अब किसी से, किसी भी विषय में पूछ लीजिये कि आपने ऐसे बाल क्यों कटवाये या फिर आप यह क्रीम क्यों लगाते हो, या फिर आप ऐसी फटी हुई जींस क्यों पहनते हो, लड़के होकर मेकअप क्यों करते हो, आदि। इन सब सवालों का एक ही जवाब है 'आजकल यही ट्रेंड है' कमाल है नहीं! जितना जीवन सांसों पर नहीं चलता, आजकल उससे कहीं ज्यादा तो इंसान ट्रेंड्स पर चलने लगा है।

कई बार मुझे ऐसा लगता कि कहीं इसी ट्रेंड के चक्कर में लोग अपने बच्चों को अच्छे से अच्छे प्रतिशत लाने के लिए दबाव तो नहीं बनाते रहते है क्यूंकि आजकल 90 प्रतिशत से भी अधिक प्रतिशत लाने का ट्रेंड है। फिर चाहे उस चक्कर में बच्चा मानसिक रूप से बीमार ही क्यों ना पड़ जाये। उससे कम आये तो घोर बदनामी हो जाती है। नाते रिश्तेदारों में नाक कट जाती है। वैसे यहाँ शायद कहना तो नहीं चाहिए मगर मुझे तो कभी कभी यह आत्महत्या करने वाली वारदातें भी इन्हीं चल रहे ट्रेंडों का हिस्सा ही महसूस होती है। वरना आप ही जरा सोचिये, छिपकली और तिलचट्टे जैसे कीट पतंगों से डरने वाले यह मासूम किशोर व्यय बच्चे आत्महत्या जैसे जघन्य अपराध को इतनी आसानी से भला कैसे अंजाम दे बैठते है। यह मेरी समझ से बाहर की बात है।

खैर इस कोमल अवस्था में आजकल बच्चों के मन पर सबसे अधिक प्रभाव यदि किसी चीज का पड़ता है तो वह है सोशल मीडिया, या ओटीटी प्लेटफार्म, इसके अतिरिक्त आजकल किताबें तो कोई पढ़ता नहीं है क्यूंकि इसका कोई ट्रेंड जो नहीं है। किताबें तो क्या, आजकल तो समाचार पत्र पढ़ने का भी ट्रेंड नहीं है और ना किसी के पास समय है। यूँ भी हर एक खबर से क्या लेना देना है। मुख्य समाचार या फिर मसाले दार खबरें सोशल मिडिया के सभी प्लेटफॉर्म पर आही जाती है। सब कुछ तो आजकल केवल एक मोबाइल में सिमट कर रह गया है।

पहले ही यह सब कुछ कम नहीं था अभिभावकों के लिए के अब इस्ढ्ढ अर्थात 'कृतिम बुद्धिमत्ता' ने आकर और बवाल मचा के रखा है। जरा सी कमांड दो और तमाशा देखो। उदाहरण के लिए आप अपनी ही तस्वीर से खेलकर देखो। फिर यह आपको आपकी इतनी सुंदर तस्वीर दिखा देता है कि खुद की आँखों पर ही भरोसा नहीं होता कि इस तस्वीर में दिखायी देने वाले हम ही है। बस फिर आप उस तस्वीर जैसा दिखने के लिए शॉटकट ढूंढ़ ने लगते हो, पुराने समय को याद करते हुए आप फिर से पहले के जैसा दिखना चाहने लगते हो, लेकिन यह आप भी जानते हैं कि यह संभव नहीं क्यूंकि मेहनत कर के तो वैसा नतीजा पाने में सो साल लग जाने है। इतना तो किसी के पास ना तो समय है, ना सब्र।

तो बस सब मुंह उठाकर पहुँच जाते है (कॉस्मेटिक सर्जन) के पास (कॉस्मेटिक सर्जरी) करवाने। कोई नाक ठीक करना चाहता है, तो कोई आँख और इतना ही नहीं आजकल तो नया ट्रेंड आया 'बुटोक्स' कराने का जिसने अच्छी खासी एक से एक सुंदर पैसे वाली अभिनेत्रियों की सुंदरता की बैंड बजा दी। किसी के होंठ सूज गए, तो किसी के गाल फूल गए, किसी कि भवे जरूरत से ज्यादा तन गयी। तो किसी का कुछ हो गया। अब उनके पास तो पैसों की कोई कमी है नहीं तो उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता । लेकिन एक आम इंसान जब पैसा उधार लेकर ऐसा कोई कदम उठता है और फिर उसके साथ ऐसा कुछ हो जाता है तब वह बिचारा कहीं का नहीं रहता। जरा सोचिए जब इनका यह हाल हो गया तो फिर आम इंसान क्या चीज है। पैसा भी बर्बाद होता है और समय के साथ साथ सूरत भी, लेकिन किसी को कुछ बोलो तो मानेगा कोई नहीं, बस सारे यूँ कह देंगे ट्रेंड है जी ट्रेंड!

संक्षिप्त समाचार

स्वच्छ सर्वेक्षण ग्रामीण के तहत प्रशिक्षण सम्पन्न

हरदा (निप्र)। स्वच्छ सर्वेक्षण ग्रामीण 2025 के तहत् बुधवार को ग्रामीण क्षेत्रों में सर्वेक्षण कार्य के संबंध में जनपद पंचायत टिमरनी के सरपंच, सचिव, ग्राम रोजगार सहायक एवं उपयंत्रियों को जिला पंचायत हरदा के सभाकक्ष में प्रशिक्षण दिया गया। उल्लेखनीय है कि पेयजल एवं स्वच्छता विभाग जलशक्ति मंत्रालय भारत सरकार के द्वारा सर्वेक्षण का कार्य कराया जा रहा है, जिसमें राष्ट्रीय स्तर से चयनित एजेंसी ग्रामों में भ्रमण करके प्रत्यक्ष अवलोकन द्वारा सर्वेक्षण का कार्य करेंगी। सर्वे के दौरान एजेंसी ग्राम पंचायत भवन, शासकीय एवं निजी स्कूलों, स्वास्थ्य केन्द्रों, आंगनबाड़ी केन्द्रों, आश्रम छात्रावास, धार्मिक पर्यटन स्थल, सार्वजनिक स्थलों आदि का भ्रमण करेंगी तथा ग्राम पंचायत, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, आशा कार्यकर्ता, एएनएम, आश्रम के अधीक्षक, शाला के शिक्षक आदि से भी चर्चा करेंगी। प्रशिक्षण में बताया गया कि सर्वे के दौरान नागरिकों के फीडबैक दर्ज कराने के लिए प्ले-स्टोर में जाकर मोबाईल एप ''एसएसजी-2025'' डाउनलोड करने के बाद भाषा एवं जिले का चयन करके अपनी प्रतिक्रिया दर्ज कर सकते हैं। इसके लिए क्यू-आर कोड भी दिया गया है, जिसका उपयोग सिटीजन फीडबैक दर्ज करने में किया जा सकता है।

इछावर के स्कूलों में विधिक जागरूकता शिविर आयोजित

सीहोर (निप्र)। प्रधान जिला न्यायाधीश एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री प्रकाश चंद्र आर्य के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा इछावर स्थित शासकीय मॉडल स्कूल एवं शासकीय सांदीपनि स्कूल में विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। इस जागरूकता कार्यक्रम में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव श्रीमती स्वप्नश्री सिंह द्वारा महिलाओं एवं बच्चों से संबंधित कानूनी प्रावधानों, पॉक्सो अधिनियम, किशोर न्याय अधिनियम, गुड टच बेड टच, साथी अभियान, संवाद, जागृति, आशा एवं डॉन आदि गतिविधियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। इसके साथ ही निशुल्क विधिक सहायता एवं विधिक सलाह विधि के प्रावधानों का पालन करने संबंधी पॉश एक्ट के बारे में विस्तार से बताया गया। इस अवसर पर न्यायाधीश सुश्री श्वेता रघुवंशी, जिला विधिक सहायता अधिकारी श्री जीशान खान, शिक्षकगण एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के तहत गर्भवती महिलाओं को दी जा रही हैं निशुल्क स्वास्थ्य सेवाएं

सीहोर (निप्र)। प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के तहत जिले की गर्भवती महिलाओं को गर्भावस्था के दौरान प्रसव पूर्व देखभाल के लिये प्रत्येक माह की 09 एवं 25 तारीख को जिले के स्वास्थ्य केंद्रों पर देखभाल एवं स्वास्थ्य सेवाओं का निशुल्क लाभ प्रदान किया जा रहा है, ताकि गर्भावस्था और प्रसव के दौरान उनकी सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। अभियान के तहत 25 जून को जिले के सभी स्वास्थ्य केंद्रों पर 525 गर्भवती महिलाओं की स्वास्थ्य जांच की गई, जिसमें 186 गर्भवती महिलाएं हाई रिस्क पाई गईं। सीएमएचओ श्री सुधीर कुमार डेहरिया ने बताया कि इस अभियान का उद्देश्य संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देना हैं। इस योजना के तहत गर्भवती महिलाओं को निशुल्क जाँच, दवाएं, एवं परामर्श दिया जा रहा है। अभियान के तहत उच्च जोखिम वाली गर्भवती महिलाओं की पहचान एवं विशेष देखभाल की व्यवस्था की जा रही है। इसके तहत प्रसव के समय जटिल अवस्था में उच्च चिकित्सा केन्द्रो में रेफर किया जाता है।

एम्स भोपाल का पीएमआर विभाग बना दिव्यांगजनों और ट्रॉमा पीड़ितों के लिए आशा की नई किरण

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में फिजिकल मेडिसिन एंड रिहैबिलिटेशन (पीएमआर) विभाग दिव्यांगजनों, गंभीर रूप से घायल मरीजों और लंबे समय तक देखभाल की ज़रूरत वाले लोगों के लिए उम्मीद की एक नई किरण बनकर उभरा है। यह विभाग उन मरीजों के लिए भी उम्मीद बन गया है, जिन्होंने किसी बीमारी या दुर्घटना के कारण अपने हाथ या पैर खो दिए हैं। विभाग में रोज़ाना ओपीडी सेवाओं के साथ 26 बेड की आईपीडी सुविधा और एक आधुनिक ऑपरेशन थिएटर उपलब्ध है, जहाँ पुनर्वास सर्जरी की जाती है। यहां न्यूरोरिहैबिलिटेशन की सुविधा है, जो लकवे, रीढ़ की चोट, सिर की गंभीर चोट, नसों की कमजोरी और कंपन या चलने में कठिनाई जैसी समस्याओं से जूझ रहे मरीजों की मदद करता है। इसके अलावा, विभाग में सेरेब्रल पाल्सी, मांसपेशियों की कमजोरी (मस्कुलर डिस्ट्रॉफी) और रीढ़ की जन्मजात विकृति (मेनिंगोमायलोसील-) से पीड़ित बच्चों के लिए विशेष बाल पुनर्वास सेवाएं उपलब्ध हैं। वहीं, जो मरीज बीमारी या हादसे के चलते अपने अंग खो चुके हैं, उनके लिए अंग कटने के बाद की देखभाल, दर्द निवारण की विशेष तकनीकें और दिल व फेफड़ों से जुड़ी बीमारियों के बाद की पुनर्वास सेवाएं भी दी जा रही हैं। ये सुविधाएं मरीजों को फिर से आत्मनिर्भर जीवन जीने के लिए प्रेरित कर रही हैं। पीएमआर विभाग में एक अत्याधुनिक वर्कशॉप भी संचालित है, जहाँ कृत्रिम अंग और सहायक उपकरण तैयार किए जाते हैं। साथ ही, फिजिकल थेरेपी, ऑक्यूपेशनल थेरेपी और वोकेशनल काउंसलिंग जैसी सेवाएं मरीजों को न केवल शरीर से मज़बूत बनाती हैं, बल्कि उन्हें समाज में आत्मविश्वास और गरिमा के साथ जीवन जीने में सक्षम बनाती हैं। विभाग द्वारा तीन विशेष क्लीनिकों का संचालन किया जा रहा है, जो क्रमशः स्ट्रोक के बाद की देखभाल, सेरेब्रल पाल्सी से प्रभावित बच्चों के लिए पुनर्वास और मधुमेह या नसों की समस्याओं से पैरों में हुए घावों (न्यूरोपैथिक फुट अल्सर) के इलाज पर केंद्रित हैं। पीएमआर विभाग की भूमिका को रेखांकित करते हुए प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा, पीएमआर विभाग केवल एक सेवा केंद्र नहीं है, बल्कि यह करुणा, नवाचार और सशक्तिकरण का प्रतीक है। हमारा लक्ष्य यह है कि दिव्यांगजनों सहित हर ज़रूरतमंद को संपूर्ण और आधुनिक पुनर्वास सेवाएं उपलब्ध कराई जाएं, जिससे वे आत्मसम्मान और गुणवत्ता भरा जीवन जी सकें। हमें गर्व है कि हम ये सभी सेवाएं एक ही छत के नीचे उपलब्ध करा पा रहे हैं।

प्रकृति पुत्र राजा भभूत सिंह के अवदान पर सांगीतिक प्रस्तुति 29 को

भोपाल। जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय के सभागार में 29 जून रविवार को शाम 7:00 बजे कोरकू जनजाति के प्रकृति प्रेमी और वीर राजा भभूत सिंह के अवदान पर आधारित एक विशेष सांगीतिक प्रस्तुति एवं कोरकू जनजाति के गदली एवं थापटी नृत्य का आयोजन किया जा रहा है। यह आयोजन महाराजा विक्रमादित्यट शोधपीठ एवं मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय के संयुक्त तत्वावधान में किया जा रहा है।

महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ के निदेशक श्रीराम तिवारी ने कहा कि राजा भभूत सिंह कोरकू जनजाति के ऐसे नायक रहे हैं जिन्होंने अपने जीवन में प्रकृति और मानव के सहअस्तित्व को सर्वोच्च स्थान दिया। उनका पर्यावरण संरक्षण एवं ब्रिटिश उपनिवेशवाद के खिलाफ संघर्ष हमारे लिए प्रेरणा स्रोत है। प्रकृति पुत्र भभूत सिंह की स्मृति में उनके जीवन पर एकाग्र सांगीतिक प्रस्तुति का आयोजन भोपाल के मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय में किया जा रहा है। यह प्रस्तुति वरिष्ठ रंगकर्मी राजीव सिंह एवं दल द्वारा तैयार की गयी है। इस अवसर पर कोरकू जनजाति के गदली एवं थापटी नृत्य भी होगा। मुझे विश्वास है कि यह कार्यक्रम कोरकू परंपरा की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को जीवंत करेगा।

विंध्य क्षेत्र में हवाई सेवाओं के विस्तार के लिए उप मुख्यमंत्री शुक्ल और एलायंस एयर के अधिकारियों की महत्वपूर्ण बैठक

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल से दिल्ली में एलायंस एयर के चेयरमैन श्री अमित कुमार एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री राजर्षी सेन ने सौजन्य भेंट की। इस अवसर पर विंध्य क्षेत्र सहित मध्यप्रदेश में हवाई सेवाओं के विस्तार एवं संचालन को लेकर विस्तृत चर्चा की गई।। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने रीवा, सतना और विंध्य क्षेत्र के महत्वपूर्ण नगरों में एयर कनेक्टिविटी को सुदृढ़ करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देशभर में हवाई सेवाएं आमजन के लिए सुलभ और सस्ती बनाई जा रही हैं, और मध्यप्रदेश सरकार इस दिशा में हरसंभव सहयोग के लिए प्रतिबद्ध है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने एलायंस एयर को रीवा एवं विंध्य क्षेत्र की आर्थिक, औद्योगिक और सांस्कृतिक विशेषताओं की जानकारी दी और कहा कि यहां एयर कनेक्टिविटी बढ़ने से पर्यटन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं निवेश के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय प्रगति होगी। बैठक में रीवा से महानगरों के लिए सीधी उड़ानों की संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया गया।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने किए बाबा विश्वनाथ के दर्शन प्रदेशवासियों की सुख समृद्धि की प्रार्थना की

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने वाराणसी प्रवास के दौरान बाबा विश्वनाथ के दर्शन और विधिवत पूजन किया। उन्होंने बाबा से प्रदेशवासियों के कल्याण, समृद्धि तथा लोकमंगल की प्रार्थना की।उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि काशी विश्वनाथ महादेव केवल एक तीर्थ नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक चेतना का केंद्र हैं। काशी में आकर दिव्यता, भव्यता और अलौकिक अनुभूति होती है।

शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय रायसेन में संविधान हत्या दिवस कार्यक्रम सम्पन्न

रायसेन (निप्र)। शासन के निर्देशानुसार संविधान हत्या दिवस 25 जून को रायसेन स्थित शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय रायसेन में कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें छात्र-छात्राओं को संविधान के महत्व और अधिकारों के बारे में बताया गया। साथ ही छात्र-छात्राओं से संविधान से जुड़े प्रश्न भी पूछे गए। कार्यक्रम में एसडीएम श्री मुकेश सिंह, विद्यालय के प्राचार्य, शिक्षक सहित अन्य अधिकारी भी सम्मिलित हुए। उल्लेखनीय है कि शासन के निर्देशानुसार आपातकाल की 50वीं वर्षगांठ पर ष्संविधान हत्या दिवसष् का आयोजन किया गया। इस संबंध में 25 जून से एक वर्ष तक विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। यह एक वर्षीय अभियान संविधान एवं लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा हेतु जनजागरण के प्रति समर्पित रहेगा। भारत में 25 जून 1975 को लागू आपातकाल लोकतंत्र के इतिहास का सबसे काला अध्याय माना जाता है। इस दौरान केन्द्रीय सत्ता द्वारा नागरिक स्वतंत्रता का निलंबन, मौलिक अधिकारों का हनन, संवैधानिक प्रावधानों की उपेक्षा और दमनकारी कार्यवाहियाँ चरम पर थीं। गृह मंत्रालय द्वारा आपातकाल लागू होने की तिथि को ष्संविधान हत्या दिवसष् के रूप में 11 जुलाई 2024 को अधिसूचित किया गया है।

नगर आठनेर में जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत 300 मीटर नदी का गहरीकरण

नदी के जल संचय की स्थिति में हुई अभूतपूर्व वृद्धि

बैतूल (निप्र)। मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद द्वारा जिले के आठनेर विकासखंड में जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत नगर में बड़ी नदी के गहरीकरण का कार्य जनसहयोग से सफलतापूर्वक संपन्न हुआ है। नगर की प्रस्फुटन समिति और नवांकुर संस्थाओं के सहयोग से नगर के तपझिरा कुंड से मुक्तिधाम स्टॉप डेम तक लगभग 300 मीटर लंबाई में नदी का गहरीकरण कार्य संपन्न किया गया।

यह अभियान 30 मार्च को शुभारंभ अवसर पर प्रारंभ हुआ, जब नगर विकास प्रस्फुटन समिति अध्यक्ष द्वारा नगर परिषद आठनेर से नदी गहरीकरण के लिए सहयोग का प्रस्ताव रखा गया। प्रस्ताव पर सहमति मिलने के बाद नगर परिषद द्वारा क्षेत्र का निरीक्षण कर आवश्यक प्रक्रिया प्रारंभ की गई। यह नदी वर्षों से गाद से भरी हुई थी, जिससे जलप्रवाह बाधित हो रहा था। पूर्व वर्षों में समिति द्वारा श्रमदान के माध्यम से सफाई की जाती रही थी, लेकिन इस वर्ष बड़े स्तर पर गहरीकरण की आवश्यकता महसूस की गई।जन अभियान परिषद की पहल पर, नगर परिषद आठनेर के सक्रिय सहयोग और नगर के नागरिकों, सामाजिक संस्थाओं, युवाओं की भागीदारी से यह कार्य एक जनांदोलन का रूप ले सका।

श्रमदान के माध्यम से समाज और शासन की सहभागिता से यह महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण किया गया। इस अभियान की सफलता में जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष श्री मोहन नागर, कलेक्टर श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के मार्गदर्शन और जिला समन्वयक श्रीमती प्रिया चौधरी एवं ब्लॉक समन्वयक श्रीमती मधु चौहान के नेतृत्व अत्यंत सराहनीय रहा।

जल संचय में अभूतपूर्व वृद्धि : नदी के गहरीकरण के बाद जल संचय की स्थिति में अभूतपूर्व वृद्धि दर्ज की गई है। अब नदी में जल का स्थायी प्रवाह बना रहने लगा है, जिससे आसपास के क्षेत्रों में जल संकट की समस्या में भी राहत मिली है। न केवल पर्यावरणीय दृष्टि से बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी यह कार्य एक मिसाल बन चुका है।

पॉलीटेक्निक कॉलेज में हुआ प्रवेश मेले का आयोजन

नर्मदापुरम (निप्र)। आयुक्त तकनीकी शिक्षा एवं कलेक्टर नर्मदापुरम सोनिया मीना के निर्देशानुसार 24 जून को शासकीय पॉलीटेक्निक महाविद्यालय, नर्मदापुरम में तकनीकी शिक्षा के विभिन्न पाठ्यक्रमों में 10वीं एवं 12वीं कक्षा उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को प्रवेश जागरूकता के लिए प्रवेश मेले का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में संयुक्त कलेक्टर श्रीमती संपदा सराफ प्रवेश मेले में शामिल हुई जिसमें उन्होंने बच्चों को पॉलीटेक्निक महाविद्यालय में प्रवेश लेकर तकनीकी शिक्षा के माध्यम से रोजगार और स्वरोजगार प्राप्त करने एवं देश में तकनीकी विकास को बढ़ावा देने हेतु प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में जिला समन्वय अधिकारी श्री पी. के. पटवा द्वारा प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से पॉलीटेक्निक महाविद्यालय में प्रवेश हेतु प्रेरित किया। प्रवेश मेले में अधिक संख्या में विद्यार्थी शामिल हुए जिनमें 127 विद्यार्थियों ने प्रवेश हेतु रजिस्ट्रेशन कराया।

विद्यार्थियों का रुझान कम्प्यूटर साइंस एवं इलेक्ट्रिकल पाठ्यक्रमों में अधिक देखने को मिला। विद्यार्थियों ने बताया कि इस प्रकार के कार्यक्रम लगातार आयोजित होते रहना चाहिए जिससे विद्यार्थियों को भविष्य निर्माण के लिए उपयुक्त मार्गदर्शन मिल सकें। महाविद्यालय, के प्राचार्य, डॉ. पी.सी. नरवरे ने जानकारी देते हुए बताया कि डिप्लोमा इन इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम अंतर्गत शासकीय पॉलीटेक्निक महाविद्यालय, नर्मदापुरम में संचालित ब्रांच सिविल इंजी., मैकेनिकल इंजी., इलेक्ट्रीकल इंजी., कंप्यूटर साइंस एंड इंजी. एवं मॉडर्न आफिस मैनेजमेंट, में सत्र 2025-2026 में प्रवेश हेतु संस्था स्तर काउंसलिंग चरण में ऑनलाइन पंजीयन प्रारम्भ है। च्वाइस फिलिंग के बाद प्रवेश सूची जारी होगी और विद्यार्थी चयनित पॉलिटेक्निक में ब्रांच अनुसार प्रवेश ले सकते है। सभी संचालित ब्रांच में प्रवेश कक्षा-10वीं के आधार पर होगा। प्रवेश बढाने के लिए संस्था की टीम द्वारा नगर एवं आसपास के गांव में संपर्क कर विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को प्रवेश संबंधी जानकारी प्रदान की जा रही है। 10वीं उत्तीर्ण विद्यार्थियों का भविष्य तकनीकी शिक्षा में अधिक उज्जवल एवं रोजगार मुखी है। विद्यार्थियों के अंतिम वर्ष आते-आते शत-प्रतिशत प्लेसमेंट मिलने की संभावना होती है। उपरोक्त कार्यक्रम में मंचासीन तकनीकी शिक्षा पूर्व प्राचार्य श्री आर.एस. लौवंशी एवं इटारसी पॉलीटेक्निक प्राचार्य श्री आर.के. चोलकर भी तकनीकी शिक्षा के प्रचार-प्रसार में शामिल हुए।

ग्राम तिवरखेड़ के इंटीग्रेटेड हेल्थ केम्प में 54 हितग्राही हुए लाभान्वित

बैतूल (निप्र)। मध्यप्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण समिति भोपाल के दिशा निर्देशानुसार मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.मनोज कुमार हुरमाडे, जिला नोडल अधिकारी डॉ.आनंद मालवीय के मार्गदर्शन में प्रभात पट्टन विकासखंड के ग्राम तिवरखेड़ में इंटीग्रेटेड हेल्थ केम्प आयोजित किया गया। हेल्थ केम्प में ब्लड शुगर, बीपी, एचआईवी, सिफिलिस, टीबी एवं हेपेटाइटिस बी की स्क्रीनिंग एवं चिकित्सक द्वारा प्राथमिक उपचार किया गया। उपस्थित जन समुदाय को एचआईव्ही एवं एड्स, एसटीआई, हेपेटाइटिस एवं स्वास्थ्य संबंधी जानकारी प्रदान की गई। पोस्टर और लीफलेट के माध्यम से आमजन को जागरूक किया गया और आईईसी के माध्यम से स्वास्थ्य संबंधी जानकारी प्रदान की गई। उच्च जोखिम अवस्था वाले हितग्राहियों को जिला चिकित्सालय बैतूल रेफर किया गया, ताकि उन्हें आगे की जांच और उपचार के लिए आवश्यक सुविधाएं मिल सकें। हेल्थ केम्प में 54 हितग्राही लाभान्वित हुए। शिविर में मुख्य खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ जितेंद्र आत्रे, खंड विस्तार प्रशिक्षक श्री सुखनंदन बामने, काउंसलर सह डाटा मैनेजर श्री दिनेश भावरकर,आशा कार्यकर्ता एवं जनसमुदाय मौजूद रहा।

चरित्र शंका में पत्नी की तलवार से हत्या

छुपकर अंतिम संस्कार करने की कोशिश में पकड़ाया

इंदौर। ग्रामीण हातोद थाना क्षेत्र में एक दिल दहला देने वाली वारदात सामने आई। चरित्र की शंका के चलते एक युवक ने अपनी पत्नी की तलवार मारकर निर्मम हत्या कर दी।

हत्या के बाद आरोपी पति शव को चोरी-छुपे अंतिम संस्कार के लिए शमशान घाट ले गया, लेकिन रहवासियों को जब घटना की भनक लगी तो उन्होंने तुरंत पुलिस को सूचना दे दी।

पुलिस टीम मौके पर पहुंची और दाह संस्कार को रुकवाते हुए शव को जब्त कर पोस्टमार्ट्म के लिए अस्पताल भिजवाया। आरोपी पति को मौके से ही हिरासत में ले लिया गया है और पूछताछ जारी है। बताया जा रहा है कि पति को अपनी पत्नी के चरित्र पर शक था, जिसको लेकर दोनों के बीच आए दिन विवाद होता रहता था। घटना वाले दिन विवाद इतना बढ़ गया कि गुस्से में आकर पति ने घर में रखी तलवार से पत्नी पर हमला कर दिया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। हत्या के बाद वह शव को चुपचाप शमशान ले गया ताकि मामले को दबाया जा सके। लेकिन, स्थानीय लोगों की सतर्कता से मामला उजागर हो गया। पुलिस ने हत्या का प्रकरण दर्ज कर लिया है और आगे की जांच जारी है।

काम मांगने आई और महिलाओं ने चुरा लिए जेवरात और नकदी

हीरानगर पुलिस ने 24 घंटे में वारदात का खुलासा किया

इंदौर। काम मांगने आई दो महिलाओं ने घर की रेकी की और मौका मिलते ही जेवर और नकदी पर हाथ साफ कर दिया। घटना के 24 घंटे बाद ही हीरानगर पुलिस ने दोनों शातिर महिलाओं को गिरफ्तार कर लिया।

फरियादी ने बताया कि मैंने अलमारी में मंगलसूत्र, अंगूठी, चेन, कान के टॉप्स एवं नकदी रखे थे। 23 जून को सुबह 8 बजे बैंक चला गया था। शाम 6 बजे मेरी पत्नी ने कॉल कर बताया कि आपने जो रकम एवं नगदी अलमारी में रखे थे वह नहीं मिल रहे हैं। उसने कहा कि शाम को अनजान युवती अपने घर आई और कहा कि मैं झाड़ू-पोछा का काम करती हूं। इसी दौरान गलती से वह अपना सूटकेस घर छोड़कर चली गई। इसके कुछ देर बाद मैंने अलमारी खोली तो उसमें जेवर नहीं थे। मामले में पुलिस ने सीसीटीवी कैमरे के फुटेज खंगाले तो मुखबीर से सूचना मिली कि फुटेज में दिख रही महिलाएं संदिग्ध हालत में थाना क्षेत्र में खड़ी है।

जिला अस्पताल में नर्सिंग छात्रा को चाकू से गोदा

नरसिंहपुर (नप्र)। नरसिंहपुर जिला अस्पताल में एक युवक ने नर्सिंग छात्रा को चाकू से गोद दिया। वह ट्रेनिंग के लिए अस्पताल पहुंची थी। इमरजेंसी वार्ड के बाहर एक काली शर्ट पहने युवक ने पहले उसे पीटा। इसके बाद चाकू से कई वार किए।

घटना शुक्रवार दोपहर 3 बजे की है। छात्रा की पहचान सांकल रोड स्थित पटेल वार्ड गली में रहने वाले हीरालाल चौधरी की बेटी संध्या चौधरी(18) के रूप में हुई है। हमले के बाद आरोपी फरार हो गया। पुलिस उसकी तलाश में जुटी है। घटना की सूचना मिलते ही एसडीएम और कोतवाली थाना प्रभारी गौरव चाटे सहित अन्य पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे।

नर्सिंग ऑफिसर ने रोका तो उसे भी धमकाया- अस्पताल में नर्सिंग ऑफिसर नलिन भी उस वक्त वहीं मौजूद थे। नलिन ने बताया कि काले रंग की शर्ट पहने एक युवक आया था। आते ही वह कुर्सी पर बैठी लड़की के पीटने लगा। मैंने उसे रोकने की कोशिश की और मना किया, तो उसने मुझे भी धमकी दी। कहा कि बीच में मत बोलो नहीं तो तुम्हें भी मार दूंगा। मैं थोड़ा पलटा ही था कि काले रंग के चाकू से लड़की पर हमला कर दिया। इसके बाद वह भाग गया।

डीएसपी बोले- ट्रेनिंग कर रही थी छात्रा- डीएसपी मनोज गुप्ता ने बताया कि 18 वर्षीय छात्रा जिला अस्पताल में नर्सिंग की ट्रेनिंग कर रही थी। इसके पिता सब्जी बेचते हैं। इसकी भी पड़ताल जारी है।

सीएम के काफिले की गाड़ियों में पानी मिला डीजल निकला

सीएम कारकेट का ट्रायल के दौरान एक के बाद एक 19 कारें बंद हुई, इंदौर से दूसरी मंगवाईं, पेट्रोल पंप सील

भोपाल/रतलाम (नप्र)। रतलाम में शुक्रवार को रीजनल इंडस्ट्री, स्किल एंड एम्प्लॉयमेंट कॉन्क्लेव-एमपी राइज 2025 हुई। कॉन्क्लेव में सीएम डॉ. मोहन यादव भी शामिल हुए। सीएम के काफिले के लिए इंदौर से आई 19 इनोवा कार गुरुवार देर रात पेट्रोल पंप से डीजल भरवाने के बाद कुछ दूरी पर जाकर एक के बाद एक बंद हो गईं।

इससे हड़कंप मच गया। गाड़ियों के टैंक खोलकर देखे गए तो उनमें डीजल के साथ पानी निकला। रात में ही अफसर मौके पर पहुंचे। पेट्रोल पंप को सील कर दिया। फिर इंदौर से दूसरी गाड़ियों का अरेंजमेंट किया।

दरअसल, कॉन्क्लेव में सीएम के अलावा कई वीआईपी भी आए हुए हैं। जिला प्रशासन के अधिकारी गुरुवार दिनभर से इसके लिए तैयारियों में जुटे थे। इसी के मद्देनजर पुलिस ने सीएम कारकेट का ट्रायल भी किया। रात करीब 10 बजे सीएम कारकेट की 19 इनोवा कारें शहरी सीमा के डोसीगांव स्थित भारत पेट्रोलियम के शक्ति फ्यूल्स पेट्रोल पंप पर डीजल भरवाने पहुंचीं। डीजल भरवाने के बाद गाड़ियां आगे बढ़ीं तो कुछ दूर जाकर रुक गईं। धक्का लगाकर गाड़ियों को सड़क के किनारे खड़ा करना पड़ा।

अधिकारी पहुंचे, गाड़ियों के टैंक खुलवाए- 19 इनोवा कारों के साथ एक साथ बंद होने की सूचना

मिलते ही नायब तहसीलदार आशीष उपाध्याय, खाद्य एवं आपूर्ति अधिकारी आनंद गोरे और दूसरे अफसर मौके पर पहुंचे। गाड़ियों के डीजल टैंक खुलवाए। मालूम पड़ा कि गाड़ी में 20 लीटर डीजल डलवाया तो उसमें 10 लीटर पानी निकला। यह स्थिति सभी गाड़ियों में दिखीं।

इस दौरान एक ट्रक ने भी करीब 200 लीटर डीजल डलवाया था। वह भी थोड़ा चलने के बाद बंद हो गया। तब अधिकारियों ने भारत पेट्रोलियम के एरिया मैनेजर श्रीधर को बुलाया। उसने अधिकारियों के सामने डीजल टैंक में बारिश के कारण पानी रिसाव होने की आशंका जताई।

देर रात तक डटे रहे अधिकारी- रात करीब एक बजे तक प्रशासनिक अधिकारी पेट्रोल पंप पर मौजूद रहे। गाड़ियों के डीजल टैंक में पानी निकलने पर रात में ही खाद्य एवं आपूर्ति विभाग ने पेट्रोल पंप को सील कर दिया। इसके बाद इंदौर से दूसरी गाड़ियों का अरेंजमेंट कर रतलाम के लिए रवाना की गईं।

नायब तहसीलदार आशीष उपाध्याय ने बताया- बारिश के कारण पेट्रोल पंप टैंक में पानी रिसाव की आशंका है। खाद्य एवं आपूर्ति विभाग ने पेट्रोल पंप सील कर दिया है। रिपोर्ट सीनियर अफसर को सौंपी जाएगी।

मैनेजर ने कहा- बारिश के कारण पानी रिसाव

पेट्रोल पंप मैनेजर अमरजीत डाबर ने कहा- रात को तेज बारिश के कारण टैंक में पानी के रिसाव की समस्या आई है। पहले कभी ऐसा नहीं हुआ। रात में मैकेनिक को बुलाकर डीजल खाली करवा दिया गया है। दूसरे पंप से डिस्ट्रीब्यूशन करा रहे हैं।

बारिश से बने हालातों पर नजर रखें अफसर

सीएम बोले- त्योहारों में श्रद्धालुओं की सुविधा और कानून व्यवस्था में बरतें सख्ती

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में बारिश के कारण हो रहे जल भराव और बाढ़ आपदा की स्थिति को देखते हुए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सभी कलेक्टरों और पुलिस अधीक्षकों से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक की। बैठक के दौरान मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बारिश के कारण बनने वाले हालातों पर जिला और पुलिस प्रशासन हर पल नजर रखे और लोगों को खतरे की स्थिति बनने की सूचना पर तुरंत एक्शन ले।

उन्होंने आने वाले दो महीनों सावन और भादों के प्रमुख त्यौहारों के मद्देनजर धार्मिक स्थानों पर श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं रखने के लिए निर्देश दिए। सीएम ने कहा कि नागरिकों के हित में प्रशासनिक अधिकारी और कर्मचारी संवेदनशील और सजग होकर दायित्व पूरा करें।

समत्व भवन में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से हुई मीटिंग के दौरान मुख्यमंत्री यादव ने कहा कि इस माह अब तक 28 जिलों में सामान्य से अधिक वर्षा हुई है। प्रदेश में एक से 26 जून तक हुई वर्षा 37 प्रतिशत अधिक है। अलीराजपुर और नीमच जिलों में सर्वाधिक वर्षा हुई है। अधिक वर्षा के अनुमान को देखते हुए जिलों में रपटे और पुल आदि जहां पानी ऊपर से बह रहा है, वहां बेरीकेड्स लगाए जाएं।

नागरिकों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता रहे। बारिश में नाले और नालियां समस्या बन रहे हों तो तत्परतापूर्वक समाधान का कार्य किया जाए। बांध से पानी छोड़े जाने की स्थिति में मुनादी कराएं और वॉट्सऐप, दूरभाष आदि का उपयोग कर ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना पहुंचाई जाए।

संवेदनशील होकर समय पर सभी दायित्व अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा पूरे किए जाएं। अतिवृष्टि से नागरिकों के बचाव के लिए होमगार्ड और अन्य आपदा राहत दल सक्रिय रहें। जिलों में बोट्स की भी आवश्यक व्यवस्था रहे।

सर्पदंश से होने वाली मौतों को रोकें

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने निर्देश दिए कि वर्तमान में सर्पदंश से नागरिकों को बचाने की जो व्यवस्थाएं हैं, उनका विस्तार करते हुए पंचायतों और थानों के स्तर पर कार्रवाई की जाए। सर्पदंश से बचाव और उपचार का प्रशिक्षण देने की प्रदेश में शुरुआत हुई है, जो सराहनीय है। इस कार्य को लगातार किया जाए। संभव हो तो कालबेलिया समुदाय के युवाओं को भी इस कार्य में अधिक दक्ष बनाकर उनकी सेवाएं ली जाएं। इन प्रयासों से सर्पदंश की बढ़ती घटनाओं से नागरिकों को बेहतर तरीके से बचाया जा सकता है।

कानून व्यवस्था में किसी तरह की लापरवाही न हो

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हर जिले में कानून व्यवस्था की स्थिति मजबूत रहे। सामान्य घटनाओं पर भी अनावश्यक मुद्दा बनाने और जिन प्रकरणों में कार्रवाई हो गई है। उनको लेकर विवाद की स्थिति निर्मित करने वाले तत्वों से सख्ती से निपटा जाए। प्रदेश में नक्सल गतिविधियों पर नियंत्रण का कार्य अच्छा हुआ है, इसके लिए सुरक्षा बल और उनके जवान बधाई के पात्र हैं।

श्रावण मास में सवारियों और यात्राओं के लिए करें जरूरी व्यवस्थाएं

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में कलेक्टर्स को निर्देश दिए कि आगामी दो महीनों में विभिन्न त्यौहारों पर जरूरी व्यवस्थाएं करें। ओंकरेश्वर, उज्जैन और मंदसौर में श्रावण मास में सवारियों और कावड़ यात्रियों के आवागमन को देखते हुए जरूरी प्रबंध किए जाएं। जनजातीय कलाकारों और पुलिस बैंड के माध्यम से कार्यक्रमों को आकर्षक बनाया जाए।

किसानों को खाद बीज की कमी न हो

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश के सभी जिलों में किसानों के लिए खाद, उर्वरक और बीज की व्यवस्था और सप्लाई रखी जाए। इन वस्तुओं की किसी भी स्थिति में कालाबाजारी नहीं होना चाहिए। दोषी व्यक्तियों पर सख्त कार्रवाई की जाए।

विद्यार्थियों को मिले पाठ्यपुस्तकें

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने निर्देश दिए कि स्कूलों में पुस्तकों की सप्लाई समय पर की जाए। कलेक्टर यह देखें कि इस कार्य में लापरवाही न हो। किसी दुकान विशेष से महंगी दर पर कॉपी-किताब खरीदने को विवश न किया जाए। शीघ्र ही सांदीपनि विद्यालयों सहित अन्य विद्यालयों के लिए निर्मित नए कक्षों और सुविधाओं को लोकार्पित कर विद्यार्थियों को लाभान्वित किया जाए। यह कार्य मिशन मोड पर किया जाए। बैठक में मुख्य सचिव ने जानकारी दी कि विद्यालयों में विद्यार्थियों के लगभग 85 प्रतिशत एडमिशन हुए हैं।

सड़कों पर घूमने वाली गायों को गौ शालाओं में ले जाएं

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने निर्देश दिए कि राजमार्गों और शहरों में सड़कों पर घूमने वाली गायों को दुर्घटनाओं से बचाने के लिए गौशालाओं तक पहुंचाने का कार्य किया जाए। बड़ी गौशालाओं में व्यवस्था आसान है। अन्य गौशालाओं में भी अनुदान राशि बढ़ाई गई है। पशुपालक स्वयं भी गायों को सड़क पर न आने दें। सूखे स्थान की भी व्यवस्था की जाए जिससे गायें वहां बैठ सकें। प्रशासन द्वारा पशुपालकों को गौ-शालाओं की व्यवस्थाओं की जानकारी भी दी जाए।

नशे के लिए परिचित के घर से गहने चुराए

किचन की डिब्बे में चेन और हार रखे जो गायब हुए

इंदौर। डेढ़ माह पहले मुंहबोले भाई ने अपने दोस्त के साथ मिलकर लाखों के जेवर पर हाथ साफ कर दिया। नशे की लत पूरी करने उसने वारदात की। जब महिला ने जेवर का बॉक्स देखा तो उसे चोरी होने का पता चला। मामला हीरानगर थाना क्षेत्र का है।

फरियादी पार्वती (परिवर्तित नाम) ने 10 जून को शिकायत दर्ज कराई कि मैंने सोने की चेन और हार अपने किचन के डिब्बे में रखा था। उसके बाद जब मैंने डिब्बा खोला तो उसमें जेवर नहीं थे। दूसरे डिब्बों में भी नहीं मिले। पति से जेवरों के बारे में पूछा तो उन्होंने भी कोई जानकारी नहीं होना बताया। 8 मई को को मेरे ससुराल के पास रहने वाला मुंहबोला भाई सुमित नागर निवासी सिवनी मालवा (नर्मदापुरम) घर आया था। वह बिना बताए मेरे घर से चला गया था। उसके जाने से पहले मैं एवं मेरे पति एक कार्यक्रम में शामिल होने बाहर गए थे। उस दिन सुमित का दोस्त शुभम अहीर भी मेरे घर पर आया था। उनके अतिरिक्त मेरे घर कोई नहीं आया है। जेवर चोरी में सुमित नागर और शुभम अहीर पर संदेह है। उस दिन के बाद से सुमित मेरा फोन भी नहीं उठा रहा है। फरियादी की रिपोर्ट पर आरोपी के खिलाफ धारा 305 का प्रकरण पंजीबद्ध किया था।

फुटेज में जाते दिखाई दिया

घटना की गंभीरता को देखते हुए अलग-अलग टीमों का गठन कर सैकड़ों सीसीटीवी कैमरों के फुटेज किए। इसी कड़ी में 24 जून को फरियादी ने सूचना दी कि सुमित एवं शुभम, सत्यम विहार कालोनी की तरफ जा रहे हैं। इस पर तत्काल पुलिस टीम रवाना हुई और घेराबंदी कर सुमित नागर एवं शुभम दोनों निवासी नर्मदापुरम को पकड़ा। पूछताछ में उन्होंने बताया कि 3 जून को जेवर चुराए थे। आरोपियों से अन्य वारदातों को लेकर पूछताछ की जा रही है।

बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष का फैसला हफ्ते भर में

6 महीने से अटका था चुनाव, एक-दो जुलाई को भोपाल आ सकते हैं प्रभारी धर्मेंद्र प्रधान

भोपाल (नप्र)। बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष के चुनाव को लेकर पिछले छह महीने से बना असमंजस अब दूर होने जा रहा है। अगले महीने में एमपी बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष का चुनाव होगा। एक-दो जुलाई को मप्र बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष के चुनाव अधिकारी धर्मेंद्र प्रधान भोपाल आएंगे। प्रधान के भोपाल आने की तारीख अभी तय नहीं हैं।

केन्द्रीय नेतृत्व जारी करेगा चुनाव कार्यक्रम

बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष के चुनाव का कार्यक्रम आधिकारिक तौर पर बीजेपी के केन्द्रीय चुनाव अधिकारी की ओर से आज या कल जारी हो सकता है। चुनाव कार्यक्रम में उम्मीदवार के नामांकन दाखिल करने, स्क्रूटनी और नाम वापसी के साथ ही निर्वाचन की घोषणा का पूरा शेड्यूल घोषित होगा।

प्रदेश अध्यक्ष के लिए दावेदारों ने तेज की कोशिशें

सूत्र बताते हैं कि बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के नाम को लेकर सहमति नहीं बन पाने के कारण चुनाव टल रहा था। इस बीच पहलगाम आतंकी हमले के बाद बनी परिस्थितियों के कारण चुनाव प्रक्रिया अघोषित तौर पर आगे बढ़ गई। लेकिन अब हालात सामान्य होने के बाद संगठन चुनाव की प्रक्रिया आगे बढ़ रही है। ऐसे में मप्र के प्रदेश अध्यक्ष बनने की आस लगाए बैठे दावेदारों ने अपने प्रयास तेज कर दिए हैं।

मध्यप्रदेश में बारिश का स्ट्रॉन्ग सिस्टम एक्टिव

भोपाल में रोड पर गिरा पेड़, खरगोन में झरना फूटा, मऊगंज में तेज बारिश, 10 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में बारिश का स्ट्रॉन्ग सिस्टम एक्टिव है। उत्तर-पूर्वी हिस्से में एक साइक्लोनिक सर्कुलेशन (चक्रवात) है तो दक्षिणी हिस्से से ट्रफ भी गुजर रही है। इस वजह से शुक्रवार सुबह से भोपाल और मऊगंज में बारिश हुई। भोपाल में 1100 क्वार्टर मंदिर के पास एक पेड़ टूटकर रोड पर गिर गया। खरगोन में लगातार बारिश से कुंदा नदी पर सिरवेल का झरना बह निकला।

मौसम विभाग ने अगले कुछ घंटे के दौरान मुरैना, श्योपुर, शिवपुरी, हरदा, ग्वालियर, अशोकनगर, दतिया, सीहोर, रीवा, सिंगरौली, टीकमगढ़, निवाड़ी में बिजली के साथ मध्यम गरज के साथ बौछारें पड़ने की संभावना जताई है। साथ ही भिंड, गुना, राजगढ़, शाजापुर, भोपाल, विदिशा, रायसेन, देवास, इंदौर, बैतूल में भी बारिश का अलर्ट जारी किया है।

भोपाल स्टेशन पर पार्सल कार्यालय डूबा, 300 से अधिक पार्सल की लोडिंग-डिलीवरी अटकी- भोपाल रेलवे स्टेशन स्थित पार्सल कार्यालय में बीती रात से करीब ढाई फीट पानी भरा हुआ है, जिससे पार्सल बुकिंग और डिलीवरी की पूरी व्यवस्था चरमरा गई है। जानकारी के मुताबिक, तीन मुख्य बुकिंग काउंटर पूरी तरह बंद हैं। इसके चलते 400 से ज्यादा लोग अपनी पार्सल बुकिंग नहीं कर पाए हैं या उन्हें भारी परेशानी

का सामना करना पड़ रहा है। स्थिति इतनी गंभीर है कि स्टोर रूम, बुकिंग काउंटर और डिलीवरी शेड तीनों में पानी भर गया है। इस कारण न सिर्फ नई बुकिंग प्रभावित हुई है, बल्कि करीब 300 से अधिक पार्सल अब तक लोड नहीं किए जा सके हैं। रेलवे अधिकारियों के अनुसार, यह जलभराव कल रात से बना हुआ है और अब तक इसे निकाला नहीं जा सका है। वहीं मंडल के प्रवक्ता नवल अग्रवाल ने बताया कि संबंधित टीमें काम कर रहीं हैं जल्द यह व्यवस्था दुरुस्त हो जाएगी।

दोपहर में सागर, नर्मदापुरम, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, छतरपुर, पन्ना, सतना, मैहर, मऊगंज, सीधी, जबलपुर, सिवनी, मंडला, बालाघाट, खंडवा, आगर-मालवा, धार, अलीराजपुर, झाबुआ, बड़वानी, रतलाम, खरगोन और नीमच में भी बारिश होने की संभावना है।

छतरपुर में बिजली गिरने से एक की मौत, तीन घायल

छतरपुर के शिवराजपुरा गांव में बारिश से बचने के लिए खेत की टपरिया में बैठे चार किसान आकाशीय बिजली की चपेट में आ गए। एक की मौत हो गई और तीन घायल हो गए, जिन्हें अस्पताल पहुंचाया गया।

सबसे ज्यादा नर्मदापुरम में हुई बारिश

पिछले 24 घंटे में नर्मदापुरम जिले में सबसे ज्यादा औसत 2.7 इंच पानी गिर गया। खंडवा में 2 इंच, उज्जैन में 1.9 इंच, रतलाम में 1.8 इंच, जबलपुर में 1.7 इंच, टीकमगढ़ में 1.3 इंच, सागर में 1.2 इंच, छतरपुर के खजुराहो में 1.3 इंच, छिंदवाड़ा में 1.2 इंच, भोपाल-गुना में 1-1 इंच बारिश हुई। स्टेशन या कस्बे के हिसाब से बात करें तो हरदा के खिरकिया में सबसे ज्यादा 5.2 इंच पानी गिर गया।

देवास के उदयनगर, झाबुआ के मेघनगर, हरदा के टिरमनी में करीब 5 इंच बारिश हुई। राजगढ़ के नरसिंहगढ़, धार के बदनावर, मंदसौर शहर, देवास के हाट पिपलिया, सागर के राहतगढ़, जबलपुर के शाहपुरा में 4 इंच के करीब पानी बरसा।

इंदौर के 47 किमी/घंटा रही आंधी की रफ्तारबारिश के साथ तेज आंधी भी चली। इंदौर में सबसे ज्यादा 47 किमी प्रतिघंटा रफ्तार रही। ग्वालियर में 41 किमी, शिवपुरी में 35 किमी, हरदा-सिंगरौली में 31 किमी, आगर-मालवा, सीहोर, सागर और शहडोल में 30 किमी प्रतिघंटा दर्ज की गई।

भिंड को छोड़ पूरे एमपी में आंधी-बारिश

पिछले 24 घंटे के दौरान भिंड को छोड़ पूरे प्रदेश में आंधी-बारिश का दौर रहा। कुल 380 शहर या कस्बों में बारिश दर्ज की गई। मौसम विभाग के अनुसार, हरदा, देवास और झाबुआ में अति भारी बारिश दर्ज की गई। वहीं, राजगढ़, धार, मंदसौर, रतलाम, सीहोर, रायसेन, खरगोन, इंदौर, उज्जैन, गुना, सागर, जबलपुर, छिंदवाड़ा, उमरिया और सीधी जिलों में भारी बारिश हुई है।

किसान की हत्या करने वाले दो भाई गिरफ्तार

तीन एकड़ जमीन के विवाद में डंडे से पीट-पीटकर भाई को मौत के घाट उतारा था

भोपाल (नप्र)। भोपाल के गुनगा इलाके में स्थित काछी बरखेड़ा में जमीन विवाद में छोटे भाई की हत्या करने वाले दोनों भाई सहित एक भतीजे को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। शुक्रवार को आरोपियों को कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया गया है। गुनगा पुलिस के मुताबिक काछी बरखेड़ा निवासी 46 वर्षीय बनवारी सिंह ठाकुर खेती किसानी करता था। वह चार भाइयों में सबसे छोटा था। भाइयों की करीब 14 एकड़ संयुक्त खाते की जमीन थी। जिनका बंटवारा हो गया था। मां छोटे बेटे बनवारी के साथ रहती थी। इसलिए उन्होंने अपने हिस्से की तीन एकड़ जमीन बनवारी के नाम कर दी थी। मां के हिस्से की जमीन पर बनवारी के बड़े भाइयों बैशराम सिंह और भुजमल सिंह ने कब्जा कर रखा था।

इसी जमीन को लेकर उनके बीच अक्सर विवाद होता था। बुधवार रात भी भुजमल और बनवारी का विवाद हुआ। जिसमें भुजमल, बैशराम और भुजमल के बेटे मनीष ने बनवारी पर लाठी-डंडे और चाकू से हमला कर दिया था।